# प्रतिक्रमण

## उपयोगी संग्रह

संपादक

प.पू.आ. श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

# प्रतिक्रमण उपयोगी संग्रह

## (चैत्यवंदन, स्तवन, स्तुति व सज्झाय)


◆ संपादक ◆

जिनशासन के अजोड प्रभावक, महाराष्ट्र-देशोद्धारक
पू.आचार्यदेव श्रीमद् विजय रामचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.
के शिष्यरत्न अध्यात्मयोगी निःस्पृह शिरोमणि पूज्यपाद
पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य के
चरम शिष्यरत्न प्रभावक प्रवचनकार एवं हिन्दी साहित्यकार
प.पू.आ. श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

प्रकाशक

दिव्य सन्देश प्रकाशन

C/o. सुरेन्द्र जैन, 205, सोना चेंबर्स,
507-509, जे.अेस.अेस. रोड, चीरा बाजार,
सोनापुर गली के सामने, मरीन लाईंस (E), मुंबई-400 002.
**Mobile : 9892069330**

आवृत्तिः तृतीय • मूल्यः 80/- • प्रतियां-1000 • विमोचन दि. 15-3-2020
विमोचन स्थल : चैन्नाई, (तामिलनाडु)

## आजीवन सदस्य योजना

आजीवन सदस्यता शुल्क 3000/- रु. • आप जैन धर्म के रहस्य-जैन इतिहास-जैन तत्त्वज्ञान-जैन आचार मार्ग, प्रेरणादायी कथाएँ आदि का अध्ययन करना चाहते हों तो आज ही आप दिव्य संदेश प्रकाशन मुम्बई की आजीवन सदस्यता प्राप्त कर लें। सदस्य बनते ही अध्यात्मयोगी निःस्पृह शिरोमणि स्व. पूज्यपाद पंन्यासप्रवर श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्यश्री एवं उन्हीं के चरम शिष्यरत्न प्रवचन प्रभावक *परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म. सा.* द्वारा लिखित उपलब्ध 10 पुस्तकें दी जाएगी और अर्हद् दिव्य संदेश मासिक तथा भविष्य में हिन्दी भाषा में प्रकाशित पुस्तकें घर बैठे प्राप्त होगी। आप आजीवन सदस्यता शुल्क मुंबई या बैंगलोर के पते पर दिव्य संदेश प्रकाशन-मुंबई के नाम से चैक व ड्राफ्ट से भेजें।

## प्राप्ति स्थान

**1. चेतन हसमुखलालजी मेहता**
भायंदर (M.S.)
M. 9867058940

**2. प्रवीण गुरुजी,**
C/o. श्री आत्म कमल लब्धिसूरि जैन पुस्तकालय
श्री आदिनाथ जैन टेंपल,
चिकपेठ, बेंगलोर-560 053.
M. 9036810930

**3. राहुल वैद,**
**C/o. अरिहंत मेटल कं.,**
4403, लोटन जाट गली,
पहाड़ी धीरज, सदर बाजार,
दिल्ली-110 006. M. 9810353108

**4. चंदन एजेन्सीज्,**
527, चिरा बाजार,
मुंबई. M. 9820303451

*आजीवन सदस्यता शुल्क*

***Rs. 3000/- भिजवाने का पता एवं पुस्तक-प्राप्ति-स्थान :***

**(1) दिव्य संदेश प्रकाशन, C/o. सुरेन्द्र जैन,** 205, सोना चेंबर्स, 507-509, जे.अेस.अेस. रोड, चीरा बाजार, सोनापुर गली के सामने, मरीन लाईंस (E), मुंबई-400 002. M. 98920 69330, 8484848451

**(2) दिव्य संदेश प्रचारक, प्रकाश बड़ोल्ला, 52, 3rd Cross, शंकरमाट रोड, शंकरपुरा, बैंगलोर-560 004.**
**Tel. (O.) 4124 7478 M. 8971230600**

# प्रकाशक की कलम से

अध्यात्मयोगी, निःस्पृह शिरोमणि नमस्कार महामंत्र के अजोड साधक **स्व. पूज्यपाद पन्यासप्रवर श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य श्री** के चरम शिष्यरत्न प्रभावक प्रवचनकार एवं हिन्दी साहित्यकार **पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय श्री रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** द्वारा संपादित प्रस्तुत पुस्तक की तृतीय आवृत्ति प्रकाशन करते हुए हमें अत्यंत ही हर्ष हो रहा है ।

आपने लगभग 43 वर्ष पूर्व महा सुदी 13, वि.सं. 2033 के शुभ दिन पूज्य श्री ने भागवती-दीक्षा अंगीकार की थी । अपने संयम जीवन के प्रारंभिक वर्षो में गुजरात की पुण्यभूमि **'पाटण'** में दीक्षादाता **पू.पं. श्री हर्षविजयजी म.सा.** आदि पूज्य गुरुवर्यो की तारक निश्रा में निरंतर चार चातुर्मास कर संस्कृत, प्राकृत, न्याय, व्याकरण, काव्य, आगम, कर्मग्रंथ प्रकरण ग्रंथ आदि का सुंदर अभ्यास किया था ।

सम्यग्ज्ञान की उपासना के साथ साथ पूर्व जन्म के विशेष क्षयोपशम के फल स्वरुप छोटी उम्र से ही प्रवचन शक्ति विकसित हुई । वि.सं. 2038 से प्रतिवर्ष पूज्य गणिवर्यश्री के चातुर्मासिक प्रवचन चालू है । राजस्थान, गुजरात, सौराष्ट्र, बम्बई, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, कर्णाटक तथा तामिलनाडु आदि क्षेत्रों में चातुर्मास कर सुंदर आराधना-प्रभावना की है । रविवारीय जाहीर प्रवचन युवा व बाल संस्करण वाचना श्रेणी के माध्यम से अनेक नवयुवकों के जीवन को संस्कारित किया है । पूज्य आचार्यश्री द्वारा आलेखित हिन्दी भाषा में 210 पुस्तकें हिन्दी भाषी क्षेत्र में खूब उपकारक बनी है ।

प्रस्तुत पुस्तक में पूज्य आचार्यश्री ने देववंदन और प्रतिक्रमण में उपयोगी चैत्यवंदन, स्तवन, स्तुति और प्रेरणादायी सज्झायों का सुंदर संकलन किया है । पूज्य आचार्यश्री द्वारा आलेखित, पूर्व प्रकाशित विपूल हिन्दी साहित्य की भांति प्रस्तुत प्रकाशन भी आराधक आत्माओं की आराधना साधना में अति उपयोगी सिद्ध होगा ।

# अनुक्रमणिका


| क्र. | विषय | पृष्ठ नं. |
|---|---|---|
| | **चैत्यवंदन विभाग** | |
| 1. | श्री ऋषभदेव भगवान | 1 |
| 2. | श्री ऋषभदेव भगवान | 1 |
| 3. | श्री ऋषभदेव भगवान | 2 |
| 4. | अक्षय तृतीया पर्व | 2 |
| 5. | श्री अजितनाथ भगवान | 3 |
| 6. | श्री शांतिनाथ | 3 |
| 7. | श्री नेमिनाथ | 4 |
| 8. | श्री नेमिनाथ | 4 |
| 9. | श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ | 4 |
| 10. | श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ | 5 |
| 11. | श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ | 5 |
| 12. | श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ | 6 |
| 13. | श्री अंतरीक्ष पार्श्वनाथ | 7 |
| 14. | श्री महावीर स्वामी | 8 |
| 15. | श्री सामान्य जिन | 8 |
| 16. | श्री सामान्य जिन | 9 |
| 17. | श्री सामान्य जिन | 9 |
| 18. | श्री सामान्य जिन | 10 |
| 19. | चोबीस जिन | 10 |
| 20. | पंचतीर्थ | 10 |
| 21. | पंच परमेष्ठि | 11 |
| 22. | सीमंधर स्वामी | 11 |
| 23. | सीमंधर स्वामी | 11 |
| 24. | श्री सीमंधर स्वामी | 12 |
| 25. | श्री सिद्धाचलजी | 13 |
| 26. | श्री सिद्धाचलजी | 13 |
| 27. | श्री सिद्धाचलजी | 14 |
| 28. | श्री सिद्धाचल | 15 |
| 29. | श्री पुंडरीकस्वामी | 15 |
| 30. | दूज | 15 |
| 31. | पंचमी | 16 |
| 32. | अष्टमी | 17 |
| 33. | एकादशी | 17 |
| 34. | सिद्धचक्र | 18 |
| 35. | सिद्धचक्र | 18 |
| 36. | सिद्धचक्र | 19 |
| 37. | सिद्धचक्र | 20 |
| 38. | सिद्धचक्र | 20 |
| 39. | नवपद | 21 |
| 40. | श्री पर्युषणपर्व | 21 |
| 41. | श्री पर्युषणपर्व | 22 |
| 42. | श्री पर्युषणपर्व | 23 |
| 43. | पर्युषण पर्व | 23 |
| 44. | मंदिर जाने का फल | 23 |
| | **स्तुति विभाग** | |
| 1. | श्री ऋषभदेव | 25 |
| 2. | श्री ऋषभदेव | 25 |
| 3. | आदिजिनस्तुतिः | 26 |
| 4. | श्री शान्तिनाथ | 26 |

| क्र. | विषय | पृष्ठ नं. |
|---|---|---|
| 5. | श्री शांतिनाथ | 27 |
| 6. | श्री नेमनाथ | 28 |
| 7. | श्री नेमिजिन स्तुति | 28 |
| 8. | श्रीनेमिजिन स्तुतिः | 29 |
| 9. | श्री नेमनाथ | 30 |
| 10. | श्री नेमनाथ जिन स्तुति | 30 |
| 11. | श्री पार्श्वनाथ | 31 |
| 12. | श्री पार्श्वनाथ | 32 |
| 13. | श्री पार्श्वजिन स्तुति | 32 |
| 14. | श्री पार्श्वजिन स्तुति | 33 |
| 15. | श्री पार्श्वनाथ जिन स्तुति | 33 |
| 16. | श्री पार्श्वनाथ जिन स्तुति | 34 |
| 17. | श्री महावीर स्वामी | 34 |
| 18. | श्री महावीर स्वामी | 34 |
| 19. | श्री महावीर स्वामी | 35 |
| 20. | वर्धमान जिन | 36 |
| 21. | महावीर जिन स्तुति | 36 |
| 22. | महावीर स्वामी | 36 |
| 23. | महावीर स्वामी | 37 |
| 24. | महावीर स्वामी | 37 |
| 25. | श्री सीमंधर स्वामी | 38 |
| 26. | श्री सीमंधर स्वामी | 38 |
| 27. | सीमंधर जिन | 38 |
| 28. | श्री सीमंधर स्वामी | 39 |
| 29. | श्री शत्रुंजयतीर्थ | 40 |
| 30. | श्री शत्रुंजय | 40 |
| 31. | चार शाश्वता जिन | 41 |
| 32. | श्री सिद्धचक्रजी | 41 |
| 33. | श्री सिद्धचक्र | 42 |
| 34. | श्री सिद्धचक्र | 42 |
| 35. | श्री सिद्धचक्र की स्तुति | 43 |
| 36. | दूज | 44 |
| 37. | श्री ज्ञानपंचमी | 44 |
| 38. | मौन एकादशी | 45 |
| 39. | पर्युषण | 46 |
| 40. | श्री पर्युषण | 46 |
| 41. | पर्युषण | 47 |
| 42. | त्रीज | 48 |
| 43. | नवतत्त्व | 49 |
| 44. | अध्यात्म की स्तुति | 49 |


## स्तवन विभाग


| | | |
|---|---|---|
| 1. | श्री ऋषभदेव स्वामी | 51 |
| 2. | तारी मुरतिए | 51 |
| 3. | तुं प्रभु मारो | 52 |
| 4. | जरजीवन जगवातलहो | 52 |
| 5. | जग चिंतामणि | 53 |
| 6. | बाळपणे आपण | 53 |
| 7. | ऋषभ जिनराज | 54 |
| 8. | ऋषभ जिणंदा दयाल | 55 |
| 9. | पहेले भवे एक गामनो | 55 |
| 10. | आजनो चांदलियो | 55 |
| 11. | आँख मारी उघडे त्यां | 56 |
| 12. | बोल बोल आदेश्वर | 57 |
| 13. | दादा आदेश्वरजी | 58 |

| क्र. | विषय | पृष्ठ नं. |
|---|---|---|
| 14. | श्री आदीश्वर प्रभु का स्तवन | 58 |
| (2) | अजितनाथ | 59 |
| | 1. प्रीतलढी बंधाणी रे | 59 |
| | 2. आशावरी | 60 |
| | 3. परमातम पूरणकला | 60 |
| (3) | श्री संभवनाथ भगवान | 61 |
| (4) | अभिनंदन स्वामी | 61 |
| (5) | श्री सुमतिनाथ भगवान | 62 |
| (6) | पद्मप्रभ | 62 |
| | 2. श्री पद्मप्रभना नामने | 63 |
| (7) | सुपार्श्वनाथ | 63 |
| (8) | चंद्रप्रभ | 64 |
| (9) | सुविधिनाथ | 64 |
| (10) | शीतलनाथ | 65 |
| (11) | श्री श्रेयांसनाथ | 65 |
| (12) | वासुपूज्य स्वामी | 66 |
| (13) | विमलनाथ | 66 |
| | 2.सेवो भवियां | 67 |
| | 3. हो प्रभुजी ! | 68 |
| (14) | श्री अनंतनाथ भगवान | 68 |
| (15) | श्री धर्मनाथ भगवान | 69 |
| (16) | शांतिनाथ | 69 |
| | 1. सुण दयानिधि | 69 |
| | 2. हम मगन भये | 70 |
| | 3. सुणो शांतिजिणंद | 71 |
| | 4. शान्ति जिनेश्वर | 72 |

| क्र. | विषय | पृष्ठ नं. |
|---|---|---|
| (17) | वुंथुनाथ | 72 |
| (18) | श्री अरनाथ | 73 |
| (19) | श्री मल्लिनाथ | 73 |
| (20) | श्री मुनिसुव्रत स्वामी | 74 |
| (21) | श्री नमिनाथ भगवान | 75 |
| (22) | नेमिनाथ | 75 |
| | 1. रीझो रिझो श्रीवीर | 75 |
| | 2. ए मेरे वतन | 76 |
| | 3. परमातम पूरणकला | 77 |
| | 4. निरख्यो नेमिजिणंदने | 77 |
| 1. | श्री पार्श्वनाथ | 78 |
| 2. | शंखेश्वर पार्श्वनाथ | 79 |
| 3. | आवो आवो पासजी | 79 |
| 4. | आई बसो भघवान | 80 |
| 5. | श्री चिंतामणि पासजी | 80 |
| 6. | पार्श्व जिणंदा | 81 |
| 7. | महावीर प्रभु | 82 |
| 8. | पंचम सुरलोकना | 83 |
| 9. | ऋषभ जिनराज | 83 |
| 10. | याद आवे मोरी | 84 |
| 11. | देखी श्री पार्श्वतणी | 84 |
| 12. | मालकौस | 85 |
| 13. | कोण भरे | 85 |
| 14. | आणी मन शुद्ध | 86 |
| 15. | समय समय | 86 |
| 16. | अंखीया | 87 |
| 17. | तुं प्रभु महारो हुं | 87 |

| क्र. | विषय | पृष्ठ नं. |
|---|---|---|
| 18. | तारा नयनां रे | 88 |
| 19. | जय जय ! जय ! जय ! | 88 |
| 20. | कोयल टहुंकी रही | 89 |
| 21. | हे प्रभु पार्श्व | 89 |
| 22. | सुखदाइ रे | 89 |
| 23. | प्यारो प्यारो रे | 90 |
| 24. | अंतरजामी सुण | 90 |
| 1. | महावीर स्वामी | 91 |
| 2. | माता त्रिशलानंद | 91 |
| 3. | रूढी ने रढीयाळी | 92 |
| 4. | दीठो रे | 92 |
| 5. | वीर वहेला | 93 |
| 6. | दीन दुःखीयानो | 94 |
| 7. | वीर जिणंद | 95 |
| 8. | सिद्धारथना रे नंदन | 95 |
| 9. | माता त्रिशला | 96 |
| 10. | महावीर स्वामी के सत्ताइस स्तवन | 99 |
| 11. | महावीर स्वामी के पंचकल्याणक का स्तवन | 104 |
| 1. | सामान्यजिन स्तवन | 108 |
| 2. | अबेलढां शानां लीयां छे | 109 |
| 3. | सामान्य जिन | 110 |
| 4. | सामान्य जिन | 110 |
| 5. | श्री सामान्य जिन | 111 |
| 1. | सीमंधर स्वामी | 112 |

| क्र. | विषय | पृष्ठ नं. |
|---|---|---|
| 2. | विनंती माहरी रे | 112 |
| 3. | तारी मूरतिअे | 113 |
| 4. | तमे महाविदेहमां | 114 |
| 5. | प्रभाते ऊठी करूं | 114 |
| 6. | पुक्खलवई विजये | 115 |
| 7. | स्वामि सीमंधर | 115 |
| 1. | श्री सिद्धाचलजी स्तवन | 116 |
| 2. | यात्रा नवाणुं | 117 |
| 3. | चालो चालो | 117 |
| 4. | ऐसी दशा हो भगवान | 118 |
| 5. | सिद्धाचलगिरि भेटचा | 119 |
| 6. | नीलुढी | 119 |
| 7. | आज मारा नयणां | 120 |
| 8. | एक दिन पुंडरीक | 120 |
| 9. | सिद्धावतना वासी | 121 |
| 10. | सिद्धाचल शिखरे दीवो | 121 |
| 11. | आंखडीअे रे में आज | 122 |
| 12. | सिद्धाचल वंदोरे | 123 |
| 13. | ऊँचा ऊँचा शत्रुंजयना | 123 |
| 14. | मेरे तो जिन तेरो ही | 124 |
| 15. | वदनां वंदनां | 124 |
| 16. | मनना मनोरथ सवि | 125 |
| 1. | पर्युषण पर्व स्तवन | 125 |
| 2. | श्री पर्युषण पर्व | 126 |
| 3. | श्री पर्युषण स्तवन | 127 |
| 1. | दूज स्तवन | 128 |
| 2. | ज्ञान पंचमी स्तवन | 130 |

| क्र. | विषय | पृष्ठ नं. |
|---|---|---|
| 1. | श्री अष्टमी स्तवन | 135 |
| | मौन एकादशी स्तवन | 139 |
| 1. | सिद्धचक्र स्तवन | 142 |
| 2. | नवपद स्तवन | 143 |
| 3. | सिद्धचक्रने भजीये | 144 |
| 4. | सिद्धचक्रवर सेवा कीजे | 144 |
| 5. | भवि तुमे वंदो | 146 |
| 6. | अवसर पामीने रे | 146 |
| 7. | नवपद धरजो ध्यान | 147 |
| | नवपद और श्रीपाल | 148 |
| | **सज्झाय विभाग** | |
| 1. | आठ मद | 156 |
| 2. | स्वार्थी संसार | 157 |
| 3. | वैराग्य की सज्झाय | 157 |
| 4. | उपदेश की सज्झाय | 158 |
| 5. | जग सपनेकी माया | 159 |
| 6. | चंचल मन | 159 |
| 7. | वैराग्य | 160 |
| 8. | क्रोध | 160 |
| 9. | मान | 161 |
| 10. | आत्मा | 161 |
| 11. | आप स्वभाव | 162 |
| 12. | आठ कर्मो की सज्जाय | 163 |
| 13. | तप की सज्झाय | 163 |
| 14. | एकदशी की सज्झाय | 164 |
| 15. | मोह से तेरा कमाया | 165 |
| | गुरु भक्ति गीत-1 | 166 |
| | श्री प्रेमसूरि महाराजा | 166 |
| | गुरु भक्ति | 168 |
| | श्री रामचन्द्रसूरि महाराजा | 168 |
| | गुरु भक्ति गीत | 170 |
| | पं.श्री भद्रंकरविजयजी | 171 |
| | गुरु गुण | 172 |
| | गुरु भक्ति गीत | 174 |
| | गुरु भक्ति गीत | 174 |

# प्रभु समक्ष बोलने की स्तुतियाँ

पल-पल मेरे हर रोम में, हर श्वांस में प्रभु तुम रहो,
जीवन की अंतिम श्वास तक, मेरे हृदय में तुम रहो ।।
हे स्वामी ! परम कृपालु मेरी, एक है बस याचना ।
कर दो दया अब ना पडे, संसार में और नाचना ।।1।।

चाहुं नही वैभव प्रभुजी, ना ही झुठी नामना ।
जगबंधु अंतरयामी मेरी, एक है यही कामना ।।
भवो भव मिले शासन तेरा, प्रभु चरण सेवा पाऊ मैं ।
शीतल चरण की छांह में, वीतराग खुद बन जाऊ में ।।2।।

मेरे हृदय का हर अणु, उपकार का सुमिरन करे ।
मेरे हृदय की धड़कने, प्रभु नाम का ही रटन करे ।।
हे पास मेरे क्या प्रभु, जो आपको अर्पण करुँ ।।
ऐसे प्रभु भी पार्श्व जिन को, भाव से वंदन करुँ ।।3।।

ऐश्वर्य केवल लक्ष्मी का, ऐसा प्रभु था आपका ।
मिथ्यामति भी शरण लेते, त्याग कर संताप का ।।
जिस ऋद्धि के एक अंश को भी, तरसते है सुरतरु ।
ऐसे प्रभु श्री पार्श्व जिन को, भाव से वंदन करुँ ।।4।।

नयनों में शान्ति है असीम, मुद्रा भी शान्त प्रशान्त है,
संसार के संताप से प्रभु, दिल मेरे अशान्त है ।।
मैं परम शान्ति पाने को, प्रभु शान्ति के दर्शन करुँ,
ऐसे प्रभु श्री शान्ति जिन को, भाव से वन्दन करुँ ।।5।।

रूप तारुं एवुं अद्‌भुत, पलक विण जोया करुं,
नेत्र तारा निरखी निरखी, पाप मुज धोया करुं,
हृदयना शुभ भाव परखी, भावना भावित बनुं,
झंखना एवी मने के, हुं ज तुज रूपे बनुं ।।6।।

वैराग्य ना रंगो सजी, क्यारे प्रभु ! संयम ग्रहुं ?
सद्गुरु तणां शरणे रही, स्वाध्यायनुं गुंजन करुं ?
सवि जीवोने दऊं देशना, हुं धर्मनुं सिंचन करुं ?
कर्मो थकी निर्लेप थईने, क्यारे हुं मुक्ति वरुं ? ।।7।।

संसार घोर अपार छे, तेमां डूबेला भव्यने,
हे तारनारा नाथ शुं, भूली गया निज भक्तने,
मारे शरण छे आपनुं, नथी चाहतो हुं अन्यने,
तो पण प्रभु मने तारवामां, ढील करो शा कारणे ।।8।।

हैये वसेला नाथ ! तारी, अजब सुंदर मूरति,
जोया करुं अनिमेष नयने, तोय तृप्ति ना थती,
वसवा मले भवोभव मने, बस आपना चरणों महीं,
एथी वधु ओ नाथ ! हुं मागुं हवे कशूं ये महीं ।।9।।

क्यारे प्रभु ! षट्काय जीवना, वध थकी हुं विरमुं ?
क्यारे प्रभु ! रत्नत्रयी, आराधनवां उज्जवल बनुं ?
क्यारे प्रभु ! मद मान मूकी, समता रसमां लीन बनुं ?
क्यारे प्रभु ! तुज भक्ति पामी, मुक्तिगामी हुं बनुं ? ।।10।।

क्यारे प्रभु तुज स्मरणथी, आंखो थकी अश्रु सरे ?
क्यारे प्रभु तुज नाम वदतां, वाणी मुज गद्गद बने ?
क्यारे प्रभु तुज नाम सुणतां, देह रोमांचित बने ?
क्यारे प्रभु मुज श्वासे श्वासे, नाम ताहरुं सांभरे ? ।।11।।

क्यारे प्रभु निज द्वार उभा, आ बालने निहालशो ?
नित नित मांगे भीख गुणणणन, एक गुण क्यारे आपशो ?
श्रद्धा दीपकनी ज्योत झांखी, क्यारे ज्वलंत बनावशो ?
सूना-सूना मुज जीवन गृहमां, क्यारे आप पधारशो ? ।।12।।

भवोभव तमारा चरण पामी, शरणमां बेसी रहुं,
भवोभव तमारी आण पामी, कर्मनो कांटो दहुं,
भवोभव तमारो साथ मलजो, एक छे मुज प्रार्थना,
भवोभव तमारुं पामुं शासन एक ए छे अभ्यर्थना ।।13।।

हे नाथ !! नजरे में निहाल्या नेह धरीने आपने,
माँ बाप मान्या में तने मुज टाल भवना तापने,
मुज जिंदगी प्रजली रही छे वासनानी आगमां,
आपो प्रभु ! बल एटलुं रमतो रहुं वैराग्यमां ।।14।।

रोगो भले मुज जाय ना, मुज रागने प्रभु ! टालजो
दुःखो भले मुज जाय ना, मुज दोषने प्रभु ! टालजो,
कर्मो भले मुज जाय ना, अंतर कषायने टालजो,
भले दुर्गति मुज ना टले पण दुर्मति प्रभु ! टालजो... ।।15।।

आनंद उदधि उछलतो, अवलोकतां अरिहंतने,
अनिमेष नयने निरखतो, ए निर्विकारी नेत्रने,
जोवा तलसतो सूर्यसम, तेजस्वी ए मुखकमलने,
वली लली लली वंदन करुं, तुज देहनी ए कांति ने... ।।16।।

दर्शन तमारुं आपनुं दर्शन खरेखर सत्यनुं,
वंदन तमारुं कापतुं वेगे पडल मिथ्तात्वनुं,
पूजन तमारुं परमपद लक्ष्यांक जोडी आपतुं,
तुज भक्तिथी शिवपुर तणुं सुख सहु प्रदेशे व्यापतुं ।।17।।

जे प्रभुना अवतारथी अवनिमां शांति बधे व्यापती,
जे प्रभुनी सुप्रसन्न ने अमीभरी द्रष्टि दुःखो कापती,
जे प्रभुए भर यौवन व्रत ग्रही त्यागी बधी अंगना
ते तारक जिन देवना चरणमां होजो सदा वंदना... ।।18।।

छे प्रतिमा मनोहारिणी दु:खहरी, श्री शांति जिणंदनी,
भक्तोने छे सर्वदा सुखकरी, जाणे खीली चांदनी,
आ प्रतिमाना गुण भाव धरीने, जे माणसो गाय छे,
पामी सघळां सुख ते जगतना, मुक्ति भणी जाय छे... ।।19।।

जेनी आंखो, प्रशम झरती, सौम्य आनंद आपे,
जेनी वाणी, अमृत झरती, दर्द संताप कापे,
जेनी काया, प्रशम झरती, शांतिनो बोध आपे,
एवुं मीठुं, स्मरण प्रभुनुं, पंथनो थाक कापे... ।।20।।

देखी मूर्ति, श्री पार्श्व जिननी, नेत्र मारा ठरे छे,
ने हैयुं मारुं, फरी फरी प्रभु ! ध्यान तारुं धरे छे,
आत्मा मारो, प्रभु ! तुम कने, आववा उल्लसे छे,
आपो एवुं, बल हृदयमां, माहरी आश ए छे ।।21।।

प्रभुजी ! में तुज पालव पकड्यो, हवे कदी ना छोडुं रे,
तारा दर्शन करवा काजे, नित्य सवारे दोडुं रे,
दर्शन-दर्शन करतो प्रभुजी ! आव्यो तारे द्वारे रे,
वासुपूज्यनुं मुखडुं जोतां, हर्ष अति उभराय रे... ।।22।।

दादा तारी मुख मुद्राने, अमीय नजरे निहाली रह्यो,
तारा नयनोमांथी झरतुं, दिव्य तेज हुं झीली रह्यो,
क्षणभर आ संसारनी माया, तारी भक्तिमां भूली गयो,
तुज मूरतिमां मस्त बनीने, आत्मिक आनंद माणी रह्यो... ।।23।।

शक्ति मले तो मुजने मलजो, जिनशासन सेवा सारुं,
भक्ति मले तो मुजने मलजो, जिनशासन लागे प्यारुं,
मुक्ति मले तो मुजने मलजो, राग द्वेष अज्ञान थकी,
जिनशासन मुज मलो भवोभव एवी श्रद्धा थाय नकी ।।24।।

याचक थईने मांगु प्रभुजी, हे वीतरागी ! तारी कने,
महाविदेह क्षेत्रमां जाउं मारे, श्री सीमंधर स्वामी कने,

आठ वरसनी नानी वयमां ! चारित्र लई स्वामी कने,
घाति अघाति कर्म खपावी क्यारे पहोंचीश तारी कने ? ।।25।।
अंतरमां छे अेक झंखना तारा जेवा थावानी,
रागी मटीने तारा जेवा वीतरागी बनवानी,
पण रागादि विषय कषायना बंधनमां जकडायो,
करुणासागर ! करुणा आणी बंधनमुक्त बनावो... ।।26।।
रागद्वेष पर विजय वर्या छो अमने विजयजी करजो,
भवसागरने तरी गया छो अमने भवपार करजो,
केवलज्ञान लह्युं छे आपे अमने ज्ञानी करजो,
सर्व कर्मथी मुक्त थया छो अम बंधनने हरजो... ।।27।।
अनंतज्ञानी अंतर्यामी, जय हो त्रिभुवन स्वामी !
अनंत करुणाना हे सागर ! करुणानो हुं कामी,
अनंत शक्तिना हे मालिक ! भवनी भ्रमणा टालो,
मुज मनडामां प्रसन्नतानी प्रेमल ज्योत जगावो... ।।28।।
नेत्रानन्दकरी भवोदधितरी, श्रेयस्तरोर्मञ्जरी,
श्रीमद्धर्ममहानरेन्द्रनगरी, व्यापल्लताधुमरी,
हर्षोत्कर्षशुभप्रभावलहरी, रागद्विषां जित्वरी,
मूर्तिः श्रीजिनपुङ्गवस्य भवतु, श्रेयस्करी देहिनाम् ।।29।।
प्रशमरसनिमग्नं, दृष्टियुग्मं प्रसन्नं ।
वदनकमलमङ्क कामिनीसंगशून्यः ।।
करयुगमपि यत्ते शस्त्र संबन्ध वंध्यम् ।
तदसि जगति देवो, वीतरागस्त्वमेव ।।30।।
पूर्णानन्दमयं महोदयमयं, कैवल्य चिद्द्रुङ्मयं,
रुपातीतमयं स्वरुपरमणं, स्वाभाविकी श्रीमयम् ।
ज्ञानोद्योतमयं कृपारसमयं, स्याद्वाद विद्यालयं,
श्री सिद्धाचल तीर्थराजमनिशं, वन्देऽमादीश्वरम् ।।31।।

# चैत्यवंदन विभाग

## 1. श्री ऋषभदेव भगवान

आदि देव अलवेसरु, विनितानो राय,
नाभिराया कुल मंडणो, मरूदेवा माय ।।1।।
पांचसे धनुषनी देहडी, प्रभुजी परम दयाल,
चोराशी लाख पूर्वनुं, जस आयु विशाल ।।2।।
वृषभ लंछन जिन वृष धरू ए, उत्तम गुण मणि खाण,
तस पद *पद्म* सेवन थकी, लहिए अविचल ठाण ।।3।।

## 2.

अरिहंत नमो भगवंत नमो, परमेश्वर जिनराज नमो,
प्रथम जिनेश्वर प्रेमे पेखत, सिध्या सघळां काज नमो. ।।1।।
प्रभु पारंगत परम महोदय, अविनाशी अकलंक नमो,
अजर अमर अदभुत अतिशयनिधि, प्रवचन जलधिमयंक नमो. ।।2।।
तिहुयण भवियण जणमन वंछिय, पूरणदेव रसाल नमो,
लळी लळी पाय नमुं हुं भाले, कर जोडीने त्रिकाल नमो. ।।3।।
सिद्ध बुद्ध तुं जगजन सज्जन, नयनानंदन देव नमो,
सकल सुरासुर नरवर नायक, सारे अहनिश सेव नमो. ।।4।।
तुं तीर्थंकर सुखकर साहिब, तु निष्कारण बंधु नमो,
शरणागत भवि ने हित वत्सल, तुंहि कृपारस सिंधु नमो. ।।5।।
केवल ज्ञानादर्शे दर्शित, लोकालोक स्वभाव नमो,
नाशित सकल कलंक कलुषगण, दुरित उपद्रव भाव नमो. ।।6।।
जगचिंतामणि जगगुरू जगहित, कारक जगजन नाथ नमो,
घोर अपार भवोदधि तारण, तुं शिवपुरनो साथ नमो. ।।7।।

अशरण शरण निरागी निरंजन, निरूपाधिक जगदीश नमो,
बोधि दिओ अनुपम दानेश्वर, ज्ञानविमळ सूरीश नमो. ।।8।।

### 3.

कल्पवृक्षनी छायडी, नानडीयो रमतो,
सोवन हिंडोले हिंचतो, माताने मनगमतो ।।1।।
सो देवी बालक थया, ऋषभजी केडे,
व्हांला लागो छो प्रभु, हैडाशुं भीडे ।।2।।
जिनपति यौवन पामीआ, भावे शुं भगवान,
इन्द्रे घाल्यो मांडवो, विवाहनो सामान ।।3।।
चोरी बांधी चिहुं दिशि, सुर गोरी गावे,
सुनंदा समंगला, प्रभुजीने परणावे ।।4।।
सयल संघ छंडी करी, केवलं ज्ञान पावे,
अष्ट कर्म नो क्षय करी, पोहच्या शिवपूर धामे ।।5।।
भरते बिंब भरावीआ, थाप्या शत्रुंजय गिरिराय,
श्री विजयप्रभसूरी महिमा घणो, उदयरत्न गुणगाय ।।6।।

## 4. अक्षय तृतीया पर्व

धुर समरुं श्री आदिदेव, विमलाचल सोहीए,
सुरति मूर्ति अतिसफळ, भवियणनां मन मोहीए ।।1।।
सुंदर रुपे सोहामणो, जोतां तृप्ति न होय,
गुण अनंत जिनवर तणा, कही नव शके कोय ।।2।।
वीतराग दर्शन विना, भवसायरमां रुलीयो,
कुगुरु कुदेव भोळव्यो, गाढो जल भरीयो ।।3।।
पूरव पुण्य पसाउले, वीतराग में आज,
दर्शन दीठो ताहरो, तरण तारण जहाज. ।।4।।

सुरघटने सुरवेलडी, आंगणे मुज आई,
कल्पवृक्ष फळीयो वळी, नवनिधि में पाई. ।।5।।
तुज नामे संकट टले, नासे विषम विकार,
तुज नामे सुखसंपदा तुज नामे जयकार. ।।6।।
आज सफळ दिन माहरोए, सफळ थइ मुज जात्र,
प्रथम तीर्थंकर भेटीआ, निर्मल कीधां गात्र ।।7।।
सुर नर किन्नर किन्नरी, विद्याधरनी कोड,
मुक्ति पहोंच्या केवली, वंदु बे कर जोड. ।।8।।
शत्रुंजयगिरी मंडणोए, मरुदेवा मात मल्हार,
सिद्धिविजय सेवक कहे, तुम तरीया मुज तार. ।।9।।

## 5. श्री अजितनाथ भगवान

अजितनाथ प्रभु अवतर्यो, विनीतानो स्वामी,
जितशत्रु विजया तणो, नंदन शिवगामी... ।।1।।
बोहोंतेर लाख पूरव तणुं, पाल्युं जेणे आय,
गज लंछन लंछन नहि, प्रणमे सुर राय... ।।2।।
साडा चारशे धनुषनी ए, जिनवर उत्तम देह,
पाद 'पद्म' तस प्रणमीये, जिम लहीए शिवगेह... ।।3।।

## 6. श्री शांतिनाथ

शांति जिनेश्वर सोलमा, अचिरासुत वंदो,
विश्वसेन कुल नभोमणि, भविजन सुख कंदो ।।1।।
मृगलंछन जिन आउखुं, लाख वरस प्रमाण,
हत्थिणाउर नयरी धणी, प्रभुजी गुण मणिखाण ।।2।।
चालीश धनुषनी देहडी, समचउरस संठाण,
वदन पद्म ज्युं चंदलो, दीठे परम कल्याण ।।3।।

## 7. श्री नेमिनाथ

नेमिनाथ बावीशमां, शिवादेवी माय,
समुद्रविजय पृथ्वीपति, जे प्रभुना ताय ।।1।।
दश धनुष्यनी देहडी, आयु वरस हजार,
शंख लंछनधर स्वामीजी, तजी राजुल नार ।।2।।
शौरीपुरी नयरी भलीए, ब्रह्मचारी भगवान,
जिन उत्तम पद पद्मने, नमतां अविचल ठाण ।।3।।

## 8. श्री नेमिनाथ

बाल ब्रह्मचारी नेमिनाथ, समुद्रविजय विस्तार,
शिवादेवीनो लाडलो, राजुलवर भरतार. ।।1।।
तोरण आव्या नेमजी, पशुए मांड्यो पोकार,
मोटो कोलाहल थयो, नेमजी करे विचार. ।।2।।
जो परणुं राजुलने, जाय पशुनां प्राण,
जीवदया मनमां वसी, त्यांथी कीधुं प्रयाण. ।।3।।
तोरण थी रथ फेरव्यो, राजुल मूर्छित थाय,
आंखे आंसुडा वहे, लागे नेमजी ने पाय. ।।4।।
सोगन आपुं माहरा, वळो पाछा एकवार,
निर्दय थई शुं वालहा, कीधो माहरो परिहार. ।।5।।
झीणी झबके वीजळी, झरमर वरसे मेह,
राजुल चाल्या साथमां, वैराग्ये भींजाणी देह. ।।6।।
संयम लई केवल वर्याए, मुक्ति पुरीमां जाय,
नेम राजुलनी जोडने, ज्ञान नमे सुखदाय. ।।7।।

## 9. श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ

जय चिंतामणि पार्श्वनाथ, जय त्रिभुवन स्वामी,
अष्टकर्म रिपु जितीने, पंचमी गति पामी ।।1।।

प्रभु नामे आनंद कंद, सुख संपत्ति लहीए,
प्रभु नामे भवभय तणा, पातिक सवि दहीए ।।2।।
ॐ ह्रीँ वर्ण जोडी करी, जपीये पारस नाम,
विष अमृत थइ परिणमे, पामे अविचल ठाम ।।3।।

## 10. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ

ॐ नमः पार्श्वनाथाय, विश्व-चिंतामणीयते,
ह्रीँ धरणेन्द्र-वैरूट्या, पद्मादेवी-युतायते ।।1।।
शान्ति-तुष्टि-महा-पुष्टि-धृति-कीर्ति-विधायिने,
ॐ ह्रीँ द्विड्-व्याल-वैताल सर्वाधि-व्याधि नाशिने ।।2।।
जया ऽ जिता-ख्या विजयाख्या ऽ पराजितायान्वितः
दिशांपालै र्ग्रहैर्यक्षै - र्विद्यादेवीभिरन्वितः ।।3।।
ॐ असिआउसा नमस्तत्र त्रैलोक्यनाथताम्,
चतुः षष्टि-सुरेन्द्रास्ते भासन्ते छत्र चामरैः ।।4।।
श्री शंखेश्वर मंडन ! पार्श्वजिन प्रणत कल्पतरूकल्प !
चूरय दुष्ट व्रातं पूरय में वांछितं नाथ ! ।।5।।

## 11. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ

सकल भविजन चमत्कारी, भारी महिमा जेहनो,
निखिल आतम रमा राजीत, नाम जपीये तेहनो,
दुष्ट कर्माष्टक गंजरी जे, भविक जन मन सुखकरो,
नित्य जाप जपीये पाप खपीये, स्वामी नाम शंखेश्वरो. ।।1।।
बहु पुण्य राशि देश काशी, तत्थ नयरी वाणारसी,
अश्वसेन राजा राणी वामा, रूपे रति तनु सारिखी,
तस कूखे सुपन चौद सुचित, स्वर्गथी प्रभु अवतर्या. नित्य0।।2।।
पोष मासे कृष्ण पक्षे, दशमी दिन प्रभु जनमीयो,
सुरकुमरी सुरपति भक्ति भावे, मेरू श्रृंगे स्थापियो,
प्रभाते पृथ्वीपति प्रमोदे, जन्म महोत्सव अति कर्यो. नित्य0।।3।।

त्रण लोक तरूणी मनः प्रमोदी, तरुण वय जब आवीया,
तव मात ताते प्रसन्न चित्ते, भामिनी परणाविआ,
कमठ शठ कृत अग्नि कुंडे, नाग बळतो उद्धर्यो. नित्य0।।4।।
पोषवदी एकादशी दिने, प्रवज्या जिन आदरे,
सुर असुर राजा भक्ति साजा, सेवना झाझी करे,
काउस्सग्ग करतां देखी कमठे, कीधो परिसह आकरो. नित्य0।।5।।
तव ध्यान धारा रूढ जिनपति, मेघ धारे नवि चळ्यो,
चलित आसन धरण आयो, कमठ परिसह अटकळ्यो,
देवाधिदेवनी करे सेवना, कमठने काढी परो. नित्य0।।6।।
क्रमे पामी केवलज्ञान कमला, संघ चउविह स्थापीने,
प्रभु गया मोक्षे समेतशिखरे, मास अणसण पाळीने,
शिवरमणी रंगे रमे रसियो, भविक तस सेवा करो. नित्य0।।7।।
भूत प्रेत पिशाच व्यंतर, जलण जलोदर भय टले,
राज राणी रमा पामे, भक्ति भावे जो मळे,
कल्पतरूथी अधिकदाता, जगत त्राता जय करो. नित्य0।।8।।
जरा जर्जरी भूत यादव, सैन्य रोग निवारता,
वढीयार देशे नित्य बीराजे, भविक जीवने तारता,
ए प्रभु तणा पद पद्म सेवा, *रूप* कहे प्रभुता वरो. नित्य0।।9।।

## 12. शंखेश्वर पार्श्वनाथ

सेवो पार्श्व शंखेश्वरा मन शुद्धे, नमो नाथ निश्चे करी एक बुद्धे,
देवी देवला अन्य ने शुं नमो छो ? अहो भव्यलोको भूलां कां भमो छो ? ।।1।।
त्रिलोकना नाथ ने शुं तजो छो ? पड्या पासमां भूत ने कां भजो छो ?
सुरधेनु छंडी अजा शुं अजो छो ? महापंथ मूकी कुपंथे व्रजो छो ।।2।।
तजे कोण चिंतामणि काच माटे ? ग्रहे कोण रासभने हस्ति साटे ?
सुरद्रुम उखाडी कोण आंक वावे ? महामूढ ते आकुला अंत पावे ।।3।।

कीहां कांकरो ने कीहां मेरूशृंग ? कीहां केसरीने कीहां ते कुरंग ?
कींहा विश्वनाथं कीहां अन्य देवा ? करो एक चित्ते प्रभु पार्श्वसेवा ।।4।।
पूजो देवी प्रभावती प्राणनाथं, सहु जीवने जे करे छे सनाथं,
महातत्त्व जाणी सदा जेह ध्यावे, तेना दु:ख दारिद्र दूरे पलावे ।।5।।
पामी मनुष्य योनि वृथा कां गमो छो ? कुशीले करी देहने कां दमो छो ?
नहि मुक्तिवासं विना वीतरागं भजो भगवंतं तजो दृष्टिरागं ।।6।।
उदयरत्न भाखे सदा हेत आणि, दया भाव कीजे प्रभु दास जाणी,
आज माहरे मोतीडे मेह वुठ्या, प्रभु पार्श्व शंखेश्वरो आप तुठ्या ।।7।।

## 13. अंतरीक्ष पार्श्वनाथ

प्रभु पासजी ताहरूं नाम मीठुं, तिहुं लोकमां एटलु सार दीठुं,
सदा समरतां सेवतां पाप नीठुं, मन माहरे ताहरुं ध्यान बेठुं ।।1।।
मन तुम पास वसे रात दिवसे, मुख पंकज निरखवा हंसहीसे,
धन्य ते घडी जे घडी नयण दीसे, भली भक्ति भावे करी विनवीजे ।।2।।
अहो एह संसार छे दु:ख धोरी, इंद्र जालमां चित्त लाग्युं ठगोरी,
प्रभु मानीए विनती एक मोरी, मुज तार तुं तार बलिहारी तोरी ।।3।।
सही स्वप्न जंजाल में संग मोह्यो, घडियाळमां काल रमता न जोयो,
मुधा एम संसार मां जन्म खोयो, अहो घृत तणे कारणे जल वलोयो ।।4।।
ए तो भमरलो केसुआ भ्रांति धायो, जइ शुक तणी चंचू मांहे भरायो,
शुके जंबु जाणी गले दु:ख पायो, प्रभु लालचे जीवडो अेम वाह्यो ।।5।।
भम्यो भर्म भूल्यो रम्यो कर्म भारी, दया धर्म नी शर्म में न विचारी,
तोरी नम्र वाणी परम सुखकारी, तिहुं लोकना नाथ ! में नवि संभारी ।।6।।
विषय वेलडी शेलडी करीय जाणी, भजी मोह तृष्णा तजी तुज वाणी,
एहवो भलो भूंडो निज दास जाणी, प्रभु-राखीये बांह्यनी छांय प्राणी ।।7।।
मोरा विविध अपराधनी कोडी सहीअे, प्रभु शरणे आव्या तणी लाज वहीए,
वली घणी घणी विनति एम कहीये, मुज मानस सरे परम हंस रहीए ।।8।।

### कळश

अेम कृपा मूरति पार्श्वस्वामी, मुगतिगामी ध्याइए,
अति भक्ति भावे विपत्ति जावे, परम संपत्ति पाइए,
प्रभु महिमा सागर गुण वैरागर, पार्श्व अंतरिक्ष जे स्तवे,
तस सकल मंगल जयजयारव, 'आनंदवर्धन' विनवे ।।

## 14. श्री महावीर स्वामी

सिद्धारथ सुत वंदिये, त्रिशलानो जायो,
क्षत्रियकुंडमां अवतर्यो, सुर नरपति गायो ।।1।।
मृगपति लंछन पाउले, सात हाथनी काय,
बहोंतेर वर्षनुं आउखुं, वीर जिनेश्वर राय ।।2।।
क्षमाविजय जिनरायनो ए, उत्तम गुण अवदात,
सात बोलथी वर्णव्यो, *पद्म विजय* विख्यात ।।3।।

## 15. श्री सामान्य जिन

जगन्नाथने ते नमुं हाथ जोडी, करूं विनती भक्तिशुं मद मान मोडी,
कृपानाथ संसारकुं पार तारो, लह्यो पुण्यथी आज देदार तारो. ।।1।।
सोहिला मळे राज्य देवादिभोगो, परमदोहिलो एक तुज भक्ति जोगो,
घणा कालथी तुं लह्यो स्वामीमीठो, प्रभु पारगामी सहु दुःख नीठो. ।।2।।
चिदानंद रूपी परब्रह्म लीला, विलासी विभो त्यक्त कामाग्निकिला,
गुणाधार जोगीश नेता अमायी, जय त्वं विभो भूतले सुखदायी. ।।3।।
न दीठी जेणे ताहरी योग मुद्रा, पड्या रात दिवसे महा मोहनिद्रा,
किसी तास होसे गति ज्ञानसिंधो, भमन्ता भवे हे ! जगजीव बंधो. ।।4।।
सुधास्यंदीते दर्शनं नित्य देखे, गणुं तेहनो हे विभो जन्म लेखे,
त्वदाज्ञा विषे जे रह्या विश्वमांहे, करे कर्मनी हाण क्षण एकमांहे. ।।5।।

जिनेशाय नित्यं प्रभाते नमस्ते, भवि ध्यान होजो हृदये समस्ते,
स्तवी देवना देवने हर्ष पूरे, मुखांभोज भाली भजे हेज उरे. ।।6।।
कहे देशना स्वामी वैराग्य केरी, सुणे पर्षदा बार बेठी भलेरी,
सुधांभोध धारा समी ताप टाळे, बेहु बांधवा सांभळे एक ढाळे. ।।7।।
लहे मोक्ष ना सुख लीला अनंती, वरक्षायिक ज्ञान भावे लहंती,
चिदानंद चित्ते धरे ध्येय जाणी, कहे राम नित्ये जपो जिनवाणी. ।।8।।

## 16. श्री सामान्यजिन

जय जय श्री जिनराज आज, मळीयो मुज स्वामी,
अविनाशी अकलंक रूप, जग अंतरयामी. ।।1।।
रूपा रूपी धर्म देव, आतम आरामी,
चिदानंद चेतन अचिंत्य, शिव लीला पामी. ।।2।।
सिद्ध बुद्ध तुज वंदतां, सकल सिद्धि वर बुद्ध,
राम प्रभु ध्याने करी, प्रगटे आतम रिद्ध. ।।3।।
काल बहु स्थावर ग्रही, भमीयो भव मांही,
विकलेन्द्रि मांही वस्यो, स्थिरता नहि क्यांही. ।।4।।
तिर्यंच पंचेन्द्रिय मांहि देव, करी करमे हुं आव्यो,
करी कुकर्म नरके गयो, तुम दरिशन नहीं पायो. ।।5।।
एम अनंत काले करी ए, पाम्यो नर अवतार,
हवे जगतारक तुं मल्यो, भवजल पार उतार. ।।6।।

## 17. श्री सामान्य जिन

परमेश्वर परमातमा, पावन परमिठ्ठ,
जय जगगुरू देवाधिदेव, नयणे में दिठ्ठ. ।।1।।
अचल अकल अविकार सार, करूणा रस सिन्धु,
जगती जन आधार एक, निष्कारण बन्धु. ।।2।।

गुण अनंत प्रभु ताहरा ए, किमही कह्या न जाय,
राम प्रभु जिन ध्यानथी, चिदानंद सुख थाय. ।।3।।

## 18. सामान्य जिन

तुज मुरति ने निरखवा, मुज नयणां तरशे,
तुज गुण गणने बोलवा, रसना मुज हरशे ।।1।।
काया अति आनंद मुज, तुम युगपद फरसे,
तो सेवक तार्या विना, कहो किम हवे सरसे ।।2।।
एम जाणीने साहिबा ए, नेक नजर मोहे जोय,
*ज्ञान विमल* प्रभु सुनजरथी, ते शुं जे नवि होय ? ।।3।।

## 19. चोबीस जिन

पद्मप्रभ ने वासपूज्य, दोय राता कहीए,
चन्द्रप्रभ ने सुविधिनाथ, दो उज्ज्वल लहीए ।।1।।
मल्लिनाथ ने पार्श्वनाथ, दो नीला नीरख्या,
मुनिसुव्रत ने नेमनाथ, दो अंजन सरिखा ।।2।।
सोळे जिन कंचन समा, एवा जिन चौवीश,
धीर विमल पंडित तणो, *ज्ञान-विमल* कहे शिष्य ।।3।।

## 20. पंचतीर्थ

आज देव अरिहंत नमुं, समरूं ताहरूं नाम,
ज्यां ज्यां प्रतिमा जिन तणी, त्यां त्यां करूं प्रणाम. ।।1।।
शत्रुंजय श्री आदिदेव, नेम नमुं गिरनार,
तारंगे श्री अजितनाथ, आबु ऋषभ जुहार. ।।2।।
अष्टापद गिरि ऊपरे, जिन चोवीशे जोय,
मणिमय मुरती मानशुं, भरते भरावी सोय. ।।3।।

समेतशिखर तीरथ वडुं, ज्यां विशे जिन पाय,
वैभार गिरिवर उपरे, श्री वीर जिनेश्वर राय. ।।4।।

मांडवगढनो राजियो, नामे देव सुपास,
*ऋषभ* कहे जिन समरतां, पहोंचे मननी आश. ।।5।।

## 21. पंच परमेष्ठी

बार गुण अरिहंत देव, प्रणमीजे भावे,
सिद्ध आठ गुण समरता, दुःख दोहग जावे. ।।1।।

आचारज गुण छत्रीस, पंचवीस उवज्झाय,
सत्तावीश गुण साधुना, जपतां शिव सुख थाय. ।।2।।

अष्टोत्तर शत गुण मलीए, एम समरो नवकार,
धीर विमल पंडित तणो, *नय* प्रणमे नित्य सार. ।।3।।

## 22. सीमंधर स्वामी

श्री सीमंधर वीतराग, त्रिभुवन तुमे उपगारी,
श्री श्रेयांस पिता कुले, बहु शोभा तुमारी ।।1।।

धन्य धन्य माता सत्यकी, जेणे जायो जयकारी,
वृषभ लंछने बिराजमान, वंदे नरनारी ।।2।।

धनुष पांचसे देहडीए, सोहीए सोवनवान,
'कीर्तिविजय' उवज्झायनो, *विनय* धरे तुम ध्यान ।।3।।

## 23. सीमंधर स्वामी

श्री सीमंधर जगधणी, आ भरते आवो,
करुणावंत करुणा करी, अमने वंदावो ।।1।।

सकल भक्त तुमे धणी, जो होवे अम नाथ,
भवोभव हुं छु ताहरो, नहीं मेलुं हवे साथ ।।2।।

सकल संग छंडी करी, चारित्र लइशुं,
पाय तुमारा सेविने, शीवरमणी वरशुं ।।3।।

ए अलजो मुजने घणोए, पूरो सीमंधर देव,
इहा थकी हुं विनवुं, अवधारो मुज सेव ।।4।।
कर जोडी ने विनवुं, सामु रही ईशान,
भाव जिनेश्वर भाण ने देजो समकित दान ।।5।।

## 24. सीमंधरस्वामी

सीमंधर परमात्मा, शिवसुखना दाता ।
पुक्खलवई विजये जयो सर्व जीवना त्राता ।।1।।
पूर्व विदेह पुंडरिगिणी, नयरीए सोहे ।
श्री श्रेयांसराजा तिहां, भवियणना मन मोहे ।।2।।
चौद सुपन निर्मल लही, सत्यकी राणी मात ।
कुंथु अरजिन अंतरे, श्री सीमंधर जात ।।3।।
अनुक्रमे प्रभु जनमीया, भर यौवन पावे ।
मात पिता हरखे करी, रूक्ष्मणी परणावे ।।4।।
भोगवी सुख संसारना, संयम मन लावे ।
मुनिसुव्रत नमि अंतरे, दीक्षा प्रभु पावे ।।5।।
घाती कर्मनो क्षय करी, पाम्या केवलज्ञान ।
वृषभ लंछने शोभता, सर्व भावना जाण ।।6।।
चोराशी जस गणधरा, मुनिवर एक सो क्रोड ।
त्रण भुवनमां जोवतां, नही कोई एहनी जोड ।।7।।
दशलाख कह्या केवली, प्रभुजीनो परिवार ।
एक समय त्रण कालना, जाणे सर्व विचार ।।8।।
उदय पेढाल जिन अंतरेए, थाशे जिनवर सिद्ध ।
*'जश विजय'* गुरु प्रणमतां, शुभ वांछित फळ लिध ।।9।।

## 25. श्री सिद्धाचलजी

विमल-केवलज्ञान-कमला, कलित-त्रिभुवन-हितकरं ।
सुरराज-संस्तुत-चरणपंकज, नमो आदि जिनेश्वरं ।।1।।
विमलगिरिवर-शृंगमंडण, प्रवर गुणगण-भूधरं ।
सुर-असुर-किन्नर-कोडीसेवित, नमो *आदि0* ।।2।।
करती नाटक किन्नरी गण गाय जिनगुण मनहरं ।
निर्ज्जरावली नमे अहोनिश, नमो *आदि0* ।।3।।
पुंडरीक-गणपति सिद्धि साधी, कोडी पण मुनि मनहरं ।
श्री विमलगिरिवर शृंग सिद्धा, नमो *आदि0* ।।4।।
निज साध्य साधक सुर मुनिवर, कोडिनंत ए गिरिवरं ।
मुक्ति रमणी वर्या रंगे, नमो *आदि0* ।।5।।
पाताल नर सुर लोकमांही, विमलगिरिवरतो परं,
नहीं अधिक तीर्थ तीर्थपति कहे, नमो *आदि0* ।।6।।
इम विमलगिरिवर शिखर मंडण, दुःख विहंडण ध्याइए ।
निज शुद्ध सत्ता साधनार्थं, परम ज्योति निपाइये, ।।7।।
जित-मोह-कोह-विछोह-निद्रा, परमपद स्थित जयकरं ।
गिरिराज सेवा करणतत्पर, पद्मविजय सुहितकरं।8।।

## 26. श्री सिद्धाचलजी

श्री सिद्धाचल शिखरे चढी, ध्यानधरो जगदीश,
मनवचकाय एकाग्रशुं, नाम जपो एकवीस. ।।1।।
शत्रुंजय गिरि वंदिए, बाहुबली गुणधाम,
मरुदेवा ने पुंडरीकगिरि, रैवतगिरि विसराम. ।।2।।
विमलाचल सिद्धराजजी, नाम भगीरथ सार,
सिद्धक्षेत्र ने सहस्रकमल, मुक्तिनिलय जयकार. ।।3।।

विमलाचल शतकूटगिरि, ढंक ने कोडी निवास,
कदंबगिरि लोहित नमुं, तालध्वज पुण्यराश. ।।4।।
महाबल ने दृढशक्ति सही, ए एकवीशे नाम,
साते शुद्धि समाचारी, नित्य कीजे प्रणाम. ।।5।।
दग्ध शून्य ने अविधि दोष, अति प्रवृत्ति जेह,
चार दोष छंडी भजो, भक्ति भाव गुणगेह. ।।6।।
मानवभव पामी करीये, सद्गुरु तीरथ जोग,
श्री शुभवीरने शासने, शिवरमणी संयोग. ।।7।।

## 27. श्री सिद्धाचलजी

श्री सिद्धाचल तीर्थनायक विश्वतारक जाणीये,
अकलंक शक्ति अनंत सुरगिरि, विश्वानंद वखाणीये,
मेरु महीधर हस्ति गिरिवर, चर्चगिरधर चिह्नए,
श्वासमां सोवार वंदु, नमो गिरि गुणवंत ए० ।।1।।
हसितवदने हेमगिरिने, पूजीये पावन थइ,
पुंडरीक पर्वतराज शतकुट, नमत अंग आवे नही,
प्रतिमंडण कर्म छंडण, शाश्वतो सुरकंद ए...श्वासमां० ।।2।।
आनंद घर पुन्यकंद सुंदर, मुक्तिराजे मन ठस्यो,
विजय भद्र सुभद्र नामे, अचल देखत दिल वस्यो,
तालमूल ने ढंक पर्वत, पुष्पदंत जे हंतए...श्वासमां० ।।3।।
बाहुबल मरुदेवी भगीरथ, सिद्धक्षेत्र कंचनगिरि,
लोहिताक्ष कुलिनीवासमां जस, रईवताचल महागिरि,
शेत्रुंजामणि पुण्यराशि, कुंवरकेतु कहेत हे...श्वासमां० ।।4।।
गुणकंद कामुक द्रढशक्ति, सहजानंद सेवा करे,
जय जगत तारण ज्योतरुप, मालवंतने मनोहरे,
ईत्यादिक बहुकीर्ति माणेक, करत सुर सुख अनंत हे...श्वा० ।।5।।

## 28. श्री सिद्धाचल

श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र, दीठे दुर्गति वारे,
भाव धरीने जे चढे, तेने भवपार उतारे ।।1।।

अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीर्थनो राय,
पूर्व नवाणुं ऋषभदेव, ज्यां ठविया प्रभु पाय ।।2।।

सुरजकुंड सोहामणो, कवड जक्ष अभिराम,
नाभिराया कुल मंडणो, जिनवर करूं प्रणाम ।।3।।

## 29. श्री पुंडरीकस्वामी

आदीश्वर जिनरायनो, गणधर गुणवंत,
प्रगट नाम पुंडरीक जास, महिमाए महंत ।।1।।

पंच कोडी मुनिराज साथ, अणसण जीहां कीध,
शुक्ल ध्यान ध्यातां अमूल, केवल वर लीध ।।2।।

चैत्री पूनमने दिन ए, पाम्या पद महानंद,
ते दिन थी पुंडरीक गिरी, नाम दान सुखकंद ।।3।।

## 30. दूज

दुविध धर्म जेणे उपदिश्यो, चोथा अभिनन्दन,
बीजे जन्म्या जे प्रभु, भव दुःखनिकंदन ।।1।।

दुविध ध्यान तुमे परिहरो, आदरो दोय ध्यान,
एक प्रकाश्युं सुमतिजिने, ते चविआ बीज दिन ।।2।।

दोय बंधन राग द्वेष, तेहने भवि तजीए,
मुजपरे शीतलजिन कहे, बीज दिन शिव भजीए ।।3।।

जीवाजीव पदार्थनुं, करीए नाण सुजाण,
बीज दिने वासुपूज्य परे, लहो केवलनाण ।।4।।

निश्चयने व्यवहार दोय, एकांते न ग्रहीए,
अर जिन बीज दिने च्यवि, एम जन आगळ कहे ।।5।।
वर्तमान चोवीशीए, एम जिनना कल्याण,
बीज दिने केई पामीया, प्रभु नाण अने निर्वाण ।।6।।
एम अनंत चोवीशीए ए, हुआ बहु कल्याण,
जिन उत्तम पद *पद्मने* नमतां होय सुख खाण ।।7।।

## 31. पंचमी

त्रिगडे बेठा वीरजिन, भाखे भविजन आगे,
त्रिकरणशुं तिहुं लोक जण, निसुणो मन रागे ।।1।।
आराधो भली भांतसे, पांचम अजवाळी,
ज्ञान आराधन कारणे, एहिज तिथि निहाळी ।।2।।
ज्ञान विना पशु सारिखा, जाणो एणे संसार,
ज्ञान आराधनथी लहे, शिवपद सुख श्रीकार ।।3।।
ज्ञान रहित क्रिया कही, काश कुसुम उपमान,
लोकालोक प्रकाश कर, ज्ञान एक परधान ।।4।।
ज्ञानी श्वासोश्वासमां, करे कर्मनो छेह,
पूर्व कोडि वरसो लगे, अज्ञानी करे तेह ।।5।।
देश आराधक क्रिया कही, सर्व आराधक ज्ञान,
ज्ञान तणो महिमा घणो, अंग पांचमे भगवान ।।6।।
पंच मास लघु पंचमी, जावज्जीव उत्कृष्टि,
पंच वरस पंचमासनी, पंचमी धरो शुभ दृष्टि ।।7।।
एकावन ही पंचनो ए, काउसग्ग लोगस्स करो,
उजमणुं करो भावशुं, टाळो भव फेरो ।।8।।
एणीपरे पंचमी आराधीए, आणी भाव अपार,
वरदत्त गुणमंजरी परे, रंगविजय लहो सार ।।9।।

## 32. अष्टमी

महासुदि आठम दिने, विजया सुत जायो,
तेम फागण शुदी आठमे, संभव चवि आयो ।।1।।
चैतर वदनी आठमे, जनम्या ऋषभ जिणंद,
दीक्षा पण ए दिन लही, हुआ प्रथम मुनिचंद ।।2।।
माधव शुदि आठम दिने, आठ कर्म कर्या दूर,
अभिनंदन चोथा प्रभु, पाम्या सुख भरपूर ।।3।।
एहिज आठम उजळी, जनम्या सुमति जिणंद,
आठ जाति कलशे करी, न्हवरावे सुर इंद ।।4।।
जनम्या जेठ वदि आठमे, मुनिसुव्रत स्वामी,
नेम आषाढ शुदि आठमे, अष्टमी गति पामी ।।5।।
श्रावण वदनी आठमे, नमि जनम्या जग भाण,
तेम श्रावण शुदि आठमे, पासजीनुं निर्वाण ।।6।।
भादरवा वदि आठम दिने, चविया स्वामी सुपास,
जिन उत्तम पद *पद्मने*, सेव्याथी शिववास ।।7।।

## 33. एकादशी

शासन नायक वीरजी, प्रभु केवल पायो,
संघ चतुर्विध स्थापवा, महसेन वन आयो ।।1।।
माधव सित एकादशी, सोमिल द्विज यज्ञ,
इन्द्रभूति आदे मल्या, एकादश विज्ञ ।।2।।
एकादश से चउ गुणो, तेहनो परिवार,
वेद अर्थ अवळो करे, मन अभिमान अपार ।।3।।
जीवादिक संशय हरीए, एकादश गणधार,
वीरे थाप्या वंदीए, जिन शासन जयकार ।।4।।

मल्लि जन्म अर मल्लि पास, व्रत चरण विलासी,
ऋषभ अजित सुमति नमी, मल्लि घनघाती विनाशी ।।5।।
पद्मप्रभु शिववास पास, भवभवना तोडी,
एकादशी दिन आपणी, ऋद्धि सघली जोडी ।।6।।
दशक्षेत्रे तिहुंकालना, त्रणशे कल्याण,
वर्ष अग्यार एकादशी, आराधो वरनाण ।।7।।
अग्यार अंग लखावीए, एकादश पाठा,
पूंजणी ठवणी वींटणी, मसी कागल काठा ।।8।।
अग्यार अव्रत छांडवा रे, वहो पडिमा अगियार,
*खिमा* विजय जिनशासने, सफल करो अवतार ।।9।।

## 34. सिद्धचक्र

जो धुरि सिरि अरिहंत मूल, दृड्ढ पीठ पइट्ठिओ,
सिद्ध सूरि उवज्झाय साहू, चिहुं साह गरिट्ठिओ ।।1।।
दंसण नाण चरित्त तव ही, पडिसाहा सुंदरूं,
तत्तक्खर सरवग्ग लद्धि, गुरू पय दल दुंबरूं ।।2।।
दिसिपाल जक्ख जक्खिणि पमूह, सुरकुसुमेहिं अलंकिओ,
सो सिद्धचक्क गुरू कप्पतरू, अम्ह मनवंछिय फल दीओ ।।3।।

## 35. सिद्धचक्र

सकल मंगल परम कमला, केलि मंजुल मंदिरं,
भवकोटि संचित पाप नाशन, नमो नवपद जयकरं... ।।1।।
अरिहंत सिद्ध सूरीश वाचक, साधु दर्शन सुखकरं,
वर ज्ञान पद चारित्र तप ए, नमो नवपद जयकरं... ।।2।।
श्रीपालराजा शरीर साजा, सेवता नवपद वरं,
जगमांही गाजा कीर्तिभाजा, नमो नवपद जयकरं... ।।3।।

श्री सिद्धचक्र पचास संकट, आपदा नासे सवि,
वली विस्तरे सुख मनोवांछित, नमो नवपद जयकरं... ।।4।।
आंबिल नवदिन देववंदन, त्रण टंक निरंतरं,
बे वार पडिक्कमणा पडिलेहण, नमो नवपद जयकरं... ।।5।।
त्रिकाल भावे पूजीए, भवतारक तीर्थंकरं,
तिम गणणुं दोय हजार गणीए, नमो नवपद जयकरं... ।।6।।
विधि सहित मन वचन काया, वश करी आराधीए,
तप वर्षे साडा चार नवपद, शुद्ध साधन साधीए... ।।7।।
गद कष्ट चूरे शर्म पूरे, यक्ष विमलेश्वर वरं,
श्री सिद्धचक्र प्रताप जाणी, 'विजय' विलसे सुखभरं...।।8।।

## 36. सिद्धचक्र

सिद्धचक्र आराधतां, भवसागर तरीये,
भवअटवीथी उतरी, शिववधूने वरीए... ।।1।।
अरिहंत पद आराधतां, तीर्थंकर पद पावे,
जग उपकार कर घणो, शीघ्र शिवपुर जावे... ।।2।।
सिद्धपद ध्यातां थका, अक्षय अचल पद पावे,
कर्म कटक भेदी करी, अचल अरुपी थावे... ।।3।।
आचारज पद ध्यावतां, युगप्रधान पद पवे,
जिनशासन अजवालीने, शिवपुर नगर सोहावे... ।।4।।
पाठक पद ध्यावतां, वाचक पद पावे,
भणे भणावे भावशुं, सुरपुर शिवपुर जावे... ।।5।।
साधुपद आराधतां, साधुपद पावे,
तप-जप संयम आदरे, शिवसुंदरीने कामे... ।।6।।
दर्शन-नाण पद ध्यावतां, दर्शन नाण अजुवाले,
चारित्र-तप पद ध्यावतां, शिवमंदिरमां महाले... ।।7।।

केशर कस्तूरी केतकी, मचकुंद मालती माले,
सिद्धचक्र सेवुं त्रिकाल, जिम मयणा ने श्रीपाल...।।8।।
नव आंबिल नववार, शियल समकित शुं पालो,
श्रीरुपविजय कविरायनो, 'माणेक' कहे थई उजमालो... ।।9।।

## 37. सिद्धचक्र

उपन्न सन्नाण महो मयाणं, सप्पाडि-हेरासण संठियाणं,
सद्देसणा-णंदिय सज्ज णाणं, नमो नमो होउ सया जिणाणं... ।।1।।
सिद्धाण-माणंद-रमा-लयाणं, नमो नमोऽणंत चउक्कयाणं,
सूरीण दूरीकय कुग्गहाणं, नमो नमो सूर समप्पहाणं... ।।2।।
सुत्तत्थ वित्थारण तप्पराणं, नमो नमो वायग कुंजराणं,
साहूण संसाहिअ संजमाणं, नमो नमो शुद्ध दया दमाणं... ।।3।।
जिणुत्त-तत्ते रुइ लक्खणस्स, नमो नमो निम्मल दंसणस्स,
अन्नाण संमोह तमोहरस्स, नमो नमो नाण दिवायरस्स...।।4।।
आराहिय-खंडिय सक्किंयस्स, नमो नमो संजम वीरियस्स,
कम्म दुमोम्मुलण कुंजरस्स, नमो नमो तिव्व तवो भरस्स... ।।5।।
इय नवपय सिद्धं, लद्धि विज्जासमिद्धं, पयडीय सरवग्गं, ह्रीँ तिरेहा समग्गं ।
दिसिवइ सुरसारं, खोणी पीढावयारं, तिजय विजय चक्कं, सिद्धचक्कं नमामि।।

## 38. श्री सिद्धचक्र

श्री सिद्धचक्र आराधीए, आसो चैतर मास,
नवदिन नव आंबिल करी, कीजे ओळी खास. ।।1।।
केशर चंदन घसी घणा, कस्तूरी बरास,
जुगते जिनवर पूजीआ, मयणाने श्रीपाळ ।।2।।
पूजा अष्ट प्रकारनी, देववंदन त्रण काळ,
मंत्र जपो त्रण काळने, गणणुं दोय हजार. ।।3।।

कष्ट टळ्यु उंबरतणुं, जपतां नवपद ध्यान,
श्री श्रीपाळ नरिंद थया, वाध्यो बमणो वान. ।।4।।
सातसो महिपती सुख लह्याए, पाम्या निज आवास,
पुण्ये मुक्ति वधू वर्या, पाम्या लील विलास. ।।5।।

## 39. नवपद

बार गुण अरिहंतना तेम सिद्धना आठ,
छत्रीस गुण आचार्यना, ज्ञानतणा भंडार... ।।1।।
पचीस गुण उपाध्यायना, साधु सत्तावीश,
श्यामवर्ण तनु शोभता, जिनशासनना इश... ।।2।।
ज्ञान नमुं एकावने, दर्शनना सडसठ,
सित्तेर गुण चारित्रना, तपना बार ते जिट्ठ... ।।3।।
एम नवपद युक्ते करी, त्रण शत अष्ट (३०८) गुण थाय,
पूजे जे भवी भावशुं, तेहना पातक जाय... ।।4।।
पूज्यां मयणासुंदरी, तेम नरपति श्रीपाळ,
पुण्ये मुक्तिसुख लह्यां, वरत्या मंगळमाळ... ।।5।।

## 40. श्री पर्युषणपर्व

पर्व पर्युषण गुण नीलो, नव कल्पी विहार,
चार मासान्तर थीर रहे, एहीज अर्थ उदार. ।।1।।
आषाढ शुद चउदश थकी, संवत्सरी पचास,
मुनिवर दिन सित्तेरमें, पडिक्कमतां चौमास. ।।2।।
श्रावक पण समता धरी, करे गुरुना बहुमान,
कल्पसूत्र सुविहित मुखे, सांभळे थई एकतान ।।3।।
जिनवर चैत्य जुहारीये, गुरुभक्ति विशाल,
प्राये अष्ट भवांतरे, वरीये शिव वरमाल ।।4।।

दर्पणथी निज रुपनो, जुवे सुदृष्टि रुप,
दर्पण अनुभव अर्पणो, ज्ञान रमण मुनि भूप ।।5।।
आत्म स्वरुप विलोकतां ए, प्रगट्यो मित्र स्वभाव,
राय उदायी करे खामणां, पर्व पर्युषणा दाव. ।।6।।
नव वखाण पूजी सूणो, शुक्ल चतुर्थी सीमा,
पंचमी दिने वांचे सुणे, होय विराधक नियमा ।।7।।
ए नहीं पर्व पंचमी, सर्व समाणी चोथे,
भव भीरु मुनि मानशे, भाख्युं अरिहानाथे ।।8।।
श्रुतकेवली वयणा सुणीए, लही मानव अवतार,
श्री शुभवीरने शासने, पाम्या जय जयकार. ।।9।।

## 41. श्री पर्युषणपर्व

नव चोमासी तप कर्या, त्रण मासी दोय,
दोय दोय अढी मासी तेम, दोढ मासी होय. ।।1।।
बहोतेर पास खमण कर्यां, मासखमण कर्यां बार,
षड् द्विमासीतप आदर्या, बार अठ्ठम तप सार. ।।2।।
षड मासी एक तप कर्यो, पंच दिन उण षडमास,
बसे ओगणत्रीस छठ्ठ भला, दीक्षा दिन एक खास. ।।3।।
भद्र प्रतिमा दोय भली, महाभद्र दिन चार,
दश दिन सर्वतोभद्रना, लागट निरधार. ।।4।।
विण पाणी तप आदर्यो, पारणादिक जास,
द्रव्याहारे पारणा कर्या, त्रणसे ओगण पचास. ।।5।।
छद्मस्था एणीपरे रह्याए, सह्या परीषह घोर,
शुक्ल ध्यान अनले करी, बाळ्या कर्म कठोर. ।।6।।
शुक्ल ध्यान अंते रह्याए, पाम्या केवलज्ञान,
*पद्मविजय* कहे प्रणमतां, लहीए नित्य कल्याण. ।।7।।

## 42. श्री पर्युषणपर्व

वडा कल्प पूरव दिने, घरे कल्पने लावो,
रात्रि जागरण प्रमुख करी, शासन सोहावो. ।।1।।
हय गय रथ शणगारी कुमर, लावो गुरुपासे,
वडाकल्प दिन सांभळो, वीर चरित उल्लासे. ।।2।।
छठ द्वादश तप किजीए, धरीए शुभ परिणाम,
साधर्मि वत्सल प्रभावना, पूजा अभिराम. ।।3।।
जिन उत्तम गौतम प्रतेए, कहे जो एकवीश वार,
गुरु मुख पद्मे भावशुं, सुणतां पामे पार. ।।4।।

## 43. पर्युषण पर्व

वडाकल्प पूरव दिने, घरे कल्पने लावो,
रात्रि जागरण प्रमुख करी, शासन सोहावो ।।1।।
हय गय शणगारी कुमर, लावो गुरू पासे,
वडाकल्प दिन सांभळो, वीर चरित उल्लासे. ।।2।।
छट्ठ द्वादश तप किजीए, धरीए शुभ परिणाम,
स्वामि वत्सल प्रभावना, पूजा अभिराम. ।।3।।
जिन उत्तम गौतम प्रत्ये, कहे जो एकवीशवार,
गुरू मुख *पद्मे* भावशुं, सुणतां पामे पार. ।।4।।

## 44. मंदिर जाने का फल

प्रणमुं श्री जिनराज आज, जिन मंदिर केरो,
पुण्य भणी करशुं सफल, जिन वचन भलेरो. ।।1।।
देहरे जावा मन करे, चोथ तणुं फल पामे,
जिनवर जुहारवा उठतां, छठ पोते आवे. ।।2।।
जावा मांड्युं जेटले, अठ्ठमतणां फल जोय,
डगलुं भरता जिन भणी, दशम तणो फल होय. ।।3।।

जाइस्युं जिनवर भणी, मारग चालंता,
होवे द्वादश तणुं, पुण्य भक्ति मालंता. ।।4।।
अर्ध पंथ जिनवर भणी, पनरे उपवास,
दीठुं स्वामी तणुं भुवन, लहिए एक मास. ।।5।।
जिनवर पासे आवतां ए, छ मासि फल सिद्ध,
आव्या जिनघर बारणे, वरसी तप फल लीध. ।।6।।
सो वरस उपवास, पुण्य प्रदक्षिणा देता,
सहस वरस उपवास पुण्य, जिनवर नजरे जोता. ।।7।।
भावे जिनवर जुहारिए, फल होवे अनंत,
तेहथी लहीए सो गुणो, जो पूजो भगवंत. ।।8।।
फळ घणो फूलनी मालनो, प्रभु कंठे ठवंता,
पार न आवे गीत नाद, केरा फल थुणतां. ।।9।।
जिन पूजी पूजा करो ए, सुर धूप तणुं ध्यान,
अक्षत सार ते अक्षय सुख, दीपे तनु तत् रुप. ।।10।।
निर्मल तन मन करीए, सुणतां इंद्र जगीश,
नाटक भावना भावतां, पामे पदवी जगीश. ।।11।।
जिनवर भक्ती वलिए, पुन्ये प्रकाशी
सुणी श्री गुरु वयणसार, पुरव ऋषिअे भाखी. ।।12।।
टालवा आठ कर्मने, जिन मंदिर जास्युं,
भेटी चरण भगवंतना, हवे निर्मल थास्यु ।।13।।
कीर्तिविजय उवज्झायनो ए, *विनय* कहे कर जोड,
सफळ होजो मुज विनंती, प्रभु सेवाना कोड. ।।14।।

# स्तुति विभाग

## 1. श्री ऋषभदेव

आदि जिनवर राया, जास सोवन काया, मरूदेवी माया, धोरी लंछन पाया,
जगत स्थिति निपाया, शुद्ध चारित्र पाया, केवलसिरी राया, मोक्ष नगरे सिधाया...1

सवि जिन सुखकारी, मोह मिथ्या निवारी, दुर्गति दु:ख भारी, शोक संताप वारी,
श्रेणी क्षपक सुधारी, केवलानंत धारी, नमीए नर नारी, जेह विश्वोपकारी...2

समवसरण बेठा, लागे जे जिनजी मीठा, करे गणप पइठ्ठा, इन्द्रचंद्रादि दीठा,
द्वादशांगी वरिठ्ठा, गुथतां टाले रिठ्ठा, भविजन होय हिठ्ठा, देखी पुण्ये गरिठ्ठा..3

सुर समकित वंता, जेह ऋद्धे महंता, जेह सज्जन संता, टालीए मुज चिन्ता,
जिनवर सेवंता, विघ्न वारो दूरन्ता, जिन उत्तम थुणंता, पद्मने सुखदिन्ता...4

## 2. श्री ऋषभदेव

प्रह उठी वंदु, ऋषभदेव गुणवंत, प्रभु बैठा सोहे, समवसरण भगवंत ।
त्रण छत्र बिराजे, चामर ढाळे इन्द्र, जिननां गुण गावे, सुरनर नारीनां वृंद ।।1।।
बार पर्षदा बेसे, इन्द्र इन्द्राणी राय, नव कमळ रचे सुर, तिहां ठवतां प्रभु पाय ।
देव दुंदुभि वाजे, कुसुम वृष्टि बहु हुंत, एवा जिन चोवीस, पूजो एकण चित्त ।।2।।
जिन जोजन भूमि, वाणीनो विस्तार, प्रभु अर्थ प्रकाशे, रचना गणधर सार ।
सो आगम सुणतां, छेदी जे गति चार, जिन वचन वखाणी लीजे भवनो पार ।।3।।
जक्ष गोमुख गिरवो, जिननी भक्ति करेव, तिहां देवी चक्केसरी, विघन कोडी हरेव ।
श्री तपगच्छ नायक विजयसेनसूरि राय, तस केरो श्रावक, ऋषभदास गुण गाय ।।4।।

## 3. आदिजिनस्तुतिः

भव्याम्भोजविबोधनैकतरणे विस्तारिकर्मावली-
रम्भासामज ! नाभिनन्दन ! महानष्टापदाभासुरैः ।
भक्त्या वन्दितपादपद्म ! विदुषां, सम्पादय प्रोज्झिता-
रम्भासामज ! नाभिनन्दन ! महानष्टापदाभासुरैः ।।1।।

ते वः पान्तु जिनोत्तमाः क्षतरूजो, नाचिक्षिपुर्यन्मनो,
दाराविभ्रमरोचिताः सुमनसो, मन्दारवा राजिताः ।
यत्पादौ च सुरोज्झिताः सुरभयाञ्चक्रुः पतन्त्योऽम्बरा-
दाराविभ्रमरोचिताः सुमनसो, मन्दारवा राजिताः ।।2।।

शान्तिं वस्तनुतान्मिथोऽनुगमनाद् यन्नैगमाद्यैर्नयै,
रक्षोभं जन ! हेऽतुलां छितमदोदीर्णाङ्गजालं कृतम् ।
तत् पूज्यैर्जगतां जिनैः प्रवचनं दृष्यत्कुवाद्यावली-
रक्षोभं जन ! हेऽतुलां छितमदोदीर्णाङ्गजालं कृतम् ।।3।।

शीतांशुत्विषि यत्र नित्यमदधद् गन्धाढ्यधूलीकणा-
नाली केसरलालसा समुदिताऽऽशु भ्रामरीभासिता ।
पायाद् वः श्रुतदेवता निदधती तत्राब्जकान्ती क्रमौ,
नाली केसरलालसा समुदिताऽऽशु भ्रामरीभासिता ।।4।।

## 4. श्री शान्तिनाथ

(राग : शान्ति जिनेश्वर समरीये)

शान्ति सुहंकर साहिबो, संयम अवधारे, सुमित्रने घेर पारणुं, भव पार उतारे,
विचरंता अवनीतले, तप उग्र विहारे, ज्ञान ध्यान एकतानथी, तिर्यंचने तारे...1

पास वीर वासुपूज्यजी, नेम मल्लिकुमारी, राज्यविहुणा ए थया, आपे व्रतधारी,
शान्तिनाथ प्रमुखा सवि, लही राज्य निवारी, मल्लि नेम परण्या नहि, बीजा घरबारी.2

कनक कमल पगलां ठवे, जग शान्ति करीजे, रयण सिंहासन बेसीने, भली देशना दीजे,
योगावंचक प्राणीया, फल लेतां रीझे, पुष्करावर्तना मेघमां, मगशेल न भींजे...3
कोडवदन शूकरारूढो, श्याम रूपे चार, हाथ बीजोरू कमल छे, दक्षिण कर सार,
जक्ष गरूड वाम पाणिए, नकुलाक्ष वखाणे, निर्वाणीनी वात तो, कवि *वीर* ते जाणे..4

## 5. श्री शांतिनाथ

(राग : शान्ति सुहंकर साहिबो)

शान्तिजिनेसर समरीअे, जेनी अचिरामाय,
विश्वसेन कुल उपन्या, मृग लंछन पाय,
गजपुरनयरीनो धणी, कंचन वरणी काय,
धनुष चालीशनी देहडी, लाख वरसनुं आय ।।1।।

शान्तिजिनेसर सोळमा, चक्री पंचम जाणुं,
कुन्थुनाथ चक्री छठ्ठा, अरनाथ वखाणुं,
अे त्रणे चक्री सही, देखी आणंदु,
संजम लई मुगते गया, नित्य उठीने वंदु ।।2।।

शान्तिजिनेश्वर केवली, बेठा धर्म प्रकाशे,
दान शियल तप भावना, नर सोय अभ्यासे,
अेह वचन जिनजीतणा, जेणे हियडे धरीया,
सुणतां समकित निर्मला, निश्चे केवल वरीया ।।3।।

समेतशिखरगिरि उपरे, जेणे अणसन कीधां,
काउस्सग्ग ध्यान मुद्रा रही, जेणे मोक्ष ज लीधा,
जक्ष गरुड समरुं सदा, देवी निरवाणी,
भविक जीव तुम सांभलो, रिखभदासनी वाणी ।।4।।

## 6. श्री नेमनाथ

राजुल वर नारी, रूपथी रति हारी, तेहना परिहारी, बालथी ब्रह्मचारी ।
पशुआं उगारी, हुआ चारित्रधारी, केवलसिरि सारी, पामिया घाती वारी ।।1।।

त्रण ज्ञान संयुक्ता, मातानी कुखे हुंता, जनमे पूरहूंता आवी सेवा करंता ।
अनुक्रमे व्रत करंता, पंच समिति धरंता, महियल विचरंता, केवलश्री वरंता ।।2।।

सवि सुरवर आवे, भावना चित्त लावे, त्रिगडुं सोहावे, देवछंदो बनावे ।
सिंहासन ठावे, स्वामीना गुण गावे, तिहां जिनवर आवे, तत्त्व वाणी सुणावे ।।3।।

शासनसुरी सारी अंबिका नाम धारी, जे समकिती नर नारी, पाप संताप वारी ।
प्रभु सेवाकारी जाप जपीए सवारी, संघ दुरित निवारी, पद्मने जेह प्यारी ।।4।।

## 7. श्री नेमिजिन स्तुति

श्रावण शुदि दिन पंचमीए, जनम्या नेमि जिणंद तो,
श्याम वरण तनु शोभतुं ए, मुख शारदको चंद तो,
सहस वरस प्रभु आउखुं ए, ब्रह्मचारी भगवंत तो,
अष्ट करम हेले हणीए, पहोंता मुक्ति महंत तो. ।।1।।

अष्टापद पर आदिजिन ए, पहोंता मुक्ति मोझार तो,
वासुपूज्य चंपापुरी ए, नेम मुक्ति गिरनार तो,
पावापुरी नगरीमां वळी ए, श्री वीरतणुं निर्वाण तो,
समेतशिखर वीस सिद्ध हुआ ए, शिर वहु तेहनी आण तो. ।।2।।

नेमनाथ ज्ञानी हुआ ए, भाखे सार वचन तो,
जीवदया गुण वेलडी ए, कीजे तास जतन तो,
मृषा न बोलो मानवी ए, चोरी चित्त निवार तो,
अनंत तीर्थंकर एम कहे ए, परिहरिए परनार तो. ।।3।।

गोमेध नामे यक्ष भलो ए, देवी श्री अंबिका नाम तो,
शासन सांनिध्य जे करे ए, करे वळी धर्मना काम तो,
तपगच्छ नायक गुणनीलो ए, श्री विजयसेनसूरिराय तो,
*ऋषभदास* पाय सेवतां ए, सफल करो अवतार तो.।।4।।

## 8. नेमिजिन स्तुति

यो रैवताख्यगिरिमूर्ध्नि तपांसि भोग-
राजीमतीत्य जनमारचयां चकार ।
नेमिं जना ! नमत यो विगतान्तरारी,
राजीमतीत्यजनमारचयाञ्चकार ।।1।।

यज्ज्ञानसारमुकुरे प्रतिबिम्बमीयु-
र्भावालयो गणनया रहिता निशाते ।
मेधाविनां स भगवन् ! परमेष्ठिनां श्री-
र्भावालयो गणनया रहिता निशाते । ।।2।।

निर्मापयन्त्यखिलदेहजुषां निषेधं-
सारा विभाति समतापर ! मारणस्य ।
सिद्धान्त ! सिद्धरचितस्य तवोग्रतत्त्व-
सारा विभाऽतिसमतापरमारणस्य ।।3।।

प्राप्ता प्रकाशमसमद्युतिभिर्निरस्त-
ताराविभावसुमतो दमहारिबन्धा ।
भक्ताऽम्बिकाऽमरवशाऽवतु नेमिसार्व,
ताराविभावसुमतो दमहारिबन्धा ।।4।।

## 9. श्री नेमनाथ

सुर असुर वंदित पायपंकज, मयणमल्लमक्षोभितं,
घन सुघन श्याम शरीर सुंदर, शंख लंछन शोभितं ।
शिवादेवी नंदन त्रिजगवंदन, भविक कमल दिनेश्वरं,
गिरनार गिरिवर शिखर वंदु, श्री नेमिनाथ जिनेश्वरं ।।1।।

अष्टापदे श्री आदि जिनवर, वीर पावापुरी वरूं,
वासुपूज्य चंपानयर सिद्धा, नेम रैवत गिरिवरूं ।
समेत शिखरे वीश जिनवर, मुक्ति पहोता मुनिवरूं,
चोवीश जिनवर नित्य वंदुं, सयल संघ सुहंकरूं. ।।2।।

अग्यार अंग उपांग बार, दश पयन्ना जाणीये,
छ छेद ग्रन्थ पसत्थ अथ्था, चार मूल वखाणीये ।
अनुयोगद्वार उदार नंदी, सूत्र जिनमत गाइए,
वृत्ति चूर्णि भाष्य टीका, पीस्तालीश आगम ध्याइए. ।।3।।

दोय दिशी बालक दोय जेहने, सदा भवियण सुखकरूं,
दु:ख हरी अंबा लूंब सुंदर, दुरित दोहग अपहरूं ।
गिरनार मंडन नेमिजिनवर, चरण पंकज सेवीये,
श्रीसंघ सुप्रसन्न मंगल, करो ते अंबादेवीए. ।।4।।

## 10. श्री नेमनाथ जिन स्तुति

(राग : श्री शत्रुंजय तीरथ सार)

श्री गिरिनार शिखर शणगार, राजीमती हैडानो हार, जिनवर नेमकुमार, पूरण करुणारस भंडार, उगार्या पशुंआ अे वार, समुद्रविजय मल्हार । मोर करे मधुरा किंकार, विचे विचे कोयलना टहुंकार, सहस्त्रगमे सहकार, सहसावनमां हुआ अणगार, प्रभुजी पाम्या केवल सार, पोहोंता मुक्ति मोझार. ।।1।।

सिद्धगिरि अे तीरथ सार, आबु अष्टापद सुखकार, चित्र कुट वैभार,
सोवनगिरि सम्मेत श्रीकार, नंदीश्वर वर द्वीप उदार, जिहां बावन विहार ।
कुंडल रुचक ने इक्षुकार, शाश्वता अशाश्वता चैत्य विचार, अवर अनेक प्रकार,
कुमति वयणे म भूल गमार, तीरथ भेटे लाभ अपार, भवियण भावे जुहार ।।2।।
प्रगट छः अंगे वखाणी, द्रौपदी पांडवनी पटराणी, पूजा जिन प्रतिमानी,
विधिसुं कीधी उलट आणी, नारद मिथ्यादृष्टि अन्नाणी, छांड्यो अविरति जाणी ।
श्रावककुलनी अे सहि नाणी, समकित आ लावे आख्याणी, सातमे अंग वखाणी,
पूजनीक अे प्रतिमा अंकाणी, इम अनेक आगमनी वाणी, ते सुणजो भवि प्राणी. ।।3।।
केडे कटि मेखला घुघरीयाली, पाये नेउर रुमझूम चाली, उज्जितगिरि रखवाली,
अधर लाल जिस्या परवाली, कंचनवान काया सुकुमाली, कर लहके अंबडाली ।
वैरीने लागे विकराली, संघना विघ्न हरे उजमाली, अंबादेवी मयाली,
महिमाअे दश दिशि अजुआली, गुरुश्री संघविजय संभाली, दिन दिन नित्य दीवाली ।।4।।

## 11. श्री पार्श्वनाथ

पास जिणंदा वामानंदा, जब गरभे फली,
सुपनां देखे अर्थ विशेषे, कहे मघवा मळी ।
जिनवर जाया सुर हुलराया, हुआ रमणी प्रिये,
नेमीराजी चित्त विराजी, विलोकित व्रत लीए ।।1।।

वीर एकाकी चार हजारे, दीक्षा धूर जिन पति,
पास ने मल्लि त्रयशत साथे, बीजा सहसे व्रती ।
षट् शत साथे संयम धरता, वासुपूज्य जगधणी,
अनुपम लीला ज्ञान रसीला, देजो मुजने घणी ।।2।।

जिनमुख दीठी वाणी मीठी, सुरतरू वेलडी,
द्राक्ष विहासे गई वनवासे, पीले रस सेलडी ।
साकर सेंती तरणा लेती, मुखे पशु चावती,
अमृत मीठुं स्वर्गे दीठुं, सुर वधू गावती ।।3।।

गजमुख दक्षो वामन यक्षो, मस्तके फणावली,
चार ते बांही कच्छप वाही काया जस शामली ।
चउकर प्रौढा नागारूढां, देवी पद्मावती,
सोवन कांति प्रभु गुण गाती, वीर घरे आवती ।।4।।

## 12. श्री पार्श्वनाथ

सकल सुरासुर सेवे पाया, नयरी वाणारसी नाम सोहाया, अश्वसेन कुल आया,
दश ने चार सुपन दिखलाया, वामादेवी माताए जाया, लंछन नाग सोहाया ।
छप्पन दिककुमरी हुलराया, चोसठ इन्द्रासन डोलाया, मेरू शिखर नवराया,
नीलवरण तनु सोहे काया, श्री विजयसेनसूरीश्वरराया, पास जिनेश्वर गाया. ।।1।।
विद्रुम वरणा दोय जिणंदा, दो नीला दो उज्ज्वल चंदा, दो काला सुखकंदा,
सोले जिनवर सोवन्नवरणा, शिवपुरवासी श्रीपरसन्ना, जे पूजे ते धन्ना ।
महाविदेहे जिन विचरंता, वीसे पूरा श्रीभगवंता, त्रिभुवन ते अरिहंता,
तीरथ स्थानक नमुं ए शिश, भाव धरीने विश्वावीश, श्रीविजयसिंह सूरीश. ।।2।।
सांभल सखरा अंग अगीआर, मन शुद्धे उपांग ज बार, दश पयन्ना सार,
छेद ग्रंथ वळी षट् विचार, मूलसूत्र बोल्या जिन चार, नंदी अनुयोगद्वार ।
पणयालीश जिन आगम नाम, श्रीजिन अरथे भाख्या जाम, गणधर गुंथे ताम,
श्रीविजयसेनसूरींद वखाणे, जे भविका निज चित्तमां जाणे, तस घर लक्ष्मी आणे. ।।3।।
विजापुरमां स्थानक जाणी, महिमा म्होटे तुं मंडाणी, धरणेन्द्र धणियाणी,
अहनिश सेवे सुर वैमानी, परचो पूरण तुं सपराणी, पूरव पुण्य कमाणी ।
संघ चतुर्विध विघ्न निवारो, पार्श्वनाथनी सेवा सारो, सेवक पार उतारो,
श्रीविजयसेनसूरीश्वरराया, श्रीविजयदेव गुरू प्रणमी पाया, *ऋषभदास* गुण गाया ।।4।।

## 13. श्री पार्श्वजिन स्तुति

(उपजातिवृत्तम्)

श्रेयः श्रियां मंगलकेलिसद्म ! श्री-युक्त चिंतामणिपार्श्वनाथ ।
दुर्वारसंसारभयाच्च रक्ष, मोक्षस्य मार्गे वरसार्थवाह ! ।।1।।

जिनेश्वराणां निकर ! क्षमायां, नरेन्द्र देवेन्द्रनतांघ्रिपद्म !
कुरूष्व निर्वाणसुखं क्षमाभृत् ! सत्केवलज्ञानरमां दधान. ।।2।।
कैवल्यवामाहृदयैकहार ! क्षमासरस्वद्रजनीशतुल्य !
सर्वज्ञ ! सर्वातिशयप्रधान ! तनोतु ते वाग् जिनराज ! सौख्यम्. ।।3।।
श्री पार्श्वनाथक्रमणाऽम्बुजात-सारङ्गतुल्यः कलधौतकान्तिः,
श्री यक्षराजो गरूडाभिधानः चिरं जय ज्ञानकलानिधान. ।।4।।

## 14. श्रीपार्श्वजिनस्तुति

श्रीपार्श्वयक्षपतिना परिसेव्यमान-पार्श्वे भवामितरसादरलाङ्गलाभे ।
इन्दीवरेऽलिरिव रागमना विनीले, पार्श्वे भवामि तरसा दरलाङ्गलाभे ।।1।।
श्यामासुधाकरसुवर्णवरेन्द्रनील- राजीवराजितराङ्गधघराऽतिधीरा ।
श्रेयश्रियं सृजतु वो जिनकुञ्जराणां, राजी वराजितराङ्ग धराऽतिधीरा ।।2।।
या स्तूयते स्म जिनवाग् गहनार्थसार्थै-राज्याऽऽयता मघवतां समया तमोहाम् ।
दूरस्थितां स्मृतिपथं कुरू मुक्तिपुर्या, राज्याय तामघवतां समया तमोहाम् ।।3।।
छायेव पुरूषमसेवत पार्श्वपाद-पद्मावतीहितरसाजवनोपमाना ।
सामे रजांसि हरतादिव बन्धवाहः, पद्मावती हि तरसा जवनोऽपमाना ।।4।।

## 15. श्री पार्श्वनाथ जिन स्तुति

भीलडीपुर मंडण, सोहिए पार्श्वजिणंद, तेहने तमे पूजो, नर-नारीना वृंद !
ए त्रुट्यो आपे, घण-कण कंचन कोड, ते शिवपद पामे, कर्मतणा भय छोड...1
घनघसीय घनाघन, केसरना रंगरोळ, तेहमां तमे भेळो, कस्तुरीना घोळ !
तिणशुं तमे पूजो, चउवीशे जिणंद, जेम दैव दुःख जावे, आवे घर आणंद...2
त्रिगडे जिन बेठा, सोहिए सुंदर रूप, तस वाणी सुणवा, आवी प्रणमे भूप,
वाणी जोजननी, सुणजो भवियण सार, ते सुणतां होशे, पातिकनो परिहार...3
पाय रूमझुम रूमझुम, झांझरना झणकार, पद्मावती खेले, पार्श्व तणे दरबार,
संघ विघ्न हरजो, करजो जयजयकार, एम सौभाग्यविजय कहे, सुख संपत्ति दातार.4

## 16. श्री पार्श्वनाथ जिन स्तुति

(राग : आदि जिनवर राया)

श्री पास जिणंदा, मुख पुनम चंदा, पद युग अरविंदा, सेवे चोसठ इंदा,
लंछन नागिंदा, जास पाये सोहंदा, सेवे गुणी वृंदा, जेहथी सुखकंदा..1

जनमथी वर चार, कर्म नाशे अग्यार, ओगणीश निरधार, देवे कीधा उदार,
सवि चोत्रीस धार, पुण्यना अे प्रकार, नमीअे नर नार, जेम संसार पार...2।।

अेकादश अंगा, तेम बारे उवंगा, षट् छेद सुचंगा, मूल चारे सुरंगा,
दश पइन्ना सुसंगा, सांभळो थई अेकंगा, अनुयोग बहु भंगा, नंदी सूत्र प्रसंगा...3

पासे यक्ष पासो, नित्य करतो निवासो, अडतालीस जासो, सहस परिवार खासो,
सहुअे प्रभु दासो, मागता मोक्ष वासो, कहे पद्म निकासो, विघ्नना वृंद पासो...4

## 17. श्री पार्श्वनाथ भगवान की स्तुति

शंखेश्वर पासजी पूजीए, नरभवनो लाहो लीजीए ।
मनवांछित पूरण सुरतरू, जय वामा सुत अलवेसरू ।।1।।
दोय राता जिनवर अतिभला, दोय धोला जिनवर गुण नीला ।
दोय नीला दोय शामल कह्या, सोले जिन कञ्चन वर्ण लाह्या ।।2।।
आगम ते जिनवर भाखियो, गणधर ते हइडे राखियो ।
तेहनो रस जेणे चाखियो, ते हुओ शिवसुख साखियो ।।3।।
धरणीधर राय पद्मावती, प्रभु पार्श्वतणा गुण गावती ।
सहु संघना संकट चूरती, *नयविमलना* वांछित पूरती ।।4।।

## 18. श्री महावीर स्वामी

जय जय भवि हितकर वीर जिनेश्वर देव, सुरनरना नायक, जेहनी सारे सेव,
करूणा रस कंदो, वंदो आनंद आणी,
त्रिशला सुत सुंदर, गुण मणि केरो खाणी ।।1।।

जस पंच कल्याणक, दिवस विशेष सुहावे, पण थावर नारक, तेहने पण सुख थावे,
ते च्यवन जन्म, व्रत, नाण अने निरवाण,
सवि जिनवर केरां, ए पांचे अहिठाण ।।2।।
जिहां पंच समितियुत, पंच महाव्रत सार, जेहमां प्रकाश्या, वली पांचे व्यवहार,
परमेष्ठि अरिहंत, नाथ सर्वज्ञ ने पार,
ए पंच पदे लह्यो, आगम अर्थ उदार 3।।
मातंग-सिद्धाई, देवी जिनपद सेवी, दु:ख दुरित उपद्रव, जे टाळे नितमेवी,
शासन सुखदायी, आई सुणो अरदास,
श्री ज्ञानविमल गुण, पूरो वांछित आश ।।4।।

## 19. श्री महावीर स्वामी

शासन नायक वीरजी ए, पामी परम आधार तो,
रात्रिभोजन मत करो ए, जाणी पाप अपार तो,
घुअड काग ने नागना ए, ते पामे अवतार तो,
नियम नोकारसी नित्य करो ए, सांजे करो चउविहार तो. ।।1।।
वासी बोळ ने रींगणा ए, कंदमूल तुं टाळ तो,
खातां खोट घणी कहीए, ते माटे मन वार तो,
काचा दूध दही छाशमां ए, कठोळ जमवुं निवार तो,
ऋषभादिक जिन पूजतां ए, राग धरे शिवनार तो. ।।2।।
होळी बळेव ने नोरतां ए, पींपळे पाणी म रेड तो,
शीलसातमना वासीवडाए, खाता मोटी खोट तो,
सांभळी समकित दृढ करो ए, मिथ्या पर्व निवारतो,
सामायिक पडिक्कमणुं नित करो ए, जिनवाणी जगसार तो. ।।3।।
ऋतुवंती अडके नहि ए, नवी करे घरना काम तो,
तेना वांछित पूरशे ए, देवी सिद्धायिका नाम तो,
हित उपदेशे हर्ष धरो ए, कोई न करशो रीस तो,
कीर्ति कमला पामशो ए, *जीव* कहे तस शिष्य तो. ।।4।।

## 20. वर्धमान जिन

(वसन्ततिलकावृतम्)

कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि, दुष्कर्मवारणविदारणपञ्चवक्त्रम् ।
यत्पादपद्मयुगलं प्रणमन्ति शक्राः, स्तोष्ये मुदा जिनवरं जिनत्रैशलेयम् ।।1।।
क्षीणाष्टकर्मनिकरस्य नमोऽस्तु नित्यं, भीताभयप्रदमनिन्दितमंघ्रिपद्मम् ।
इष्टार्थमण्डलसुसर्जनदेववृक्षं, नित्योदयं दलिततीव्रकषायमुक्तम् ।।2।।
जैनागमं दिशतु सर्वसुखैकसारं, श्रीनन्दनक्षितिजहव्यहतिप्रकारम् ।
संसारसागरनिमज्जदशेषजन्तु-बोहित्थसन्निभमभीष्टदमाशुमुग्धम् ।।3।।
मातंगयक्षरमलां प्रकरोति सेवां, पूर्वान्तमारसमभीप्सितदं विशालम् ।
उत्पत्तिविस्तरनदीशपतज्जनानां, पोतायमानभिनम्य जिनेश्वरस्य ।।4।।

## 21. महावीरजिन स्तुति

सिद्धार्थवंशभवनेऽस्तुत यं सुराली, हृद्या तमोहमकर ! ध्वजमानतारे !
त्वं नौमि वीर ! विनयेन सुमेरूधीरं, हृद्या तमोहमकरध्वजमान ! तारे !..1
हृत् पादपद्ममभवत् पततां भवाब्धा वालम्बनं शमधरी कृतकामचक्रा ।
त्वं जैनराजि ! सृज मञ्जुशिवद्रुमाणां, वालं वनं शमधरीकृतकामचक्रा...2
कादम्बिनीव शिखिनामतनोदपास्ता- रामारमा मतिमतां तनुतामरीणाम् ।
जैनी नृणामियमर्त्यमणीव वाणी, रामा रमामतिमतां तनुतामरीणाम्..3
सम्यग्दृशां सुखकरी मदमत्तनील-कण्ठीरवाऽसि ततनोदितसाक्षमाला ।
देव्यम्बिके ! शिवमियं दिश पण्डितानां, कण्ठीरवाऽसिततनो ! ऽदितसाऽक्षमाला...4

## 22. महावीर स्वामी

गंधारे महावीर जिणंदा, जेने सेवे सुर नर इंदा, दीठे परमानंदा,
चैतर शुद तेरस दिन जाया, छप्पन दिक्कुमरी गुण गाया, हरख धरी हुलराया,
त्रीस वरस पाली घरवास, मागसर वद दशमी व्रत जास, विचरे मन उल्लास,
ए जिन सेवो हितकर जाणी, जेहथी लहीए शिवपटराणी, पुण्य तणी ए खाणी. ।।1।।

ऋषभजिनेश्वर तेर भव सार, चंद्रप्रभ भव आठ उदार, शान्तिकुमार भव बार, मुनिसुव्रत ने नेमकुमार, ते जिनना नव नव भव सार, दश भव पार्श्वकुमार, सत्तावीश भव वीरना कहीए, सत्तर जिनना त्रण त्रण लहिए, जिन वचने सद्दहीए, चोवीसजिननो एह विचार, जेहथी लहीए भवनो पार, नमतां जय जयकार. ।।2।। वैशाख शुद दशमी लही नाण, सिंहासन बेठा वर्द्धमान, उपदेश दे प्रधान, अग्नि खुणे हवे पर्षदा सुणीए, साध्वी वैमानिक स्त्री गणीये, मुनिवर त्यांही ज भणीए, व्यंतर ज्योतिषी भुवनपति सार, एहनो नैऋत्यखुणे अधिकार, वायव्यखुणे अने नार, ईशाने सोहीए नर-नार, वैमानिक सुर थइ पर्षदा बार, सुणे जिनवाणी उदार. ।।3।। चक्केसरी अजिया दुरिआरी, काली महाकाली मनोहारी, अच्चुआसंता सारी, ज्वाला सुतारया ने असोया, सिरिवत्सा वरचंडा माया, विजयांकुसी सुखदाया, पन्नत्ति निव्वाणी अच्चुआ धरणी, वैरूटदत्त गंधारी अधहरणी, अंब पउमा सुखकरणी, सिद्धाइ शासन रखवाली, कनकविजय बुध आनंदकारी, जसविजय जयकारी. ।।4।।

## 23. महावीर स्वामी

जय जयकर साहिब, शासनपति महावीर, मानव मनरंजन, भंजन मोह जंजीर, दु:ख दारिद्र नासे, तिहुअण जण कोटीर, आयु वर्ष बहोंतेर, सोवनवर्ण शरीर...1 ऋषभादिक जिनवर, सोहे जग चोवीश, वळी तेहना सुंदर, अतिशय वर चोत्रीश, भव दव भय भेदक, वाणी गुण पांत्रीश, जिन त्रिभुवन तीरथ, प्रह ऊठी प्रणमीश.2 प्रभु बेसी त्रिगडे, वीर करे वखाण, दान शील तप भाव, समजे जाण अजाण, संसार तणुं जेह, जाणे सकल विन्नाण, जिनवाणी सुणतां, फल लाभे कल्याण.3 पाय झांझर झमके, घुघरीनो घमकार, कटि मेखल खलके, उर एकावली हार, सिद्धायिका सेवे, वीर तणो दरबार, कवि तिलकविजय बुध, सेवकनो जयकार.4

## 24. महावीर स्वामी

मनोहर मूर्ति महावीर तणी, जिणे सोळ पहोर देशना पभणी, नवमल्ली नवलच्छी नृपति सुणी, कही शिव पाम्या त्रिभुवन धणी.।।1।।

शिव पाम्या ऋषभ चउदश भक्ते, बावीश लह्या शिव मास स्थिते,
छठ्ठे शिव पाम्या वीर वळी, कार्तिक वदि अमावस्या निरमली.।।2।।
आगामी भावे भाव कह्या, दिवाळी कल्पे जेह लह्या,
पुण्य पाप फल अज्झयणे कह्यां, सवि तहत्ति करीने सद्दह्यां. ।।3।।
सवि देव मळी उद्योत करे, परभाते गौतम ज्ञान वरे,
ज्ञानविमल सदा गुण विस्तरे, जिनशासनमां जयकार करे. ।।4।।

## 25. श्री सीमंधर स्वामी

अजुवाली ते बीज सोहावे रे, चंदा रूप अनुपम लावे रे,
चंदा विनतडी चित्त धरजो रे, सीमंधरने वंदना कहेजो रे ।।1।।
वीश विहरमान जिनने वंदो रे, जिनशासन पूजी आणंदो रे,
चंदा एटलुं काम तुमे करजो रे, सीमंधरने वंदना कहेजो रे ।2।।
सीमंधर जिननी वाणी रे, ते तो अमीय पान समाणी रे,
चंदा तुम सुणी अमने सुणावो रे, भवसंचित पाप गमावो रे ।3।।
सीमंधर जिननी सेवा रे, जिनशासन भासन मेवा रे,
चंदा होजो संघना त्राता रे, गज लंछन चंद्र विख्याता रे ।।4।।

## 26. श्री सीमंधर स्वामी

(यह स्तुति चार बार बोले)

श्री सीमंधर जिनवर, सुखकर साहिबदेव,
अरिहंत सकलनी, भाव धरी करुं सेव,
सकलागम पारग, गणधर भाषित वाणी,
जयवंती आणा ज्ञानविमल गुणखाणी... ।।1।।

## 27. सीमंधरजिन

श्री सीमंधर मुजने वाला, आज सफल सुविहाणुं जी,
त्रिगडे तेज तपता जिनवर, मुज तुठा हुं जाणुं जी;

केवल कमला केली करंतां, कुलमंडण कुल दीवो जी,
लाख चोरासी पूरव आयु, रुक्मणी वर घणुं जीवो जी. ।।1।।

संप्रतिकाले वीश तीर्थंकर, उदया अभिनव चंदा जी,
केई केवली केई बालक परण्या, केई महिपती सुखकंदा जी,
श्री सीमंधर आदि अनोपम, महाविदेह खेत्रे जिणंदा जी,
सुर नर कोडाकोडी मळी वळी, जोवे मुख अरविंदा जी ।।2।।

सीमंधर मुख त्रिगडुं जोवा, हुं अलजायो वाणी जी,
आडा डुंगर आवी न शकुं, वाट विषम अरुपाणी जी,
रंग भरी राग धरी पाय लागुं, सूत्र अर्थ मन सारो जी,
अमृतरसथी अधिकी वखाणी, जीवदया चित्त धारो जी ।।3।।

पंचांगुली में प्रत्यक्ष दीठी, हुं जाणुं जगमाता जी,
पहेरण चरणा चोली पटोली, अधर बिराजे राता जी,
स्वर्गभुवन सिंघासण बेठी, तुंहीज देवी विख्याता जी,
सीमंधर शासन रखवाली, शान्तिकुशल सुखदाता जी ।।4।।

## 28. श्री सीमंधर स्वामी

(राग : शंखेश्वरपासजी पूजीये)

मुज आंगण सुरतरु ऊगीयो, कामधेनु चिंतामणी पुगीयो,
सीमंधरस्वामी जो मिले, मारा मनना मनोरथ सवि फले ।।1।।

हुं वंदु वीसे विहरमान, ते केवलज्ञानी युगप्रधान,
सीमंधरस्वामी गुण निधान, जेहने जीत्या कोह लोह मोह मान ।।2।।

अंबावन समरे कोकीला, मेहने वंछे जिम मोरला,
मधुकर मालती परिमल रमे, तिम आगमे मारुं मन रमे ।।3।।

जयलच्छी शासन देवता, रत्नत्रय गुण जे साधता,
विमल सुख पामे ते सदा, सीमंधर जिन प्रणमुं मुदा ।।4।।

## 29. श्री शत्रुंजयतीर्थ

श्री शत्रुंजय मंडन, ऋषभ जिणंद दयाल, मरूदेवा नंदन, वंदन करू त्रण काल,
ए तीरथ जाणी, पूर्व नव्वाणुं वार, आदीश्वर आव्या, जाणी लाभ अपार ।।1।।
त्रेवीश तीर्थंकर, चढीया इण गिरि राय, ए तीरथनां गुण, सुर असुरादिक गाय,
ए पावन तीरथ, त्रिभुवन नहिं तस तोले, ए तीरथना गुण, सीमंधर मुख बोले ।।2।।
पुंडरीक गिरि महिमा, आगममां प्रसिद्ध, विमलाचल भेटी, लहिए अविचल रिद्ध,
पंचमी गति पहोंता, मुनिवर कोडाकोड, इण तीरथ आवी, कर्म विपाक विछोड ।।3।।
श्री शत्रुंजय केरी, अहोनिश रक्षाकारी, श्री आदि जिनेश्वर, आण हृदयमां धारी,
श्री संघ विघन हर, कवड जक्ष गणभूर, श्री रवि बुध सागर, संघना संकट चूर ।।4।।

## 30. श्री शत्रुंजय

श्रीशत्रुंजय तीरथ सार, गिरिवरमां जेम मेरू उदार, ठाकुर राम अपार,
मन्त्रमांही नवकार ज जाणु, तारामां जेम चन्द्र वखाणुं, जलधर जलमां जाणुं ।
पंखीमाहे जिम उत्तम हंस, कुलमांहे जिम ऋषभनो वंश, नाभि तणो ए अंस,
क्षमावन्तमां श्रीअरिहंत, तपशूरा मुनिवर महन्त, शत्रुञ्जयगिरि गुणवन्त ।।1।।
ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दा, सुमतिनाथ मुख पूनम चन्दा, पद्मप्रभु सुखकन्दा,
श्रीसुपार्श्व चन्द्रप्रभ सुविधि, शीतल श्रेयांस सेवो बहु बुद्धि, वासुपूज्य मति शुद्धि ।
विमल अनन्त धर्म जिन शान्ति, कुंथु अर मल्लि नमुं एकांति, मुनिसुव्रत शुद्ध पांति,
नमि नेमि पास वीर जगदीश, नेम विना ए जिन त्रेवीश, सिद्धगिरि आव्या ईश ।।2।।
भरतराय जिन साथे बोले, कहो स्वामी ! कुण शत्रुंजय तोले ? जिननुं वचन अमोले,
ऋषभ कहे सुणो भरतजी राय, 'छ'री' पालंतां जे नर जाय, पातक भूको थाय ।
पशु पंखी जे इण गिरि आवे, भव त्रीजे ते सिद्ध ज थावे, अजरामर पद पावे,
जिन मतमां शेत्रुंजो वखाण्यो, ते में आगम दिलमांहि आण्यो, सुणतां सुख उर ठायो ।।3।।
संघपति भरत नरेसर आवे, सोवन तणा प्रासाद करावे, मणिमय मुरती ठावे ।
नाभिराया मरूदेवी माता, ब्राह्मी-सुन्दरी ब्हेन विख्याता, मूर्ति नवाणुं भ्राता ।
गोमुख यक्ष चक्रेश्वरी देवी, शत्रुंजय सार करे नित मेवी, तपगच्छ ऊपर हेवी,
श्रीविजयसेन सूरीश्वर राया, श्रीविजयदेवसूरि प्रणमी पाया, ऋषभदास गुण गाया ।।4।।

## 31. चार शाश्वता जिन

ऋषभ चंद्रानन वंदन कीजे, वारिषेण दु:ख वारेजी,
वर्द्धमान जिनवर वळी प्रणमो, शाश्वता नाम ए चारेजी,
भरतादिक क्षेत्रे मळी होवे, चार नाम चित्त धारेजी,
तिणे चारे ए शाश्वत जिनवर, नमीए नित्य सवारेजी. ।।1।।

ऊर्ध्व अधो तीर्च्छा लोके थई, कोडी पन्नरसें जाणोजी,
उपर कोडी बेंतालीस प्रणमो, अडवन लख मन आणोजी,
छत्रीश सहस ऐंशी ते ऊपरे, बिंबतणो परिमाणोजी,
असंख्यात व्यंतर ज्योतिषीमां, प्रणमुं ते सुविहाणोजी. ।।2।।

रायपसेणी जीवाभिगमे, भगवती सूत्रे भाखीजी,
जंबूद्वीप पन्नत्ति ठाणांगे, विवरीने घणुं दाखीजी,
वलिय अशाश्वती ज्ञाताकल्पमां, व्यवहार प्रमुखे आखीजी,
ते जिनप्रतिमा लोपे पापी, जीहाँ बहु सूत्र छे साखीजी. ।।3।।

ए जिनपूजाथी आराधक, ईशान इन्द्र कहायाजी,
तिम सुरियाभ प्रमुख बहु सुरवर, देवीतणां समुदायाजी,
नंदीश्वर अठ्ठाई महोत्सव, करे अति हर्ष भरायाजी,
जिन उत्तम कल्याणक दिवसे, *पद्मविजय* नमे पायाजी. ।।4।।

## 32. श्री सिद्धचक्रजी

वीर जिनेश्वर अति अलवेसर, गौतम गुणना दरिया जी,
एक दिन आणा वीरनी लइने, राजगृही संचरिया जी,
श्रेणिकराजा वंदन आव्या, उलट मनमां आणी जी,
पर्षदा आगल बार बिराजे, हवे सुणो भवि प्राणी जी. ।।1।।

मानवभव तुमे पुण्ये पाम्या, श्री सिद्धचक्र आराधो जी,
अरिहंत सिद्ध सूरि उवज्झाया, साधु देखी गुण वाधो जी,

दरिसण ज्ञान चारित्र तप कीजे, नवपद ध्यान धरीजे जी,
धूर आसोथी करवा आंबिल, सुखसंपदा पामीजे जी. ।।2।।
श्रेणिकराय गौतम ने पूछे, स्वामी ए तप कोणे कीधो जी,
नव आंबिल तप विधिशुं करतां, वांछित सुख कोणे लीधो जी ?
मधुर ध्वनि बोल्या श्री गौतम, सांभलो श्रेणिकराय वयणा जी,
रोग गयो ने संपदा पाम्या, श्री श्रीपाल ने मयणा जी. ।।3।।
रूमझुम करती पाये नेऊर, दीसे देवी रूपाली जी,
नाम चक्केसरी ने सिद्धाइ, आदिजिन वीर रखवाली जी,
विघ्न कोड हरे सहु संघना, जे सेवे एना पाय जी,
भाणविजय कवि सेवक नय कहे, सानिध्य करजो मायजी. ।।4।।

## 33. सिद्ध चक्र...

अरिहंत नमो वली सिद्ध नमो, आचारज वाचक साधु नमो,
दर्शन ज्ञान चारित्र नमो, तप ए सिद्धचक्र सदा प्रणमो... ।।1।।
अरिहंत अनंत थया थाशे, वली भाव निक्षेपे गुण गाशे,
पडिक्कमणां देववंदन विधिशुं, आंबील तप गणणुं गणो विधिशुं ।।2।।
छ'री पाली जे ए तप करशे, श्रीपाल तणी परे भव तरशे,
सिद्धचक्रने कुण आवे तोले, एवा जिनागम गुण बोले... ।।3।।
साडाचार वरसे ए तप पूरो, ए कर्मविदारण तप शूरो,
सिद्धचक्रने मनमंदिर थापो, 'नयविमलेसर' वर आपो... ।।4।।

## 34. सिद्धचक्र...

प्रह ऊठी वंदु, सिद्धचक्र सदाय, जपीये नवपदनो, जाप सदा सुखदाय,
विधिपूर्वक ए तप, जे करे थई उजमाल, ते सवि सुख पामे, जेम मयणा श्रीपाल.1
मालवपति पुत्री, मयणा अति गुणवंत, तस कर्मसंयोगे, कोढी मलियो कंत,
गुरु वयणे एणे, आराध्युं तप एह, सुख संपद वरिया, तरिया भवजल तेह..2

आंबिलने उपवास, छठ्ठ वली अठ्ठम, दस अठ्ठाइ पंदर, मास छ मास सुविष, इत्यादि तप बहु, सहुमांही शिरदार, जे भवियण करे, ते तरे संसार...3।। तप सान्निध्य करशे, श्री विमलेसर यक्ष, सहु संघना संकट, चूरे थइ प्रत्यक्ष, पुंडरिक गणधार, कनकविजय बुध शिष्य, बुध 'दर्शनविजय' कहे, पहोंचे सकल जगीश.4

## 35. श्री सिद्धचक्र की स्तुति

(राग : श्री शत्रुंजय तीरथ सार)

पहेले पद जपीए अरिहंत, बीजे सिद्ध जपो जयवंत, त्रीजे आचार ज संत, चोथे नमो उवज्झाय तंत, नमोलोए सव्वसाहु महंत, पंचमे पद विलसंत, दंसण छठ्ठे जपो मतिवंत, सातमे पद नमो नाण अनंत, आठमे चारित्र हुंत, नमो तवस्स नवमे सोहंत, श्री सिद्धचक्रनुं ध्यान धरंत, पातिकनो होई अंत. ।।1।।

केसर चंदन साथे घसीजे, कपूर कस्तूरी मांही भेलीजे, घन घनसार ठवीजे, गंगोदकसुं नवण करीजे, श्री सिद्धचक्रनी पूजा करीजे, सुरभि कुसुम चर चीजे, कुंदरु अगरनो धूप दहीजे, कामधेनुं घृत दीप भरीजे, निर्मल भाव वसीजे, अनुपम नवपद ध्यान धरीजे, रोगादिक दुःख दूर हरीजे, मुगति वधु परणीजे. ।।2।।

आसो ने वळी चैत्र रसाल, उज्ज्वल पखे ओली सुविशाल, नव आंबिल चोसाल, रोग शोगनो ए तप काल, साडाचार वरस तस चाल, वळी जीवे तिहां भाल, जे सेवे भवि थइ उजमाळ, ते लहे भोग सदा असराल, जिम मयणा श्रीपाल, छंडी अलगो आळ पंपाल, नित नित आराधो त्रणकाल, श्री सिद्धचक्र गुणमाल. ।।3।।

गजगामिणी चंपकदल काय, चाले पग नेउर ठमकाय, हियडे हार सुहाय, कुंकुम चंदन तिलक रचाय, पहेली पीत पटोली बनाय, लीलाइ ललकाय, बाली भोली चक्केसरी माय, जे नर सेवे सिद्धचक्राय, द्यो तेहने सुख सहाय, श्री विजयप्रभसूरि तपगच्छराय, प्रेमविजय गुरुसेवा पाय, कान्तिविजय गुण गाय. ।।4।।

## 36. दूज

दिन सकल मनोहर, बीज दिवस सुविशेष, रायराणा प्रणमे, चंद्रतणी जिहां रेख ।
तिहां चन्द्र विमाने, शाश्वता जिनवर जेह । हुं बीजतणे दिन, प्रणमु आणी नेह.1
अभिनन्दन चन्दन, शीतल शीतलनाथ, अरनाथ सुमति जिन, वासुपूज्य शिवसाथ ।
इत्यादिक जिनवर, जन्मज्ञान-निरवाण, हूं बीजतणे दिन, प्रणमुं ते सुविहाण..2
प्रकाश्यो बीजे, दुविध धर्म भगवन्त, जेम विमल कमल दोय, विपुल नयन विकसन्त ।
आगम अति अनुपम, जिहां निश्चय-व्यवहार, बीजे सवि कीजे, पातकनो परिहार.3
गजगामिनी कामिनी, कमल-सुकोमल चीर, चक्रेश्वरी केसर, सरस सुगन्ध शरीर ।
करजोडी बीजे, हुं प्रणमुं तस पाय,
एम लब्धिविजय कहे, पूरो मनोरथ माय ।।4।।

## 37. श्री ज्ञानपंचमी

(स्रग्धरा छन्दः)

श्री नेमिः पञ्चरूपस्त्रिदशपतिकृतप्राज्यजन्माभिषेक-
श्चञ्चत्पञ्चाऽक्षमत्तद्विरदमदभिदा पञ्चवक्त्रोपमानः,
निर्मुक्तः पञ्चदेह्याः परमसुखमयः प्रास्तकर्मप्रपञ्चः,
कल्याणं पञ्चमीसत्तपसि वितनुतां पञ्चमज्ञानवान् वः ।।1।।

सम्प्रीणन् सच्चकोरान् शिवतिलकसमः कौशिकाऽऽनन्दमूर्तिः,
पुण्याब्धिप्रीतिदायी सितरूचिरिव यः स्वीयगोभिस्तमांसि,
सान्द्राणि ध्वंसमानः सकलवुवलयोल्लासमुच्चैश्चकार,
ज्ञानं पुष्याज्जिनौघः सत्तपसि भविनां पञ्चमी वासरस्य ।।2।।

पीत्वा नानाभिधाऽर्थामृतरसमऽसमं यान्ति यास्यन्ति जग्मु-
र्जीवा यस्मादनेके विधिवदमरतां प्राज्यनिर्वाणपुर्याम्,
यात्वा देवाधिदेवाऽऽगमदशमसुधाकुण्डमाऽऽनन्द-हेतु-
स्तत्पञ्चम्यास्तपस्युद्यतविशदधियां भाविनामस्तु नित्यम्. ।।3।।

स्वर्णालङ्कारवल्गन्मणिकिरणगणध्वस्तनित्याऽन्धकारा,
हुङ्काराऽऽरावदूरी कृत सुकृतजन व्रातविघ्न प्रचारा ।
देवी श्री अम्बिकाऽऽख्या जिनवरचरणाऽम्भोजभृङ्गीसमाना,
पञ्चम्यह्नस्तपोर्थं वितरतु कुशलं धीमतां साऽवधाना. ।।4।।

## 38. मौन एकादशी

(स्रग्धरा छन्दः)

श्रीभाग् नेमिर्बभाषे जलशयसविधे, स्फुर्तिमेकादशीयां,
माद्यन्मोहावनिद्रप्रशमनविशिखः, पञ्चबाणाऽर्चिरर्णः,
मिथ्यात्वध्वान्तवान्तौ रविकरनिकरस्तीव्रलोभाद्रिवज्रं,
श्रेयस्तत्पर्व वस्ताच्छिवसुखमिति वः, सुव्रतश्रेष्ठिनोऽभूत् ।।1।।

इन्द्रैरभ्रभ्रमद्भिर्मुनिपगुणरसाऽऽस्वादनाऽऽनन्दपूर्णै,
र्दीव्यद्भिः स्फारहारैर्ललितवरवपुर्यष्टिभिः स्वर्वधूभिः,
सार्धं कल्याणकौघो जिनपतिनवतेर्बिन्दुभूतेन्दुसङ्ख्यो,
घस्रे यस्मिन् जगे तद्भवतु सुभविनां पर्व सच्छर्महेतुः ।।2।।

सिद्धान्ताब्धिप्रवाहः कुमतजनपदान् प्लावयन् यः प्रवृत्तः,
सिद्धिद्विपं नयन् धीधनमुनिवणिजः सत्यपात्रप्रतिष्ठान्,
एकादश्यादिपर्वेन्दुमणिमतिदिशन् धीवराणां महार्घ्यं,
सन्यायाम्भश्च नित्यं प्रवितरतु स नः स्वप्रतिरे निवासम्. ।।3।।

तत्पर्वोद्यापनार्थं समुदितसुधियां शम्भुसङ्ख्या प्रमेया-
मुत्कृष्टां वस्तुवीथिमभयदसदने प्राभृतीकुर्वतां ताम्,
तेषां सव्याऽक्षपादैः प्रलपितमतिभिः प्रेत-भूतादिभिर्वा,
दुष्टैर्जन्यं त्वजन्यं हरतु हरितनुन्यस्तपादाऽम्बिकाऽऽख्या. ।।4।।

## 39. पर्युषण

सत्तर भेदी जिनपूजा रचीने, स्नात्र महोत्सव कीजे जी,
ढोल ददामा भेरी न फेरी, झल्लरी नाद सुणीजे जी,
वीरजिन आगे भावना भावी, मानवभव फळ लीजे जी,
पर्व पजुसण पूरव पुण्ये, आव्या तेह जाणीजे जी. ।।1।।

मास पास वळी दसम दुवालस, चत्तारी अट्ठ कीजे जी,
ऊपर वळी दस दोय करीने, जिन चोवीशे पूजीजे जी,
वडा कल्पनो छठ्ठ करीने, वीर वखाण सुणीजे जी,
पडवेने दिन जन्म महोत्सव, धवल मंगल वरतीजे जी.।।2।।

आठ दिवस लगे अमर पळावी, अट्ठमनो तप कीजे जी,
नागकेतुनी परे केवल लहीए, जो शुभ भावे रहीए जी,
तेलाधर दिन त्रण कल्याणक, गणधर वाद वधीजे जी,
पास नेमिसर अंतर त्रीजे, वृषभचरित्र सुणीजे जी. ।।3।।

बारसासूत्र ने सामाचारी, संवत्सरी पडिक्कमीए जी,
चैत्यपरिपाटी विधिसुं कीजे, सकल जंतु खामीजे जी,
पारणाने दिन स्वामीवत्सल, कीजे अधिक वडाइ जी,
*मानविजय* कहे सकल मनोरथ, पूरे देवी सिद्धाई जी. ।।4।।

## 40. श्री पर्युषण

(राग : शत्रुंजय तीरथ सार)

वरस दिवसमां अषाड चोमासु, तेहमां वली भादरवो मास, आठ दिवस अति खास,
पर्व पजुसण करो उल्लास, अठ्ठाइधरनो करवो उपवास, पोसह लीजे गुरु पास।
वडाकल्पनो छठ्ठ करीजे, तेह तणो वखाण सुणीजे, चौद सुपन वांचीजे,
पडवेने दिन जन्म वंचाय, ओच्छव महोच्छव मंगल गवाय, वीर जिनेसर राय. ।।1।।

बीज दिने दीक्षा अधिकार, सांज समय निरवाण विचार, वीर तणो परिवार,
त्रीज दिने श्रीपार्श्व विख्यात, वळी नेमीसरनो अवदात, वळी नव भवनी वात ।
चोवीशे जिन अंतर तेवीश, आदि जिनेश्वर श्री जगदीश, तास वखाण सुणीश,
धवल मंगल गीतगहुंली करीए, वळी प्रभावना नित अनुसरीए, अठ्ठमतप जय वरीए. ।।2।।

आठ दिवस लगे अमर पळावो, तेह तणो पडहो वजडावो, ध्यान धरम मन भावो,
संवत्सरी दिन सार कहेवाय, संघ चतुर्विध भेळो थाय, बारसा सूत्र सुणाय ।
थिरावली ने समाचारी, पट्टावली प्रमाद निवारी, सांभळजो नर नारी,
आगम सूत्र ने हुं प्रणमीश, कल्पसूत्रसुं प्रेम धरीश, शास्त्र सर्वे सुणीश. ।।3।।

सत्तर भेदी जिन पूजा रचावो, नाटककेरा खेल मचावो, विधिसुं स्नात्र भणावो,
आडंबरसुं देहरे जइए, संवत्सरी पडिक्कमणुं करीए, संघ सर्वने खमीए ।
पारणे साहम्मिवच्छल कीजे, यथाशक्तिए दान ज दीजे, पुन्यभंडार भरीजे,
श्री विजयक्षेमसूरि गणधार, जशवंतसागर गुरु उदार, जिणंदसागर जयकार. ।।4।।

## 41. पर्युषण

पुण्यनुं पोषण पापनुं शोषण, पर्व पजूसण पामीजी,
कल्प धरे पधारवो स्वामी, नारी कहे शिर नामीजी ।
कुंवर गयवर खन्ध चढावी, ढोल निशान वगडावोजी,
सद्गुरूसंगे चढते रंगे, वीर-चारित्र सुणावोजी ।।1।।

प्रथम वखाणे धर्म सारथि पद, बीजे सुपनां चारजी,
त्रीजे सुपन पाठक वली चोथे, वीर जनम अधिकारजी ।
पांचमे दीक्षा छट्ठे शिवपद, सातमे जिन त्रेवीशजी,
आठमे थिरावली संभलावी, पिउडा पूरो जगीशजी ।।2।।

छठ्ठ अठ्ठम अठ्ठाई कीजे, जिनवर चैत्य नमीजेजी,
वरसी पडिक्कमणुं मुनिवन्दन, संघ सकल खामीजेजी ।

आठ दिवस लगे अमर पलावी, दान सुपात्रे दीजेजी,
भद्रबाहु-गुरू वयण सुणीने, ज्ञान सुधारस पीजेजी ।।3।।

तीरथमां विमलाचल गिरिमां, मेरु महीधर जेमजी,
मुनिवरमां हि जिनवर म्होटा, परव पजूषण तेमजी !
अवसर पामी साहम्मिवच्छल, बहु पक्वान वडाइजी,
खिमा विजय जिन देवी सिद्धाइ, दिन दिन अधिक वधाइजी ।।4।।

## 42. त्रीज

(राग : सत्तरभेदी जिनपूजा रचीने)

निसिही त्रण प्रदक्षिणा, त्रण प्रणाम त्रण करीजे जी,
त्रण दिशी वरजी जिन जुओ, भूमि त्रण पूजीजे जी ।
त्रण प्रकारनी पूजा करीने, त्रण अवस्था भावीजे जी,
आलंबन त्रण मुद्रा प्रणिधान, चैत्यवंदन त्रण कीजे जी. ।।1।।

पहेले भावजिन द्रव्यजिन बीजे, त्रीजे एकचैत्य धारो जी,
चोथे नामजिन पांचमे सर्वे, लोक चैत्य जुहारो जी ।
विहरमान छठ्ठे जिन वंदो, सातमे नाण निहाळो जी,
सिद्ध वीर उज्जंत अष्टापद, शासनसुर संभारो जी. ।।2।।

शक्रस्तवमां दोय अधिकार, अरिहंत चेइआणं त्रीजे जी,
नामस्तवमां दोय प्रकार, श्रुतस्तव दोय लीजे जी ।
सिद्धस्तवमां पांच प्रकार, ए बारे अधिकार जी,
जित निर्युक्तिमांहे भाख्यो, तेह तणो विस्तार जी. ।।3।।

भोयण पाण तंबोल वाहन, मेहुण अेक चित्त धारोजी
थूंक सळेखम वडी लघुनीति, जुगटे रमवुं वारो जी ।
ए दशे आशातना मोटी, वरजो जिनवर द्वारे जी,
क्षमाविजय जिन इणिपरे जंपे, शासनसुर संभारो जी. ।।4।।

## 43. नवतत्त्व

(राग : वीर जिनेसर अति अलवेसर)

जीवाजीवा पुण्य ने पावा, आश्रव संवर तत्ता जी,
सातमे निर्जरा आठमे बंध, नवमे मोक्षपद सत्ता जी ।
ए नवतत्ता समकित सत्ता, भाखे श्री अरिहंता जी,
भूज नयरमंडण रिसहेसर, वंदो ते अरिहंता जी. ।।1।।

धम्मा-धम्मा-गासा पुग्गल, समया पंच अजीवा जी,
नाण विनाण शुभाशुभ योगे, चेतन लक्षण जीवा जी ।
इत्यादिक षट् द्रव्य प्ररुपक, लोकालोक दिणंदा जी,
प्रह ऊठी नित्य नमीये विधिसुं, सित्तरि सो जिनचंदा जी. ।।2।।

सूक्ष्म बादर दोय एकेन्द्रिय, बिती चउरिन्द्रि दुविहा जी,
तिविहा पंचिंदा पज्जता, अपज्जता ते विविहा जी ।
संसारी असंसारी सिद्धा, निश्चय ने व्यवहार जी,
पन्नवणादिक आगम सुणतां, लहीये शुद्ध विचार जी. ।।3।।

भुवनपति व्यंतर ज्योतिषवर, वैमानिक सुर वृन्दा जी,
चोवीश जिनना यक्ष यक्षिणि, समकितदृष्टि सुरिंदा जी ।
भूजनगर महिमंडल सघळे, संघ सकल सुख करजो जी,
पंडित मानविजय इम जंपे, समकित गुण चित्त धरजो जी. ।।4।।

## 44. अध्यात्म की स्तुति

(राग : वीर जिनेसर अति अलवेसर)

उठी सवेळा सामायिक लीधुं, पण बारणुं नवि दीधुं जी,
काळो कूतरो घरमां पेठो, घी सगळुं तेणे पीधुं जी ।
उठो वहुअर आलस मूकी, अे घर आप संभाळो जी,
निज पतिने कहो वीरजिन पूजे, समकितने अजवाळो जी ।।1।।

बले बिलाडे झडप झडपावी, उत्रेड सर्वे फोडी जी,
चंचल छैया वार्यां न रहे, त्राक भांगी माळ तोडी जी ।
तेह विना रेंटियो नवि चाले, मौन भलुं केने कहीये जी,
ऋषभादिक चोवीश तीर्थंकर, जपीये तो सुख लहीये जी ।।2।।

घर वाशीदुं करोने वहुअर, टाळो ओजीयालुं जी,
चोरटो अेक करे छे हेरुं, ओरडे द्योने तालुं जी ।
लपके पाहुणा चार आव्या छे, ते ऊभा नवि राखो जी,
शिवपद सुख अनंता लहीअे, जो जिनवाणी चाखो जी ।।3।।

घरनो खूणो कोल खणे छे, वहु तुमे मनमां लावो जी,
पहोळे पलंगे प्रीतम पोढ्या, प्रेम धरीने जगावो जी ।
भावप्रभसूरि कहे नहि अे कथळो, अध्यातम उपयोगी जी,
सिद्धायिकादेवी सानिध्य करेवी, साधे ते शिवपद भोगी जी ।।4।।

# स्तवन विभाग

## 1. श्री ऋषभदेव स्वामी के स्तवन

माता मरुदेवीना नंद, देखी ताहरी मुरति
मारुं मन लोभाणुजी, मारुं दिल लोभाणुंजी
करुणा नागर करुणा सागर, काया कंचनवान,
धोरी लंछन पाउले कांइ, धनुष पांचसे मान माता. ।।1।।
त्रिगडे बेसी धर्म कहंता, सुणे पर्षदा बार,
जोजन गामिनी वाणी मीठी, वरसंती जलधार माता. ।।2।।
उर्वशी रुडी अप्सराने, रामा छे मन रंग,
पाये नेऊर रणझणें कांइ, करती नाटारंभ माता. ।।3।।
तुंही ब्रह्मा, तुं ही विधाता, तुं जग तारणहार,
तुज सरीखो नहि देव जगतमां, अरवडीआ आधार माता. ।।4।।
तुंही भ्राता तुं ही त्राता, तुं ही जगतनो देव,
सुर नर किन्नर वासुदेवा, करता तुज पद सेव माता. ।।5।।
श्री सिद्धाचल तीरथ केरो, राजा ऋषभजिणंद,
कीर्ति करे *माणेकमुनि* ताहरी, टालो भव-भय फंद माता. ।।6।।

## 2.

(राग : तारी मुरतिए मन मोह्युं रे...)

हुं तो पाम्यो प्रभुना पाय रे, आण न लोपुं रे,
हुं तो सांभळी तारा वेण रे कानमां रोपुं रे,
जन्ममरणना फेरा फरतां, में तो ध्याया न देवाधिदेवा,
कुगुरु कुशास्त्र तणा उपदेशे, लाधी नहीं प्रभु सेवा.. ।।1।।

कनक-कथीरनो भेद न जाण्यो, में तो काच मणि सम तोल्या,
विवेकतणी में वात न जाणी, विष अमृत करी घोळ्या... ।।2।।
समकित नो लवलेश न समज्यो, हुं तो मिथ्यामत मां खूंच्यो,
पाप तणे पंथे परवरियो, विषये करी विगुत्तो... ।।3।।
कोइक पूरण पुण्य संयोगे, आरज कुले अवतरियो,
आदीश्वर साहिब मुज मळियो, हुं तो तारक भवजल तरीयो... ।।4।।
आटला दिन में वात न जाणी तुजथी रहीयो अळगो,
उदयरत्न कहे आज थकी हुं तो, ताहरे पाये वळग्यो... ।।5।।

## 3.

(राग : तुं प्रभु मारो, हुं प्रभु...)

ऋषभ जिणंदा ऋषभ जिणंदा, तुं साहिब हुं छुं तुज बंदा,
तुज शुं प्रीति बनी मुज साची, मुज मन तुज गुणशुं रह्युं माची, ऋषभ..।।1।।
दीठा देव रुचे न अनेरा, तुज पाखलिअे चितडुं दिअे फेरा,
स्वामी शुं कामणडुं कीधुं, चितडुं अमारु चोरी लीधुं, ऋषभ.. ।।2।।
प्रेम बंधाणो ते तो जाणो, निरवहशो तो होशे वखाणो,
वाचक जस विनवे जिनराज, बांह्य ग्रह्यानी तुजने लाज, ऋषभ...।।3।।

## 4.

जगजीवन जगवालहो, मरुदेवीनो नंद लाल रे,
मुख दीठे सुख उपजे, दरिसण अतिहि आनंद लाल रे जग. ।1।
आंखडी अंबुज पांखडी, अष्टमी शशिसम भाल लाल रे,
वदन ते शारद चंदलो, वाणी अतिही रसाळ लाल रे जग. ।2।
लक्षण अंगे विराजता, अडहिय सहस उदार लाल रे,
रेखा कर चरणादिके, अभ्यंतर नहि पार लाल रे जग. ।3।
इंद्र चंद्र रवि गिरि तणा, गुण लइ घडीयुं अंग लाल रे,
भाग्य किहां थकी आवियुं, अचरिज एह उतंग लाल रे जग. ।4।

गुण सघला अंगी कर्यां, दुर कर्या सवि दोष लाल रे,
वाचक जश विजये थुण्यो, देजो सुखनो पोष लाल रे जग. ।5।

## 5.

जग चिंतामणि जगगुरु, जगत शरण आधार लाल रे,
अढ़ार कोडा कोडी सागरे, धरम चलावणहार लाल रे... जग. ।1।
अषाढ वदी चोथे प्रभु, स्वर्गथी लीये अवतार लाल रे,
चैत्र वदी आठम दिने, जनम्या जगदाधार लाल रे... जग. ।2।
पांचसे धनुषनी देहडी, सोवन वरण शरीर लाल रे,
चैत्र वदी आठमे लिये, संजम महावडवीर लाल रे... जग. ।3।
फागण वदी इग्यारसे, पाम्या पंचम नाण लाल रे,
महा वदि तेरसे शिववर्या, योग निरोध करी जाण लाल रे... जग. ।4।
चौराशी लाख पूर्वनुं, जिनवर उत्तम आय लाल रे,
'पद्मविजय' कहे प्रणमतां, वहेलुं शिवसुख थाय लाल रे... जग. ।5।

## 6.

बाळपणे आपण ससनेही, रमता नव नव वेशे,
आज तुमे पाम्या प्रभुताइ, अमे तो संसारनी वेशे,
हो प्रभुजी ! ओलंभडे मत खीजो ।।1।।
जो तुम ध्याता शिवसुख लहीअे, तो तुमने केइ ध्यावे.
पण भवस्थिति परिपाक थया विण, कोइ न मुगति जावे, हो प्रभु0 ।।2।।
सिद्धनिवास लहे भवसिद्धि, तेहमां श्यो पाड तुमारो,
तो उपगार तुमारो वहीअे, अभव्य सिद्धने तारो, हो प्रभुजी0 ।।3।।
नाण रयण पामी अेकांते, थइ बेठा मेवाशी,
ते मांहेलो अेक अंश जो आपो, ते वाते शाबाशी, हो प्रभुजी0।।4।।

अक्षयपद देतां भविजनने, संकीर्णता नवि थाय,
शिवपद देवा जो समरथ छो, तो जश लेतां शुं जाय, हो प्रभुजी0।।5।।
सेवागुण रंजोयो भविजनने, जो तुमे करो वडभागी,
तो तुम स्वामी केम कहावो, निरमम ने निरागी, हो प्रभुजी0।।6।।
नाभिनंदन जगवंदन प्यारो, जगगुरु जग हितकारी,
रूपविबुधनो मोहन पभणे, वृषभ लंछन बलिहारी, हो प्रभुजी0।।7।।

## 7.

ऋषभ जिनराज मुज आज दिन अति भलो, गुण नीलो जेणे तुज नयन दीठो,
दु:ख टल्यां सुख मळ्या स्वामी तुज निरखता, सुकृत संचय हुओ पाप नीठो ऋषभ 1
कल्पशाखी फल्यो कामघट मुज मल्यो, आंगणे अमीयनो मेह वूठो,
मुज महीराण महीभाण तुज दर्शने, क्षय गयो कुमति अंधार जूठो ऋषभ 2
कवण नर कनक मणि छोडी तृण संग्रहे ? कवण कुंजर तजी करह लेवे ?
कवण बेसे तजी कल्पतरु बाउले ? तुज तजी अवर सुर कोण सेवे ? ऋषभ 3
अेक मुज टेक सुविवेक साहिब सदा, तुज विना देव दूजो न इहुं,
तुज वचन राग सुख सागरे झीलतो, कर्मभर भ्रम थकी हुं न बीहुं ऋषभ 4
कोडी छे दास विभु ताहरे भलभला, माहरे देव तुं अेक प्यारो,
पतित पावन समो जगत उद्धारक, महेर करी मोहे भवजलधि तारो ऋषभ 5
मुक्तिथी अधिक तुज भक्ति मुज मन वसी, जेहशुं सबळ प्रतिबंध लागो,
चमक पाषाण जिम लोहने खेंचशे, मुक्तिने सहज तुज भक्ति रागो ऋषभ 6
धन्य ते काय जेणे पाय तुज प्रणमिये, तुज थुणे धन्य धन्य जीहा,
धन्य ते हृदय जेणे तुज सदा समरतां, धन्य ! ते रात ने धन्य दीहा ऋषभ 7
गुण अनंता सदा तुज खजाने भर्या, अेक गुण देत मुज शुं विमासो,
रयण अेक देत शी हाण रयणायरे ? लोकनी आपदा जेणे नासो ऋषभ 8
गंगसम रंग तुज कीर्ति कल्लोलिनी, रवि थकी अधिक तप तेज ताजो,
श्रीनयविजय विबुध सेवक हुं आपनो, *जस* कहे अब मोहे बहु निवाजो ऋषभ 9

## 8.

(राग : आई वसन्त बहार रे.../इन्हीं लोगोने ले लीना...)

ऋषभ जिणंद दयाल रे, मोहे लागी लगनवा..ऋषभ० !
लागी लगनवा छोडी न छुटे, जब लग घट में हो प्राण रे... मोहे।।1।।
विमलाचल मंडण दु:खखंडण, मंडण धर्म विशाल रे... मोहे।।2।।
विषधर मोर चोर कामीजन, दर्शन कर निहाल रे... मोहे।।3।।
हुं अनाथ तुं त्रिभुवन नाथ, कर मोरी संभाल रे..... मोहे।।4।।
'आतम' आनंद कंद के दाता, त्राता परम कृपाल रे... मोहे।।5।।

## 9.

(राग : पहेले भवे एक गामनो.../ओ साथी रे तेरे बिना...)

ज्ञानरयण रयणायरूं रे, स्वामी श्री ऋषभ जिणंद,
उपगारी अरिहा प्रभु रे, लोक लोकोत्तरानंद रे,
भविया ! भावे भजो भगवंत, महिमा अतुल अनंत रे... भविया०।।1।।
तिग तिग आरग सागरूं रे, कोडा कोडी अढार,
युगला धर्म निवारीयो रे, धर्म प्रवर्तनहार रे... भविया०।।2।।
ज्ञानातिशये भव्यना रे, संशय छेदनहार,
देव नरा तिरि समजीया रे, वचनातिशय उदार रे... भविया०।।3।।
चार घने मघवा स्तवे रे, पूजातिशय महंत,
पंच घने योजन टले रे, कष्ट ए तुर्य प्रसंत रे... भविया०।।4।।
योग क्षेमंकर जिनवरूं रे, उपशम गंगा नीर,
प्रीति भक्तिपणे करी रे, नित्य नमे 'शुभवीर' रे... भविया०।।5।।

## 10.

(राग : आजनो चांदलियो.../तुं प्रभु मारो.../मैली चादर ओढ के...)

ऋषभ जिणंदा ऋषभ जिणंदा, तुम दरिसन हुए परमानंदा,

अहनिश ध्याउं तुम दीदारा, महेर करीने करजो प्यारा... ऋ० ।।1।।
आपणने पूंठे जे वलगा, किम सरे तेहने करता अलगा,
अलगा कीधा पण रहे वलगा, मोरपींछ परे न हुए उभगा... ऋ० ।।2।।
तुम पण अलगे थये किम सरशे, भक्ति भली आकर्षी लेशे,
गगने ऊडे दूरे पडाई, दोरी बले हाथे रहे आई... ऋ० ।।3।।
मुज मनडुं छे चपल स्वभावे, तोये अंतर्मुहूर्त प्रस्तावे,
तुं तो समय समय बदलाये, इम किम प्रीति निहावो थाये... ऋ० ।।4।।
ते माटे तुं साहिब माहरो, हुं छुं सेवक भवोभव ताहरो,
एह संबंधमां म होजो खामी, 'वाचक मान' कहे शिरनामी... ऋ० ।।5।।

## 11.

(राग : आँख मारी उघडे त्यां.../आदि जिणंद बतावो...)

आदि जिणंद...आदि जिणंद, बचावो भरतराय !
मरुदेवी माता पूछे क्यां छे मारो लाल...मरुदेवी माता पूछे०...!
तुं तो राजमहेलमां मोज करे छे, मारो ऋषभ तो वनमां फरे छे,
कोई लावो...कोई लावो एना समाचार... मरूदेवी० ।।1।।
थर थर कंपावती ठंडी पडे छे, घरमां रहेतां पण शरदी चढे छे,
आवी ठंडी केम सहेशे, मारो कोमल बाल... मरूदेवी० ।।2।।
गरमीना तापथी जंगलो बले छे, झाडोने झाखरा तेमां बले छे,
कोण लेशे...कोण लेशे मुज नंद संभाल... मरूदेवी० ।।3।।
वरसाना वादलो गगने चढे छे, वाने वंटोलथी पहाडो पडे छे,
मेघ तूटे विजली खडके आकाशे चमकार... मरूदेवी० ।।4।।
रडी रडीने तो आंसु सुकाणा, आंखोना तेज तो आंखमां समाणा,
पल-पल जाय हवे वरस समान... मरूदेवी० ।।5।।
त्रिगडानी रचना देवो करे छे, बार पर्षदामां धूम मचे छे,
भरत कहे चालो माता आव्या प्रभु द्वार... मरूदेवी० ।।6।।

गजवर अंबाडीये माताजी आवे, ना रे ऋषभ मा कहीने बोलावे,
माता जाणे में धर्यो फोगट पुत्र राग... मरूदेवी० ।।7।।
पुत्र वियोगथी आंसु सुकाया, मोह मायामां दु:ख ऊभराया,
कोण माता कोण पिता स्वारथिओ संसार... मरूदेवी० ।।8।।
हीरविजय गुरु एणी परे बोले, नहि कोई आवे ऋषभनी तोले,
मरुदेवी माता पोते पाम्यां पंचमज्ञान मरूदेवी० ।।9।।

## 12.

बोल बोल आदेश्वर दादा, कांई थारी मरजीरे, मांसु मुंढे बोल ।।टैर।।
माता मरुदेवी वाट जोवती, इतरे बधाई आई रे !
आज रीसभजी उतर्या बागमें, सुण हरखाई रे, मांसु० ।।1।।
नाय धोयने गज असवारी, करी मरूदेवी माता रे !
जाय बागमे नंदन नीरखी, पाई शाता रे, मांसु० ।।2।।
राज छोडने नीकल्यों रीसभो, आ लीला अद्‌भुती रे !
चमर छत्रने और सिंहासन, मोहनी मुरती रे, मांसु० ।।3।।
दीन भर बैठी बांट जोवंती, कदी मारो रीसभो आवे रे !
कहती भरतने आदिनाथरी, खबरां लावेरे,मांसु० ।।4।।
किसी देश में गयो वालेसर, तुम बीन विनीता सुनी रे,
बात कहो दिल खोल लालजी, क्यों बन्या मुनी रे, मांसु० ।।5।।
खेर हुइ सो हो गयी वाला, बात भली नहीं कीनी रे !
गया पछे कागद नहीं दीनो, मोरी खबरां न लीधी रे, मांसु० ।।6।।
रह्या मजे में है सुख शाता, खुब कीया दील छाया रे !
अब तो बोल आदेश्वर मारी, कलपे काया रे,मांसु० ।।7।।
ओलंभा में देउं कहां लग, पाछो कीयु नहीं बोले रे !
दु:ख जननीनो देख आदेश्वर, हीयडे तोले रे, मांसु० ।।8।।

अनित्य भावना भाई रे माता, निज आतम ने तारी रे !
केवल पामी मोक्ष सीधाया, ज्यांने वंदना हमारी रे, मांसु0 ।।9।।
मुक्ति का दरवाजा खोल्या, मरुदेवी माता रे !
काल असंख्य रह्या उघाडा, जंबु जड गया ताला रे, मांसु0 ।।10।।
साल बोहतर तीरथ ओसियां, घेवर प्रभुगुण गाया रे !
मुरती मनोहर प्रथम जिनंदकी, प्रणमु पायारे,मांसु0 ।।11।।

## 13.

दादा आदेश्वरजी, दादा आदेश्वरजी, दूरथी आव्यो दादा दरिशन द्यो,
कोई आवे हाथी घोडे, कोई आवे चढे पलाणे, कोई आवे पगपाळे,
दादाने दरबार, हां हां दादाने दरबार, दादा आदेश्वरजी० ।।1।।
शेठ आवे हाथी घोडे, राजा आवे चढे पलाणे, हुं आवुं पगपाळे,
दादाने दरबार, हां हां दादाने दरबार, दादा आदेश्वरजी० ।।2।।
कोई मूके सोना रूपा, कोई मूके महोर, कोई मूके चपटी चोखा,
दादाने दरबार, हां हां दादाने दरबार, दादा आदेश्वरजी० ।।3।।
शेठ मूके सोना रूपा, राजा मूके महोर, हुं तो मूकुं चपटी चोखा,
दादाने दरबार, हां हां दादाने दरबार, दादा आदेश्वरजी० ।।4।।
कोई मांगे कंचन काया, कोई मांगे आंख, कोई मांगे चरणोनी सेवा,
दादाने दरबार, हां हां दादाने दरबार, दादा आदेश्वरजी० ।।5।।
पांगळो मांगे कंचनकाया, आंधळो मांगे आंख, हुं मांगु चरणोनी सेवा,
दादाने दरबार, हां हां दादाने दरबार, दादा आदेश्वरजी० ।।6।।
हीरविजय गुरु हिरलोने, वीरविजय गुण गाय, शत्रुंजयना दरिशन करतां,
आनंद अपार, हां हां आनंद अपार, दादा आदेश्वरजी० ।।7।।

## 14. श्री आदीश्वर प्रभु का स्तवन

प्रथम जिनेश्वर प्रणमीअे, जास सुगंधी रे काय,
कल्पवृक्ष परे तास इन्द्राणी नयन जे भृंग परे लपटाय... ।।1।।

रोग उरग तुज नवि नडे, अमृत जेह आस्वाद,
तेहथी प्रतिहत तेह मानुं कोई नवि करे, जगमां तुम शुं रे वाद... ।।2।।
वगर धोई तुज निरमळी, काया कंचनवान,
नहीं प्रस्वेद लगार तारे तुं तेहने, जे धरे ताहरुं ध्यान... ।।3।।
राग गयो तुज मन थकी, तेहमां चित्र न कोय,
रुधिर आमिषथी राग गयो तुज जन्मथी, दूध सहोदर होय... ।।4।।
श्वासोश्वास कमळ समो, तुज लोकोत्तर वात,
देखे न आहार निहार चर्मचक्षु धणी, अेहवा तुज अवदात... ।।5।।
चार अतिशय मूळथी, ओगणीश देवना कीध,
कर्म खप्याथी अग्यार, चोत्रीस अेम अतिशया, समवायांगे प्रसिद्ध..।।6।।
जिन उत्तम गुण गावतां, गुण आवे निज अंग,
'पद्मविजय' कहे अेह समय प्रभु पाळजो, जेम थाउं अक्षय अभंग..।।7।।

## (2) अजितनाथ

### (1) स्तवन

प्रीतलडी बंधाणी रे अजित जीणंदशुं, प्रभुं पाखे क्षण एक मने न सुहाय जो,
ध्याननी ताळी रे लागी नेहशुं, जलदघटा जिम शिवसुतवाहन दायजो,
प्रीतलडी0 ।।1।।
नेह घेलुं मन मारु रे, प्रभु अलजे रहे, तन मन धन ए कारणथी प्रभु मुज जो,
मारे तो आधार रे साहिब रावळो, अंतर्गतनी प्रभु आगल कहुं गुझ जो,
प्रीतलडी0 ।।2।।
साहेब ते साचो रे जगमां जाणीए, सेवकनां जे सहेजे सुधारे काज जो,
एहवे रे आचरणे केम करी रहुं, बिरुद तमारुँ तरण तारण जहाज जो,
प्रीतलडी0 ।।3।।
तारकता तुज मांहे रे श्रवणे सांभळी, ते भणी हुं आव्यो छुं दीन दयाल जो,
तुज करुणानी लहेरे रे मुज कारज सरे, शुं घणुं कहीए, जाण आगळ कृपाळ जो,
प्रीतलडी0 ।।4।।

करुणादृष्टि कीधी रे सेवक ऊपरे, भव भय भावठ भांगी भक्ति प्रसंग जो,
मनवांछित फलीया रे तुज आलंबने, कर जोडीने मोहन कहे मनरंग जो,
प्रीतलडी० ।।5।।

## (2)

(राग: आशावरी-''मारुं मन मोह्युं रे श्री सिद्धाचले रे...'' ए देशी)

पंथडो निहालुं रे बीजा जिनतणो रे, अजित अजित गुणधाम,
जे तें जित्या रे तेणे हुं जितीयो रे, पुरुष किश्युं मुज नाम..पंथडो० ।।1।।
चकम नयण करी मारग जोवतां रे, भूल्यो सयल संसार,
जेणे नयण करी मारग जोईए रे, नयण ते दिव्य विचार..पंथडो० ।।2।।
पुरुष परंपर अनुभव जोवतां रे, अंधो अंध पुलाय,
वस्तु विचारे रे जो आगमे करी रे, चरण धरण नहीं ठाय..पंथडो० ।।3।।
तर्क विचारे रे वाद परंपरा रे, पार न पहोंचे कोय,
अभिमत वस्तु वस्तुगते कहे रे, ते विरला जग जोय..पंथडो० ।।4।।
वस्तु विचारे रे दिव्य नयन तणो रे, विरह पड्यो निरधार,
तरतम जोगे रे तरतम वासना रे, वासित बोध आधार..पंथडो० ।।5।।
काललब्धि लही पंथ निहालशुं रे, ए आशा अवलंब,
ए जन जीवे रे जिनजी जाणजो रे, 'आनंदघन' मत अंब..पंथडो० ।।6।।

## (3)

(राग: परमातम पूरणकला...)

अजित जिणंदशुं प्रीतडी, मुज न गमे हो बीजानो संग के,
मालती फूले मोहीयो, किमन बेसे हो बावलतरु भृंग के..अजित० ।।1।।
गंगाजलमां जे रम्या, किम छिल्लर हो रति पामे मराल के,
सरोवर जलधर जल विना, नवि चाहे हो जग चातक बाल के.अजित० ।।2।।
कोकिल कल कूजित करे, पामी मंजरी हो पंजरी सहकार के,
आछां तरुवर नवि गमे, गिरूआशुं हो होये गुणनो प्यार के..अजित० ।।3।।

कमलिनी दिनकर कर ग्रहे, वली कुमुदिनी हो धरे चंदशुं प्रीत के,
गौरी गिरीश गिरिधर विना, नवी चाहे हो कमला निज चित्त के.अजित० ।।4।।
तिम प्रभुशुं मुज मन रम्युं, बीजाशुं हो नवि आवे दाय के,
श्री नयविजय विबुध तणो, 'वाचक यश' हो नित नित गुण गाय के.अजित० ।।5।।

## श्री संभवनाथ भगवान-3

संभव जिनवर विनति, अवधारो गुणज्ञाता रे,
खामी नहीं मुज खिजमते, कदीय होशी फळदाता रे.. संभव०..।।1।।
कर जोडी ऊभो रहुं, रात दिवस तुम ध्याने रे,
जो मनमां आणो नहि, तो शुं कहीअे छाने रे.. संभव०..।।2।।
खोट खजाने को नहीं, दीजीअे वांछित दानो रे,
करुणा नजर प्रभुजी तणी, वाधे सेवक वानो रे.. संभव०..।।3।।
काळ लब्धि मुज मति गणो, भाव लब्धि तुम हाथे रे,
लडथडतुं पण गजबच्चुं, गाजे गयवर साथे रे.. संभव०..।।4।।
देशो तो तुम ही भला, बीजा तो नवि याचुं रे,
'वाचक यश' कहे सांईशुं, फळशे अे मुज साचुं रे.. संभव०..।।5।।

## अभिनंदन स्वामी-4

अभिनंदन स्वामी हमारा, प्रभु भव दुःख भंजणहारा,
ये दुनिया दुःख की धारा, प्रभु इनसे करो रे निस्तारा अभि. ।।1।।
हुं कुमति कुटिल भरमायो, दुर्मति करी दुःख पायो,
अब शरण लीयो हे थारो, मुजे भवजल पार उतारो अभि. ।।2।।
प्रभु सीख हैये नवि धारी, दुर्गतिमां दुःख लीयो भारी,
इन कर्मों की गति न्यारी, करे बेर बेर खुवारी अभि. ।।3।।
तुमे करुणावंत कहावो, जग तारक बिरुद धरावो,
मेरी अरजीनो अेक दावो, इण दुःखसे क्युं न छोड़ावे अभि. ।।4।।

में विरथा जनम गमायो, नहिं तन धन स्नेह निवार्यो,
अब पारस परसंग पामी, नहि *वीरविजयकुं* खामी अभि. ।।5।।

## श्री सुमतिनाथ भगवान-5

सुमतिनाथ गुण शुं मिलीजी, वाधे मुज मन प्रीति,
तेल बिंदु जिम विस्तरेजी, जलमांहे भली रीति,
सोभागी जिनशुं लाग्यो अविहड रंग... ।।1।।
सज्जनशुं जे प्रीतडीजी, छानी ते न रखाय,
परिमल कस्तुरी तणोजी, महीमांहे महकाय...सोभागी... ।।2।।
आंगळीअे नवि मेरू ढंकाये, छाबडीअे रवि तेज,
अंजलीमां जेम गंग न माये, मुज मन तिम प्रभु हेज...सोभागी... ।।3।।
हुओ छीपे नहीं अधर अरूण जिम, खातां पान सुरंग,
पीवत भरभर प्रभु गुण प्याला, तिम मुज प्रेम अभंग...सोभागी.।।4।।
ढांकी इक्षु पराळशुंजी, न रहे लही विस्तार,
*'वाचक यश'* कहे प्रभु तणोजी, तिम मुज प्रेम प्रकार...सोभागी... ।।5।।

## पद्मप्रभ-6

पद्मप्रभ प्राण से प्यारा, छोडावो कर्मकी धारा,
करम फंद तोडवा धोरी, प्रभुजी से अर्ज हे मोरी पद्म. ।।1।।
लघुवय एक थें जीया, मुक्ति में वास तुम कीया,
न जानी पीर तें मोरी, प्रभु अब खेंच ले दोरी पद्म. ।।2।।
विषयसुख मानी मों मन में, गयो सब काल गफलत में,
नरक दु:ख वेदना भारी, निकलवा न रही बारी पद्म. ।।3।।
परवश दीनता कीनी, पाप की पोठ शिर लीनी,
भक्ति नहीं जानी तुम केरी, रह्यो निशदिन दु:ख घेरी,पद्म. ।।4।।
इसविध विनति तोरी, करुं में दोय कर जोडी,
आतम आनंद मुज दीजो, वीरनुं काज सब कीजो पद्म. ।।5।।

## 2.

श्री पद्मप्रभना नामने, हुं जाउं बलिहार, भविजन,
नाम जपंतां दीहा गमुं, भव जलतारण हार... ।।1।।
नाम सुणतां मन उल्हसे, लोचन विकसित होय,
रोमांचित हुयें देहडी, जाणे मिलियो सोय... ।।2।।
पंचमकाळे पामवो, दुर्लभ प्रभु दीदार,
तो पण तेहना नामनो, छे मोटो आधार... ।।3।।
नाम ग्रह्यो आवी मिले, मन भीतर भगवान,
मंत्र बळे जिम देवता, वाहलो कीधे आहवान... ।।4।।
ध्यान पदस्थ प्रभावथी, चाख्यो अनुभव स्वाद,
मान विजय वाचक कहे, मूको बीजो वाद... ।।5।।

## सुपार्श्वनाथ-7

क्युं न हो सुनाइ स्वामी, ऐसा गुन्हा क्या किया ?
ओरोकी सुनाइ जावे, मेरी बारी नहीं आवे,
तुम बिन कोन मेरा, मुजे क्युं भूला दीया. क्युं0।।1।।
भक्त जनोंको तार दिया, तारने का काम किया,
बिन भक्तिवाले मोंपे, पक्षपात क्युं लिया ? क्युं0।।2।।
राव रंक एक जानो, मेरा तेरा नाहीं मानो,
तरन तारन अैसा, बिरूद क्युं धार लिया ? क्युं0।।3।।
गुन्हा मेरा बक्ष दीजे, मोंपे अति रहेम कीजे,
पक्का ही भरोंसा तेरा, दिलो में जमा लिया. क्युं0।।4।।
तुंही अेक अंतरजामी, सुनो श्री सुपार्श्वस्वामी,
अब तो आशा पूरो मेरी, कहेना था सो तो कह दिया. क्युं0।।5।।
शहेर अंबाला भेटी, प्रभुजी का मुख देखी,
मनुष्य जनम का ल्हावा, लेना सो तो ले लिया. क्युं0।।6।।

उन्निसो छासठ छबीला, दीपमाल दिन रंगीला,
कहे वीरविजय प्रभु, भक्ति में जमा दिया. क्युं0।।7।।

## चंद्रप्रभ-8

मुज घट आवजो रे नाथ, करुणा कटाक्षे जोईने,
दासने करजो सनाथ... मुज०।।1।।
चंद्रप्रभ जिनराजीया, तुज वास विषमो दूर,
मळवा मन अलजो घणो, किम आविये हजूर... मुज०।।2।।
विरह वेदना आकरी, कही पाठवुं कुण साथ,
पंथी तो आवे नहि, ते मारगे जगनाथ... मुज०।।3।।
तुं तो नीरागी छे प्रभु, पण वालहो मुज जोर,
अेक पखी अे प्रीतडी, जिम चंद्रमाने चकोर... मुज०।।4।।
तुज साथे जे प्रीतडी, अति विषम खांडाधार,
पण तेहना आदर थकी, तस फल तणो नहि पार... मुज०।।5।।
अमे भक्तियोगे आणशुं, मनमंदिरे तुम आज,
'वाचक विमल' ना रामशुं, घणुं रीझशो महाराज... मुज०।।6।।

## सुविधिनाथ-9

ताहरी अजबशी योगनी मुद्रा रे, लागे मुने मीठी रे,
अे तो टाले मोहनी निद्रा रे, प्रत्यक्ष दीठी रे.
लोकोत्तरथी जोगनी मुद्रा, व्हाला म्हारा निरूपम आसन सोहे रे,
सरस रचित शुक्लध्याननी धारे, सुरनरना मन मोहे रे. लागे0 ।।1।।
त्रिगडे रतन सिंहासन बेसी, वा0 चिहुं दिशे चामर ढलावे,
अरिहंत पद प्रभुताना भोगी, तो पण जोगी कहावे रे. लागे0।।2।।
अमृत झरणी मीठी तुज वाणी, वा0 जेम आषाढो गाजे,
कान मारग थइ हियडे पेसी, संदेह मनना भांजे रे. लागे0 ।।3।।

कोडिगमे उभा दरबारे, वा0 जय मंगल सुर बोले,
त्रण भुवननी रिद्धि तुज आगे, दीसे इम तृण तोले रे. लागे0 ।।4।।
भेद लहुं नहि जोग जुगतिनो, वा0 सुविधि जिणंद बतावो,
प्रेमशुं कान्ति कहे करी करुणा, मुज मनमंदिर आवो रे. लागे0।।5।।

## शीतलनाथ-10

शीतल जिन ! मोहे प्यारा, साहिब शीतल जिन ! मोहे प्यारा
भुवन विरोचन पंकज लोचन, जिउ के जिउ हमारा ।।1।।

ज्योतिशुं ज्योत मिलत जब ध्यावे, होवत नहि तब न्यारा,
बांधी मुठी खुले भव माया, मिटे महा भ्रम भारा, साहिब0 ।।2।।

तुम न्यारे तब सबहि न्यार, अंतर कुटुंब उदारा,
तुमहि नजीक नजीक है सब हि, ऋद्धि अनंत अपारा, साहिब0 ।।3।।

विषय लगन की अग्नि बुझावत, तुम गुण अनुभव धारा,
भइ मगनता तुम गुण रसकी, कुण कचंन ? कुण दारा ?, साहिब0।।4।।

शीतलता गुण होर करत तुम, चंदन काहु बिचारा !
नामही तुम पाप हरत है, वांकु घसत घसारा, साहिब0 ।।5।।

करहु कष्ट जन बहुत हमारे, नाम तिहारो आधारा,
जस कहे जनम मरण भय भागो, तुम नामे भव पारा, साहिब0 ।।6।।

## श्री श्रेयांसनाथ-11

श्री श्रेयांस जिन अंतरजामी, आतमरामी नामी रे,
अध्यातम मत पूरण पामी, सहज मुक्ति गति गामी रे. श्री. ।।1।।

सयल संसारी इन्द्रियरामी, मुनिगण आतमरामी रे,
मुख्यपणे जे आतमरामी, ते केवळ नि:कामी रे. श्री. ।।2।।

निज स्वरूप जे किरिया साधे, तेह अध्यातम लहिअे रे,
जे किरिया करी चउगति साधे, ते न अध्यातम कहिये रे. श्री. ।।3।।
नाम अध्यातम ठवण अध्यातम, द्रव्य अध्यातम छंडो रे,
भाव अध्यातम निजगुण साधे, तो तेहशुं रढ मंडो रे. श्री. ।।4।।
शब्द अध्यातम अर्थ सुणीने, निर्विकल्प आदरजो रे,
शब्द अध्यातम भजना जाणी, हान ग्रहण मति धरजो रे. श्री. ।।5।।
अध्यातम जे वस्तु विचारी, बीजा जाण लबासी रे,
वस्तु गते जे वस्तु प्रकाशे, 'आनंदघन' मतवारी रे. श्री. ।।6।।

## वासुपूज्य स्वामी-12

स्वामी तुमे कांइ कामण कीधुं, चित्तडुं अमारुं चोरी लीधुं,
साहेबा वासुपूज्य जिणंदा, मोहना वासुपूज्य जिणंदा,
अमे पण तुमशुं कामण करशुं भक्ति ग्रही मन घरमां धरशुं साहिब0 ।।1।।
मन घरमां धरीया घरशोभा, देखत नित्य रहेशो थिर थोभा,
मन वैकुंठ अकुंठीत भक्ते, योगी भाखे अनुभव युक्ते, साहिब0 ।।2।।
क्लेशे वासित मन संसार, क्लेश रहित मन ते भवपार,
जो विशुद्ध मन घर तुमे आव्या, तो अमे नव निधि रिद्धि सिद्धि पाम्या सा0।।3।।
सात राज अलगा जइ बेठा, पण भगते अम मनमां पेठा,
अलगाने वलग्या जे रहेवुं, ते भाणा खडखड दु:ख सहेवुं, साहिब0 ।।4।।
ध्याता ध्येय ध्यान गुण एके, भेद छेद करशुं हवे टेके,
खीर नीर परे तुमशुं मिलशुं, वाचक *यश* कहे हेजे हलशुं, साहिब0 ।।5।।

## 1. विमलनाथ-13

दु:ख दोहग दूरे टल्यां रे, सुख संपदशुं भेट,
धींग धणी माथे कीयो रे, कुण गंजे नर खेट.
विमल जिन दीठां लोयण आज, म्हारां सिध्यां वांछित काज, वि0।।1।।

चरण कमल कमला वसे रे, निर्मळ थिरपद देख,
समल अथिर पद परिहरि रे, पंकज पामर पेख वि0 ।।2।।
मुज मन तुज पद पंकजे रे, लीनो गुण मकरंद,
रंक गणे मंदिर धरा रे, इंद्र चंद्र नागेन्द्र वि0 ।।3।।
साहिब समरथ तुं धणी रे, पाम्यो परम उदार,
मन विसरामी वाल हो रे, मारा आतमचो आधार वि0।।4।।
दरिसण दीठे जिन तणुं रे, संशय न रहे वेध,
दिनकर करभर पसरतां रे, अंधकार प्रतिषेध वि0 ।।5।।
अमीय भरी मूरति रची रे, उपमा न घटे कोय,
शांतसुधारस झीलती रे, निरखत तृप्ति न होय वि0 ।।6।।
अेक अरज सेवक तणी रे, अवधारो जिनदेव,
कृपा करी मुज दीजिये रे, आनंदघन पद सेव. वि0 ।।7।।

## 2. विमलनाथ

सेवो भवियां विमल जिणेसर, दुल्लहा सज्जन संगाजी,
एहवा प्रभुनुं दरिसन लेवुं, ते आळसमांहे गंगाजी सेवो0 ।।1।।
अवसर पामी आळस करशे ते मुरखमां पहेलोजी,
भुख्याने जेम घेबर देतां, हाथ न मांडे घेलोजी सेवो0 ।।2।।
भव अनंतमां दर्शन दीठुं, प्रभु एहवा देखाडोजी,
विकट ग्रंथि जे पोळपोलियो, कर्म विवर उघाडोजी सेवो0 ।।3।।
तत्व प्रीतीकर पाणी पाए, विमला लोके आंजीजी,
लोयण गुरु परमान्न दिए तव, भ्रम नांखे सवि भांजिजी सेवो0 ।।4।।
भ्रम भांग्यो तव प्रभुशुं प्रेमे, वात करूं मन खोलीजी,
सरलतणे जे हइडे आवे, तेह जणावे बोलीजी सेवो0 ।।5।।
श्री नयविजय विबुध पय सेवक, वाचक 'यश' कहे साचुंजी,
कोडि कपट जो कोइ दिखावे, तोही प्रभु विण नवि राचुंजी, सेवो0।।6।।

## 3. विमलनाथ

हो प्रभुजी ! मुज अवगुण मत देखो ।
रागदशाथी तुं रहे न्यारो, हुं मन रागे वाळुं,
द्वेष रहित तुं समता भीनो, द्वेष मारग हुं चालुं. हो प्रभुजी० ।।1।।
मोह लेश फरस्यो नहीं तुंही, मोह लगन मुज प्यारी,
तुं अकलंकी कलंकित हुं तो, अे पण रहेणी न्यारी. हो प्रभुजी० ।।2।।
तुं ही निराशी भाव पद राजे, हुं आशा संग विलुद्धो,
तुं निश्चल हुं चल तुं शुद्धो, हुं आचरणे ऊंधो. हो प्रभुजी० ।।3।।
तुज स्वभावथी अवळा मारा, चरित्र सकळ जगे जाण्यां,
अेहवा अवगुण मुज अति भारी, न घटे तुज मुख आण्या. हो प्रभुजी० ।।4।।
प्रेम नवल जो होई सवाई, विमलनाथ जिन आगे,
''कांति'' कहे भवरान ऊतरतां, तो वेळा नवि लागे. हो प्रभुजी० ।।5।।

## श्री अनंतनाथ भगवान-14

धार तलवारनी सोहिली दोहिली, चउदमा जिनतणी चरणसेवा,
धार पर नाचता देख बाजीगरा,
सेवना धार पर रहे न देवा...धार... ।।1।।
अेक कहे सेवीअे विविध किरिया करी, फळ अनेकांत लोचन न देख,
फळ अनेकांत किरिया करी बापडा,
रडवडे चार गतिमांहि लेखे...धार... ।।2।।
गच्छना भेद बहु नयन निहाळतां, तत्त्वनी वात करतां न लाजे,
उदरभरणादि निज काज करतां थकां,
मोह नडिया कलिकाल राजे...धार... ।।3।।
वचन निरपेक्ष व्यवहार जूठो कह्यो, वचन सापेक्ष व्यवहार साचो,
वचन निरपेक्ष व्यवहार संसार फळ,
सांभळी आदरी कांई रांचो...धार... ।।4।।

देवगुरू धर्मनी शुद्धि कहो किम रहे ? किम रहे शुद्ध श्रद्धान आणो,
शुद्ध श्रद्धान विण सर्व किरिया कहीं,
छार पर लींपणुं तेह जाणो...धार... ।।5।।
पाप नहीं कोई उत्सूत्र भाषण जिश्युं, धर्म नहीं कोई जग सूत्र सरिखो,
सूत्र अनुसार जे भविक किरिया करे,
तेहनुं शुद्ध चारित्र्य परिखो...धार... ।।6।।
अेह उपदेशनो सार संक्षेपथी, जे नरा चित्तमां नित्य ध्यावे,
ते नरा दिव्य बहु काळ सुख अनुभवी,
नियत *'आनंदघन'* राज पावे...धार... ।।7।।

## श्री धर्मनाथ भगवान-15

(स्तवन)

थाशुं प्रेम बन्यो छे राज, निर्वहशो तो लेखे,
में रागी थें छो निरागी, अणजुगते होय हांसी,
अेक पखो जे नेह निर्वहवो, तेहमां शी शाबाशी...थाशुं... 1
निरागी सेवे कांइ होवे, अेम मनमां नवि आणुं,
फळे अचेतन पण जिम सुरमणि, तिम तुम भक्ति प्रमाणुं..थाशुं...2
चंदन शीतलता उपजावे, अग्नि ते शीत मिटावे,
सेवकानां तिम दुःख गमावे, प्रभुगुण प्रेम स्वभावे...थाशुं... 3
व्यसन उदय जे जलधि अनुहरे, शशीने तह संबंधे,
अणसंबंधे कुमुद अनुहरे, शुद्ध स्वभाव प्रबंधे...थाशुं... 4
देव अनेरा तुमसे छोटा, थें जगमें अधिकेरा,
*'यश'* कहे धर्म जिनेश्वर थाशुं, दिल मान्या है मेरा...थाशुं... 5

## श्री शांतिनाथ-16

सुण दयानिधि ! तुज पद पंकज मुज मन मधुकर लीनो,
तुं तो रात दिवस रहे सुख भीनो सुण0

प्रभु अचिरामाता नो जायो, विश्वसेन उत्तम कुल आयो,
एक भवमां दोय पदवी पायो सुण0 ।।1।।
प्रभु चक्री जिनपद नो भोगी, शांति नाम थकी थाय निरोगी,
तुज सम अवर नहीं दूजो योगी सुण0 ।।2।।
षट् खंड तणां प्रभु तुं त्यागी, निज आतम ऋद्धी तणो रागी,
तुज सम अवर नहीं वैरागी सुण0 ।।3।।
वडवीर थया संजम धारी, लहे केवल दुग कमलासारी,
तुज सम अवर नहीं उपकारी सुण0 ।।4।।
प्रभु मेघरथ भव गुण खाणी, पारेवा उपर करुणा आणी,
निज शरणे राख्यो सुख खाणी सुण0 ।।5।।
प्रभु कर्म कटक भव भय टाली, निज आतम गुणने अजुवाली,
प्रभु पाम्या शिव वधु लटकाली सुण0 ।।6।।
साहेब एक मुजरो मानीजे, निज सेवक उत्तम पद दीजे,
रुप कीर्ति करे तुज जीवविजे सुण0 ।।7।।

## 2.

हम मगन भये प्रभु ध्यान में
बिसर गयी दुविधा तन मन की, अचिरासुत गुणगान में हम...
हरिहर ब्रह्म पुरंदर की ऋद्धि, आवत नहिं कोइ मान में,
चिदानंद की मौज मची है, समतारस के पान में हम...।।1।।
इतने दिन तुम नाहि पीछान्यो, मेरो जन्म गयो अजान में,
अब तो अधिकारी होइ बैठे, प्रभुगुण अखय खजान में हम...।।2।।
गई दीनता सबहि हमारी, प्रभु तुज समकित दान में,
प्रभुगुण अनुभव रस के आगे, आवत नहि कोई मान में हम...।।3।।
जिनही पाया तिनही छिपाया, न कहे कोई के कान में,
ताली लागी जब अनुभवकी, तब समझे कोई सान में हम...।।4।।

प्रभुगुण अनुभव चंद्रहास ज्यों, सो तो न रहे म्यान में,
*वाचकयश* कहे मोह महाअरि, जीत लीयो हे मैदान में हम...।।5।।

## 3.

सुणो शांतिजिणंद सोभागी, हुं तो थयो छुं तुम गुणरागी,
तुमे निरागी भगवंत, जोतां किम मळशे तंत, सुणो0 ।।1।।
हुं तो क्रोध कषायनो भरीओ, तुं तो उपशम रसनो दरीयो,
हुं तो अज्ञाने आवरीओ, तुं तो केवळ कमला वरीओ. सु0 ।।2।।
हुं तो विषया रसनो आशी, तें तो विषया कीधी निराशी,
हुं तो करमने भारे भार्यो, तें तो प्रभु ! भार उतार्यो. सु0 ।।3।।
हुं तो मोह तणे वश पडीओ, तें तो सबला मोहने हणीओ,
हुं तो भव समुद्रमां खुंच्यो, तुं तो शिवमंदीरमां पहोंच्यो. सु0 ।।4।।
मारे जन्म मरणनो जोरो, तें तो तोड्यो तेहनो दोरो,
मारो पासो न मेले राग, तमे प्रभुजी थया वीतराग. सु0 ।।5।।
मने मायाअे मूक्यो पाशी, तुं तो निरबंधन अविनाशी,
हुं तो समकितथी अधूरो, तुं तो सकळ पदारथे पूरो. सु0 ।।6।।
मारे तो छो प्रभु तुंही अेक, तारे मुज सरीखा अनेक,
हुं तो मनथी न मूकुं मान, तुं तो मानरहित भगवान सु0 ।।7।।
मारूं कीधुं कशुं नवि थाय, तुं तो रंकने करे छे राय,
अेक करो मुज महेरबानी, मारो मुजरो लेजो मानी सु0 ।।8।।
अेकवार जो नजरे निरखो, तो करो मुजने तुज सरीखो,
जो सेवक तुम सरीखो थाशे, तो गुण तमारा गाशे सु0 ।।9।।
भवो भव तुम चरणोनी सेवा, हुं तो मांगु छुं देवाधिदेवा,
सामुं जुओने सेवक जाणी, अेवी उदयरतननी वाणी. सु0 ।।10।।

## 4.

शान्ति जिनेशश्वर साचो साहिब, शान्तिकरण इण कलिमें हो..जिनजी।।1।।
तुं मेरा मनमें तुं मेरा दिलमें, ध्यान धरुं पलपलमें हो..जिनजी ।।2।।
भवमां भमतां में दरिशन पायो, आशा पूरो अेक पलमें हो..जिनजी।।3।।
निर्मलज्योत वदन पर सोहे, निकस्यो ज्युं चंद बादलमें हो..जिनजी।।4।।
मेरो मन तुज साथे लीनो, मीन वसे ज्युं जलमें हो..जिनजी ।।5।।
जिनरंग कहे प्रभु शान्ति-जिनेश्वर, दीठोजी देव सकल में हो..जिनजी।।6।।

## कुंथुनाथ-17

मनडुं किमही न बाजे हो कुंथुजिन ! मनडुं किमही न बाजे,
जिम जिम जतन करीने राखुं, तिम तिम अलगुं भांजे. हो कुंथु0...।।1।।
रजनी वासर वसति उज्जड, गयण पायाले जाय,
साप खाय ने मुखडुं थोथुं, अेह उखाणो न्याय. हो कुंथु0...।।2।।
मुगतितणा अभिलाषी तपीया, ज्ञान ने ध्यान अभ्यासे,
वैरीडुं कांइ अेहवुं चिंते, नाखे अवळे पासे. हो कुंथु0...।।3।।
आगम आगमधरने हाथे, नावे किणविध आंकुं,
किहां कणे जो हठ करी हटकुं, तो व्यालतणी परे वांकुं हो, कुंथु0...।।4।।
जो ठग कहुं तो ठगतो न देखुं, शाहुकार पण नांहि,
सर्वमांहे ने सहुथी अलगुं, अे अचरिज मनमांहि,हो कुंथु0...।।5।।
जे जे कहुं ते कान न धारे, आपमते रहे कालो,
सुरनर पंडितजन समजावे, समजे न माहरो सालो. हो कुंथु0...।।6।।
में जाण्युं अे लिंग नपुंसक, सकल मरदने ठेले,
बीजी वाते समरथ छे नर, अेहने कोइ न झेले हो कुंथु0...।।7।।
मन साध्युं तेणे सघळुं साध्युं, अेह वात नहि खोटी,
इम कहे साध्युं ते नवि मानुं, अेक ही वात छे मोटी. हो कुंथु0...।।8।।

मनडुं दुराराध्य तें वश आण्युं, ते आगमथी मतिआणुं,
*आनंदघन* प्रभु माहरूं आणो, तो साचुं करी जाणुं हो कुंथु0...।।9।।

## श्री अरनाथ-18

अरनाथकुं सदा मेरी वंदना, मेरे नाथ कु सदा मेरी वंदना...
जरा उपकारी घन ज्यों वरसे, वाणी शीतल चंदना...अर0... ।।1।।
रूपे रंभा राणी श्री देवी, भूप सुदर्शन नंदना...अर0... ।।2।।
भाव भगति शुं अहनिश सेवे, दूरित हरे भव फंदना...अर0... ।।3।।
छ खंड साधी भीती द्वेधा कीधी, दुर्जय शत्रु निकंदना...अर0... ।।4।।
*'न्यायसागर'* प्रभु सेवा-मेवा, मागे परमानंदना...अर0... ।।5।।

## श्री मल्लिनाथ-19

पंचम सुर लोकना वासी रे, नव लोकांतिक सुविलासी रे,
करे विनंती गुणनी राशी, मल्लिजिन नाथजी व्रत लीजे रे,
भवि जीवने शिवसुख दीजे, मल्लिजिन0 ।।1।।

तुमे करुणारस भंडार रे, पाम्या छो भवजल पार रे,
सेवकनो करो रे उद्धार, मल्लिजिन0 ।।2।।

प्रभुदान संवत्सरी आपे रे, जगना दारिद्र दुःख कापे रे,
भव्यत्वपणे तस थापे, मल्लिजिन0 ।।3।।

सुरपति सघळा मळी आवे रे, मणि रयण सोवन वरसावे रे,
प्रभु चरणे शीश नमावे, मल्लिजिन0 ।।4।।

तीर्थोदक कुंभा लावे रे, प्रभुने सिंहासन ठावे रे,
सुरपति भक्ते नवरावे, मल्लिजिन0 ।।5।।

वस्त्राभरणे शणगारे रे, फूल माला हृदय पर धारे रे,
दुःखडां इन्द्राणी ओवारे, मल्लिजिन0 ।।6।।

मळ्या सुर नर कोडाकोडी रे, प्रभु आगे रह्या करजोडी रे,
करे भक्ति युक्ति मद मोडी, मल्लिजिन0 ।।7।।
मागशिर सुदीनी अजुआली रे, एकादशी गुणनी आली रे,
वर्या संयम वधु लटकाळी, मल्लिजिन0 ।।8।।
दीक्षा कल्याणक एह रे, गातां दु:ख न रहे तेह रे,
कहे रूपविजय जस नेह, मल्लिजिन0 ।।9।।

## श्री मुनिसुव्रत स्वामी-20

मुनिसुव्रत जिन मन मोह्युं मारू, शरण ग्रह्युं छे तमारूं,
प्रात: समय ज्यारे हुं जागुं, स्मरण करूं छुं तमारूं...हो जिनजी,
तुज मूरति मन हरणी, भवसायर जल तरणी,
हो जिनजी...तुज...।।1।।
आप भरोशो आ जगमां छे, तारो तो घणुं सारूं,
जन्म जरा मरणे करी थाक्यो, आशरो लीधो छे में तारो,
हो जिनजी...तुज...।।2।।
चुं चुं चुं चुं चिडीयां बोले, भजन करे छे तमारूं,
मुर्ख मनुष्य प्रमादे पड्यो छे, नाम जपे नहीं तारूं,
हो जिनजी...तुज...।।3।।
भोर थतां बहु शोर सुणुं हुं, कोई हसे कोई रूवे न्यारूं,
सुखीओ सुवे ने दु:खीओ रूवे, अकल गतिअे विचारूं,
हो जिनजी...तुज...।।4।।
खेल खलकनो बंध नाटकनो, कुटुंब कबिलो हुं धारूं,
ज्यां सुधी स्वार्थ ज्यां सुधी सर्वे, अंत समये सहु न्यारूं,
हो जिनजी...तुज...।।5।।
माया जाळ तणी जोई जाणी, जगत लागे छे खारूं,
*'उदयरत्न'* अेम जाणी प्रभु तारूं, शरण ग्रह्युं छे में सारूं,
हो जिनजी...तुज...।।6।।

## श्री नमिनाथ भगवान-21

श्री नमिनाथने चरणे नमतां, मन गमता सुख लहिअे रे,
भव जंगलमां भमतां रहीअे, कर्म निकाचित दहीअे रे, ।।1।।
समकित शिवपुरामांहिं पहोंचाडे, समकित धरम आधार रे,
श्री जिनवरनी पूजा करीअे, अे समकितनो सार रे...श्री ।।2।।
जे समकितथी होय उपरांठा, तेना सुख जाये नाठा रे,
जे कहे जिनपूजा नवि कीजे, तेहनुं नाम न लीजे रे...श्री ।।3।।
वप्राराणीनो सुत पूजो, जिम संसारे न धूजो रे,
भवजलतारक कष्ट निवारक, नहि कोई अेहवो दूजो रे...श्री ।।4।।
कीर्ति विजय उवज्झायनो सेवक, *'विनय'* कहे प्रभु सेवो रे,
त्रण तत्त्व मनमांही अवधारी, वंदो अरिहंतदेवो रे...श्री ।।5।।

## नेमिनाथ-22

### (1)

(राग : रीझो रिझो श्रीवीर देखी.../बांई चाली सासरीये...)

अरज सुणो हो नेम नगीना, राजुलना भरथार,
भज लो भज लो हो जगना प्राणी, भजो सदा किरतार..भज लो० ।।1।।
जान लईने आव्या त्यारे, हर्ष तणो नहि पार,
पशु तणो पोकार सुणीने, पाछा वल्या तत्काल..भज लो० ।।2।।
राजुल गोखे राह नीरखती, रडती आंसुनी धार,
पियुजी ! मारा केम रिसाया, मुज हैयाना हार..भज लो० ।।3।।
नेम बन्या तीर्थंकर स्वामि, बावीशमां जिनराज,
माया छोडी मनडुं साध्युं, नमो नमो शिरताज..भज लो० ।।4।।

नेम निरंजन नाथ हमारा, अम नयनोना तारा,
बालक तुम भक्तिने माटे, रडतो आंसुनी धारा..भज लो० ।।5।।
परदु:ख-भंजन नाथ निरंजन, जगपालक किरतार,
'ज्ञानविमल' कहे भवसिन्धुथी, मुजने पार उतार..भज लो० ।।6।।

## (2)

(राग : ए मेरे वतन के लोगो...)

मैं आज दरिसण पाया, श्री नेमिनाथ जिनराया,
प्रभु शिवादेवीना जाया, प्रभु समुद्रविजय कुल आया,
कर्मों के फंद छोडाया, ब्रह्मचारी नाम धराया,
जिणे तोडी जगत की माया...जिणे० मैं० ।।1।।
रैवतिगिरि मंडन राया, कल्याणक तीन सोहाया,
दीक्षा केवल शिव राया, जगतारक बिरुद धराया,
तुम बेठे ध्यान लगाया...जिणे० मैं० ।।2।।
अब सुनो त्रिभुवन राया, मैं कर्मों के वश आया,
हुं चतुर्गति भटकाया, मैं दु:ख अनंता पाया,
ते गिनती नाहीं गिनाया...ते गिनती...० मैं० ।।3।।
मैं गर्भावास में आया, उंधे मस्तक लटकाया,
आहार विरस भुक्ताया, एम अशुभ करम फल पाया,
ईण दु:ख से नाहीं मूकाया...इण० मैं० ।।4।।
नरभव चिंतामणि पाया, तब चार चोर मिल आया,
मुजे चौट में लूंट खाया, अब सार करो जिनराया,
किस कारण देर लगाया...किस० मैं० ।।5।।
जिणे अंतरगत में लाया, प्रभु नेमि निरंजन ध्याया,
दु:ख संकट विघन हटाया, ते परमानंद पद पाया,
फिर संसारे नहीं आया...फिर० मैं० ।।6।।

मैं दूर देश से आया, प्रभु चरणे शीश नमाया,
मैं अरज करी सुखदाया, तुमे अवधारो महाराया,
एम 'वीरविजय' गुण गाया...एम० मैं० ।।7।।

## (3)

परमातम पूरणकला, पूरण गुण हो पूरण जन आश,
पूरणदृष्टि निहालीओ, चित्त धरीये हो, अमची अरदास, पर0 ।।1।।
सर्व देश घाती सहुं, अघाती हो करी घात दयाल,
वास कीयो शिवमंदिरे, मोहे विसरी हो भमतो, जगजाल. पर0 ।।2।।
जग तारक पदवी लही, तार्या सहि हो अपराधी अपार,
तात कहो मोहे तारता, किम किनी हो इणे अवसर वार ? पर0 ।।3।।
मोह महा मद छाकथी, हुं छकीओ हो नहि शुद्धि लगार,
उचित सहि इणे अवसरे, सेवकनी हो करवी संभार. पर0 ।।4।।
मोह गये जो तारशो, तिण वेळा कहो किहां तुम उपगार,
सुखवेळा साजन घणां, दु:खवेळा हो विरला संसार. पर0 ।।5।।
पण तुम दरिसन जोगथी, थयो हृदये हो अनुभव प्रकाश,
अनुभव अभ्यासी करे, दु:खदायी हो सहु कर्म विनाश, पर0 ।।6।।
कर्म कलंक निवारीने, निजरूपे हो रमे रमताराम,
लहत अपुरव भावथी, इण रीते हो तुम पद विशराम. पर0 ।।7।।
त्रिकरण जोगे विनवुं, सुखदायी हो शिवादेवीना नंद,
चिदानंद मनमें सदा, तुम आपो हो प्रभु नाणदिणंद पर0 ।।8।।

## (4)

निरख्यो नेमिजिणंदने अरिहंताजी, राजिमती कर्यो त्याग भगवंताजी,
ब्रह्मचारी संयम ग्रह्यो अरिहंताजी, अनुक्रमे थया वीतराग. भगवंताजी0।।1।।

चामर चक्र सिंहासन अरिहंताजी, पादपीठ संयुत, भगवंताजी,
छत्र चाले आकाशमां अरिहंताजी, देवदुंदुभि वरयुत. भगवंताजी0।।2।।
सहस जोयण ध्वज सोहतो अरिहंताजी, प्रभु आगळ चालंत भगवंताजी,
कनक-कमळ नव ऊपरे अरिहंताजी, विचरे पाय ठवंत. भगवंताजी0।।3।।
चार मुखे दीए देशना अरिहंताजी, त्रण गढ झाखझमाल, भगवंताजी,
केश-रोम-श्मश्रु नखा अरिहंताजी, वाधे नहि कोई काल. भगवंताजी0।।4।।
कांटा पण उंधा होवे अरिहंताजी, पंच विषय अनुकूळ, भगवंताजी,
षट् ऋतु समकाळे फळे अरिहंताजी, वायु नहि प्रतिकूळ. भगवंताजी0।।5।।
पाणी सुगंध सुरकुसुमनी अरिहंताजी, वृष्टि होये सुरसाल, भगवंताजी,
पंखी दीए सुप्रदक्षिणा अरिहंताजी, वृक्ष नमे असराल भगवंताजी0 ।।6।।
जिन उत्तम पद पद्मनी अरिहंताजी, सेवा करे सुरकोडी, भगवंताजी,
चार निकायना जघन्यथी अरिहंताजी, चैत्यवृक्ष तेम जोडी.भगवंताजी0।।7।।

## 1. श्री पार्श्वनाथ

राधा जेवा फूलडा ने, शामळ जेवो रंग,
आज तारी आंगीनो कांई, रुडो बन्यो छे रंग,
प्यारा पासजी हो लाल, दीन दयाळ मुजने नयणे निहाळ... ।।1।।
जोगीवाडे जागतो ने, मातो धिंगडमल्ल,
शामळो सोहामणो कांई, जीत्या आठे मल्ल प्यारा पासजी... ।।2।।
तुं छे मारो साहिबो ने, हुं छुं तारो दास,
आश पूरो दासनी कांई, सांभळी अरदास प्यारा पासजी... ।।3।।
देव सघळा दीठा तेमां, अेक ज तुं अवल्ल,
लाखेणुं छे लटकुं तारुं, देखी रीझे दिल्ल प्यारा पासजी... ।।4।।
कोई नमे पीरने ने, कोई नमे राम,
उदय रत्न कहे प्रभुजी, मारे तुमशुं काम प्यारा पासजी... ।।5।।

## 2. शंखेश्वर पार्श्वनाथ

अब मोहे ऐसी आय बनी,
श्री शंखेश्वर पास जिनेश्वर, मेरो तुं एक धणी, अब0 ।।1।।
तुम बिन कोउ चित्त न सुहावे, आवे कोडि गुणी,
मेरो मन तुज उपर रसियो, अलि जिम कमल भणी, अब0 ।।2।।
तुम नामे सवि संकट चूरे, नागराज धरणी,
नाम जपुं निशि वासर तेरो, ए मुज शुभ करणी, अब0 ।।3।।
कोपानल उपजावत दुर्जन, मथन वचन अरणी,
नाम जपुं जलधार तिहां तुज, धारुं दु:ख हरणी, अब0 ।।4।।
मिथ्यामति बहु जन है जगमें, पद न धरत धरणी,
उनको अब तुज भक्ति प्रभावे, भय नहि एक कणी, अब0 ।।5।।
सज्जन-नयन सुधारस अंजन, दुर्जन रवि भरणी,
तुज मूरति निरखे सो पावे, सुख *जस* लील घणी, अब0 ।।6।।

### 3.

आवो आवो पासजी मुज मळीया रे, मारा मनना मनोरथ फळीया,
तारी मूरति मोहन गारी रे, सहु संघने लागे छे प्यारी रे,
तमने मोही रह्या सुर नरनारी, आवो आवो0 ।।1।।
अलबेली मूरत प्रभु तारी रे, तारा मुखडा ऊपर जाउ वारी रे,
नाग-नागणीनी जोड उगारी, आवो आवो0 ।।2।।
धन्य धन्य देवाधिदेवा रे, सुरलोक करे छे सेवा रे,
अमने आपोने शिवपुर मेवा, आवो आवो0 ।।3।।
तमे शिव रमणीना रसीया रे, जइ मोक्षपुरीमां वसीया रे,
मारा हृदय कमळमां वसीया, आवो आवो0 ।।4।।
जे कोई पार्श्वतणा गुण गाशे रे, भवभवनां पातिक जाशे रे,
तेना समकित निर्मल थाशे, आवो आवो0 ।।5।।

प्रभु त्रेवीशमां जिनराया रे, माता वामादेवीना जाया रे,
अमने दरिशन द्योने दयाळा, आवो आवो0 ।।6।।
हुं तो लळी लळी लागुं छुं पाय रे, मारा उरमां ते हरख न माय रे,
एम *'माणेकविजय'* गुण गाय, आवो आवो0 ।।7।।

## 4.

आई बसो भगवान मेरे मन, आई बसो भगवान,
मैं निर्गुणी इतना मांगत हुं, हो जाये मेरा कल्याण, आई...।।1।।
मेरे मन की तुम सब जानो, क्या करुं आपसे ब्यान,
विश्व हितैषी दिन दयाळु, रखीये मुज पर ध्यान,आई...।।2।।
भोगाधिन होवत मन मेलु, बिसरी तुम गुण गान,
वहाँ से छोडावो हृदये आई, अरिभंजक भगवान, आई...।।3।।
आप कृपा से तर गये केई, रह गया मै दर्दवान,
निगाह रखके निर्मल कीजे, धनवंतरी भगवान, आई...।।4।।
श्री शंखेश्वर पार्श्व जिनेश्वर, दीजिये तुम गुणगान,
इनही सहारे 'चिद्घन' देवा, बनुंगा आप समान, आई...।।5।।

## 5.

श्री चिंतामणि पासजी, वात सुणो एक मोरी रे,
माहरा मनना मनोरथ पूरजो, हुं भक्ति न छोडुं तोरी रे. श्री0 ।।1।।
माहरी खिजमतमां खामी नहि, ताहरे खोट न कांइ खजाने रे,
हवे देवानी शी ढील छे ? शुं कहेवुं ते कहीए थाने रे. श्री0 ।।2।।
ते पूरण सवि पृथ्वी करी, धन वरसी वरसीदाने रे,
माहरी वेळा शुं एहवा, दीओ वांछित वाळो वाने रे. श्री0 ।।3।।
हुं तो केड न छोडुं ताहरी, आप्या विण शिवसुख स्वामी रे,
मूरख ते ओछे मानशे, चिंतामणि करयल पामी रे. श्री0 ।।4।।

मत कहेशो तुज कर्मे नथी, कर्मे छे तो तुं पाम्यो रे,
मुज सरीखा कीधा मोटका, कहो तेणे कांइ तूज थाम्यो रे. श्री0 ।।5।।

काल स्वभाव भवितव्यता, ते सघळा तारा दासो रे,
मुख्य हेतु तुं मोक्षनो, ए मुजने सबल विश्वासो रे. श्री0 ।।6।।

अमे भक्ते मुक्तिने खेंचशुं, जिम लोहने चमक पाषाणो रे,
तुमे हेजे हसीने देखशो, कहेशो सेवक छे सपराणो रे. श्री0 ।।7।।

भक्ति आराध्यां फळ दीए, चिंतामणि पण पाषाणो रे,
वळी अधिकुं कांइ कहावशो, ए भद्रक भक्ति ते जाणो रे. श्री0 ।।8।।

बाळक ते जिम तिम बोलतो, करे लाड तातने आगे रे,
ते तेहशुं वांछित पूरवे, बनी आवे सघळुं रागे रे. श्री0 ।।9।।

माहरे बननारुं ते बन्युं ज छे, हुं तो लोकने वात सीखावुं रे,
वाचक जस कहे साहिबा, ए रीते तुम गुण गावुं रे. श्री0 ।।10।।

## 6.

पार्श्व जिणंदा वामदेवी नंदा, तुम पर वारी जाऊ बोल बोल रे,
दरवाजा तेरा खोल खोल रे,
दूर-दूरसे लंबी सफर से, आया दर्शन को मैं दोड-दोड के, दर0 ।।1।।
पूजा करूंगा, धूप धरूंगा, फूल चढाऊंगा बहु मोल-मोल रे, दर0 ।।2।।
तूं मेरा ठाकर, मैं तेरा चाकर, एकवार मुजशुं बोल-बोल रे, दर0 ।।3।।
श्री जगवल्लभ मूरत सोहे, मुखडुं ते झाकम झोल झोल रे, दर0 ।।4।।
रुप विबुधनो *मोहन* पभणे, रंग लाग्यो चित्त चोल चोल रे, दर0 ।।5।।

## 7.

(राग : महावीर प्रभु घेर आवे-अे देशी)

नित्य समरुं साहिब सयणां, नाम सुणतां शीतल श्रवणां,
जिन दरिसणे विकसे नयना, गुण गातां उलसे वयणां रे-
शंखेश्वर साहिब साचो, बीजानो आसरो काचो रे, शंखे0 ।।1।।
द्रव्यथी देव दानव पूजे, गुण शांत रूचिपणुं लीजे,
अरिहापद पज्जव छाजे, मुद्रा पद्मासन राजे रे शंखे0 ।।2।।
संवेगे तजी घरवासो, प्रभु पार्श्वना गणधर थाशो,
तव मुक्तिपुरीमां जाशो, गुणिलोकमां वयणे गवाशो रे शंखे0 ।।3।।
एम दामोदर जिनवाणी, आषाढी श्रावके जाणी,
जिन वंदी निज घर आवे, प्रभु पार्श्वनी प्रतिमा भरावे रे शंखे0 ।।4।।
त्रण काल ते धूप उवेखे, उपकारी श्री जिन सेवे,
पछी तेह वैमानिक थावे, ते प्रतिमा पण तिहां लावे रे शंखे0 ।।5।।
घणा काल पूजी बहुमाने, वळी सूरज चंद्र विमाने,
नागलोकना कष्ट निवार्या, ज्यारे पार्श्वप्रभुजी पधार्या रे शंखे0 ।।6।।
यदु सेन रह्यो रण घेरी, जीत्या नवि जाये वैरी,
जरासंधे जरा तव मेली, हरि बल विना सघळे फेली रे शंखे0 ।।7।।
नेमीश्वर चोकी विशाली, अठ्ठम करे वनमाली,
तूंठी पद्मावती बाली, आपे प्रतिमा झाकझमाली रे शंखे0 ।।8।।
प्रभु पार्श्वनी प्रतिमा पूजी, बळवंत जरा तव धूजी,
छंटकाव न्हवण-जल जोती, जादवनी जरा जाय रोती रे शंखे0 ।।9।।
शंख पूरी सहुने जगावे, शंखेश्वर गाम वसावे,
मंदिरमां प्रभु पधरावे, शंखेश्वर नाम धरावे रे शंखे0 ।।10।।
रहे जे जिनराज हजूरे, सेवक मनवंछित पूरे,
अे प्रभुजीने भेटण काजे, शेठ मोतीभाइने राजे रे शंखे0 ।।11।।

नाना माणेक केरा नंद, संघवी प्रेमचंद वीरचंद,
राजनगरथी संघ चलावे, गामे गामना संघ मिलावे रे शंखे0 ।।12।।
अढार अठ्ठोतेर वरसे, फागण वदी तेरस दिवसे,
जिन वंदी आनंद पावे, *शुभवीर* वचन रस गावे रे, शंखे0 ।।13।।

## 8.

(राग : पंचम सुरलोकना वासी रे.../भवि तुमे अष्टमी तिथि...)
चित्त समरी शारद माय रे, वली प्रणमुं निज गुरुपाय रे,
गाउं त्रेवीशमा जिनराज रे, व्हालाजीनुं जन्म कल्याणक गाउं रे,
सोनारुपाना फूलडे वधावुं रे, थाल भरी भरी मोतीडे वधावुं रे...व्हा0।।1।।
काशीदेश वाराणसी राजे रे, अश्वसेन छत्रपति छाजे रे,
राणी वामा गृहिणी सुराजे रे... व्हाला0।।2।।
चैत्रवदि चोथे ते चविया रे, माता वामा कूखे अवतरीया रे,
अजुआल्यां एहनां परियां रे... व्हाला0।।3।।
पोष वदि दशमी जगभाण रे, होवे प्रभुनुं जन्म कल्याण रे,
वीशस्थानक सुकृत कमाण रे... व्हाला0।।4।।
नारकी नरके सुख पावे रे, अंतर्मुहूर्त दुःख जावे रे,
ए तो जन्म कल्याणक कहावे रे... व्हाला0।।5।।
प्रभु त्रण भुवन शिरताज रे, तुमे तारण तरण जहाज रे,
कहे 'दीपविजय' कविराज रे... व्हाला0।।6।।

## 9.

(राग : ऋषभ जिनराज मुज.../जय गणेश जय गणेश देवा...)
तार मुज तार मुज, तार त्रिभुवन धणी, पार उतार संसार स्वामी,
प्राण तुं ! त्राण तुं ! शरण आधार तुं ! आतमाराम मुज तुंहि स्वामी..।।1।।
तुंहि चिंतामणि, तुंहि मुज सुरतरु, कामघट कामधेनु विधाता,
सकल संपत्तिकरुं, विकट संकटहरुं, पास शंखेश्वरो मुक्तिदाता...।।2।।

पुण्य भरपूर अंकुर मुज जागीओ, भाग्य-सौभाग्य मुख नूर वाध्यो,
सकल वांछित फल्यो, माहरो दिन वल्यो, पास शंखेश्वरो देव लाध्यो..।।3।।
मूर्ति मनोहारिणी, भवजलधि तारिणी, निरखत नयन आनंद हुओ,
पास प्रभु भेटिया, पातिक मेटीया, लेटिया ताहरे चरणे जुओ...।।4।।
पास तुं मुज धणी, प्रीति मुज बनी घणी, विबुधवर नयविजय गुरु वखाणी,
मुक्तिपद आपजो, आप पद थापजो, 'जसविजय' आपनो भक्त जाणी.।।5।।

## 10.

(राग : याद आवे मोरी मां...)

भवजल पार उतार (२) श्री शंखेश्वर पार्श्व जिनेश्वर,
मारो तुं एक आधार...मारो तुं एक आधार... श्री शंखेश्वर०।।1।।
काल अनंतो भमतां भमतां, क्यांय न आव्यो आरो,
धन्य घडी ते मारी आजे, दीठो तुम देदारो,
दीठो तुम देदार...दीठो तुम देदार... श्री शंखेश्वर०।।1।।
तुं वीतरागी, तुं अविनाशी, तुं नीराबंधी देव,
हुं रागी छुं पापी जीवडो, भमतो भव अपार,
भमतो भव अपार...भमतो भव अपार... श्री शंखेश्वर०।।3।।
आ दुनियामां तारा जेवो, कोई न तारणहार,
वामानंदन चंदननी परे शीतल जेनी छाय,
शीतल जेनी छाय...शीतल जेनी छाय... श्री शंखेश्वर०।।4।।
भवोभव तुम चरण सेवा, मांगु छुं दीनदयाला,
'रंगविजय' कहे प्रेमशुं रे, विनंति ए अवधार,
विनंति ए अवधार...विनंति ए अवधार... श्री शंखेश्वर०।।5।।

## 11.

(राग : देखी श्री पार्श्वतणी मूर्ति अलबेलडी...)

पार्श्व जिणंदा माता वामाजी के नंदा, तुम पर वारी जाउं खोल खोल रे,
हां रे ! दरवाजा तेरा खोल खोल रे, हां रे ! दरवाजा० हां रे!..।।1।।

दूर दूर से लंबी सफल से, हम दरिशन को आये दौड दौड रे..हां रे!..।।2।।
पूजा करुंगा धूप धरुंगा, फूल चढाऊं बहु मोल मोल रे..हां रे!.. ।।3।।
तुं मेरा ठाकर में तेरा चाकर, एक बार मुजसे बोल बोल रे..हां रे!..।।4।।
श्री शंखेश्वर सुंदर मूरत, मुखडुं ते झाकम झोल झोल रे..हां रे!..।।5।।
रुप विबुधनो 'मोहन' पभणे, रंग लाग्यो चित्त चोल चोल रे..हां रे!..।।6।।

## 12.

(राग : मालकौंस-मारा नाथनी बधाई.../मैया ! मोरी मैं नहीं...)

सुखदाई रे सुखदाई, दादो पासजी सुखदाई,
ऐसो साहिब नहि कोउ जगमें, सेवा कीजे दिल लाइ... दादो०..।।1।।
सब सुखदायक एहि ज नायक, एहि सहायक सुसहाई,
किंकरकुं करे शंकर सरिखो, आपे अपनी ठकुराई... दादो०..।।2।।
मंगल रंग वधे प्रभु ध्याने, पाप वेली जाए करमाई,
शीतलता प्रगटे घट अंतर, मिटे मोह की गरमाई... दादो०..।।3।।
कहा करुं सुरतरु चिंतामणिकुं, जो में प्रभु सेवा पाई,
'जसविजय' कहे दर्शन देख्यो, घर आंगण नवनिधि आई...दादो०..।।4।।

## 13.

(राग : कोण भरे कोण भके कोण रे.../मानमां मानमां मानमां रे...)

भेटीए भेटीए भेटीए रे, मनमोहन जिनवर भेटीए...!
मेटीए मेटीए मेटीए रे, भेटता भवदु:ख मेटीए रे... मन० ।।1।।
श्री शंखेश्वर पास जिनेश्वर, पूजी पातक मेटीए रे... मन० ।।2।।
जादवनी जरा जास न्हवणथी, नाठी एक चपेटीए रे... मन० ।।3।।
आश धरीने हुं पण आव्यो, निज करे पीठ थपेटीए रे... मन० ।।4।।
त्रण रतन आपो ज्युं राख्या, निज आतमनी पेटीए रे... मन० ।।5।।
साहिब सुरतरु सरीखो पामी, और कुण आगे लेटीए रे... मन० ।।6।।
'पद्मविजय' कहे तुमरे चरणथी, क्षण एक न रहुं छेटीए रे...मन० ।।7।।

## 14.

आणी मन शुद्ध आस्था, देव जुहारू शाश्वता,
पार्श्वनाथ मन वांछित पूर, चिंतामणि मारी चिंता चूर ।।1।।
अणियारी तारी आंखडी, जाणे कमलनी पांखडी,
मुख दीठे दु:ख जावे दूर, चिंतामणि मारी चिंता चूर ।।2।।
जो कोई कोईने नमे, मारा मनमां यु ही रमे,
सदा जुहारु उगते सूर, चिंतामणि मारी चिंता चूर ।।3।।
पार्श्व शंखेश्वर सुरतरु वेल, वैरी दुश्मन पाछा ठेल,
तुं छे मारे हाजरा हजुर, चिंतामणि मारी चिंता चुर ।।4।।
आ स्तोत्र जे मनमां धरे, तेहना काज सदाये सरे,
आधि व्याधि दु:ख जावे दूर, चिंतामणि मारी चिंता चूर ।।5।।
मुज मन लागी तुमसुं प्रीत, दूजो कोई ना आवे चित,
कर मुज तेज प्रताप प्रचुर, चिंतामणि मारी चिंता चूर ।।6।।
भव भव देजे तुम पद सेव, श्री चिंतामणि अरिहंत देव,
समयसंदर कहे गुण भरपुर, चिंतामणि मारी चिंता चूर ।।7।।

## 15.

समय समय सो वार संभारुं, तुज शुं लगनी जोर रे,
मोहन मुजरो मानी लेजो, ज्युं जलधर प्रीति मोर रे समय0...।।1।।
माहरे तन धन जीवन तुंही, एहमां जूठ न जाणो रे,
अंतरजामी जगजन नेता, तुं कीहां नथी छानो रे समय0...।।2।।
जेणे तुजने हैडे नवि ध्यायो, तास जनम कुण लेखे रे,
काचे राचे ते नर मूरख, रत्नने दूर उवेखे रे समय0...।।3।।
सुरतरू छाया मूकी गहरी, बाउळ तळे कुण बेसे रे
ताहरी ओलग लागे मीठी, किम छोडाय विशेषे रे समय0...।।4।।

वामानंदन पास प्रभुजी, अरजी चित्तमां आणो रे,
रूप विबुधनो मोहन पभणे, निज सेवक करी जाणो रे समय0...।।5।।

## 16.

अंखीया हरखन लागी हमारी, अंखीया,
दर्शन देखत पार्श्व जिणंद को, भाग्य दशा अब जागी हमारी, अंखिया0।।1।।
अकल अरूपी और अविनाशी, जग जनने करे रागी हमारी, अंखिया0।।2।।
शरणागत प्रभु तुज पद पंकज, सेवना मुज मन जागी हमारी, अंखिया0।।3।।
लीला लहेरे दे निज पदवी, तुम समको नही त्यागी हमारी, अंखिया0।।4।।
वामा नंदन चंदननी परे, शीतल तूं सोभागी हमारी, अंखिया0।।5।।
ज्ञान विमल प्रभु ध्यान धरंतां, भव भय भावठ भांगी हमारी, अंखिया0।।6।।

## 17.

तुं प्रभु म्हारो हुं प्रभु ताहरो, क्षण एक मुजने नाही विसारो,
महेर करी मुज विनंती स्वीकारो, स्वामी सेवक जाणी निहाळो, तुं प्रभु0।।1।।
लाख चोरासी भटकी प्रभुजी, आव्यो हुं तारे शरणे हो जिनजी,
दुर्गति कापो शिवसुख आपो, स्वामी सेवक जाणी निहाळो, तुं प्रभु0।।2।।
अक्षय खजानो प्रभु तारो भर्यो छे, आपो कृपाळु में हाथ धर्यो छे,
वामानंदन जगवंदन प्यारो, देव अनेरा मांहे तुं छे न्यारो, तुं प्रभु0।।3।।
पल पल समरुं नाथ शंखेश्वर, समरथ तारण तुं ही जिनेश्वर,
प्राण थकी मने अधिको व्हालो, दया करी मुजने नेहे निहाळो, तुं प्रभु0।।4।।
भक्त वत्सल तारूं बिरूद जाणी, केड न छोडुं एम लेजो जाणी,
चरणोनी सेवा हुं नित-नित चाहुं, घडी घडी मन मांहे उमाहुं, तुं प्रभु0।।5।।
*ज्ञान विमल* तुज भक्ति प्रभावे, भवोभवना संताप शमावे,
अमीय भरेली तारी मुरति निहाळी, पाप अंतरना देजो पखाली, तुं प्रभु0 ।।6।।

## 18.

तारा नयनां रे प्याला, प्रेमना भर्या छे,
दया रसनां भर्यां छे, अमी छांटना भर्यां छे, तारा0 ।।1।।
जे कोइ तारी नजरे चडी आवे, कारज तेहना तें सफल कर्यां छे, तारा0 ।।2।।
प्रगट थइ पाताळथी प्रभु तें, यादवनां दु:ख दूर कर्या छे, तारा0।।3।।
पन्नगपति पावकथी उगार्यो, जन्म मरण भय तेहना हर्यां छे, तारा0।।4।।
पतित पावन शरणागत तुंही, दरशन दीठे मारां चित्तडा ठर्यां छे, तारा0।।5।।
श्री शंखेश्वर पास जिनेश्वर, तुज पद पंकज आजथी वर्या छे, तारा0।।6।।
जे कोइ तुजने ध्याने ध्यावे, *अमृत* सुखनां रंगथी भर्या छे, तारा0।।7।।

## 19.

(राग : कल्याण)

जयजय ! जय ! जय ! पास जिणंद (टेक),
अंतरीक प्रभु ! त्रिभुवन तारन, भविक कमल उल्लास दिणंद.जय..।।1।।
तेरे चरन शरन मैं कीनो, तू बिना कुन तोडे भव फंद,
परम पुरुष परमारथदर्शी, तु दीये भविककुं परमानंद.जय.. ।।2।।
तू नायक तूं शिवसुखदायक, तू हिंतचिंतक तूं सुखकंद,
तू जनरंजन तु भवभंजन, तू केवल-कमला गोविंद.जय.. ।।3।।
कोडि देव मिलके कर न सके, एक अंगूठ रुप प्रतिछंद,
अेसो अद्भुत रुप तिहारो, वरषत मानुं अमृत को बुंद.जय.. ।।4।।
मेरे मन मधुकरके मोहन, तुम हो विमल सदल अरविंद,
नयन चकोर विलास करत हे, देखत तुम मुख पूनमचंद.जय.. ।।5।।
दूर जावे प्रभु ! तुम दरिशन से, दु:ख दोहग दारिद्र अघ-दंद,
वाटक जस कहे सहस फलत हे, जे बोले तुम गुनके वृंद.जय.. ।।6।।

## 20.

(राग : बेर बेर नहि आवे अवसर)

कोयल टहुंकी रही मधुवन में, पार्श्व शामळीया बसो मेरे मनमें,
काशी देश वाराणसी नगरी, जन्म लीयो, प्रभु क्षत्रियकुल में.कोयल. ।।1।।
बालपणामां प्रभु अद्भुत ज्ञानी, कमठको मान हर्योअेक पलमें.कोयल. ।।2।।
नाग निकाला काष्ठ चिराकर, नागकुं कियो सुरपति अेक छीनमें.कोयल. ।।3।।
संयम लइ प्रभु विचरवा लाग्या, संयमे भींज गयो अेक रंगमें.कोयल. ।।4।।
समेतशिखर प्रभु मोक्ष सिधाव्या, पार्श्वजीको महिमातीन भुवनमें.कोयल. ।।5।।
उदयरतनकी अेही अरज है, दिल अटको तारा चरण कमल में.कोयल. ।।6।।

## 21.

हे प्रभु पार्श्व चिंतामणी मेरो मिल गयो हीरो,
मिट गयो फेरो, नाम जपुं नित्य तेरो हे प्रभु...
प्रीत बनी अब प्रभुजी शुं प्यारी, जैसे चंद चकोरो है प्रभु...
आनंधन प्रभु चरण शरण है, दीयो मोहे मुक्ति को डेरो...

## 22.

सुखदाइ रे सुखदाइ, दादो पासजी सुखदाइ,
ऐसो साहिब नहीं कोउ जगमें सेवा कीजे दिललाइ सुख... ।।1।।
सब सुखदायक ऐहिज नायक, एहि सहायक सुसहाई,
किंकर कुं करे शंकर सरिखो, आपे अपनी ठकुराई सुख... ।।2।।
मंगल रंग वधे प्रभु ध्याने, पाप वेली जाय करमाई,
शीतलता प्रगटे घट अंतर, मीटे मोह की गरमाई सुख... ।।3।।
किहाँ करुं सुरतरुं चिंतामणि को, जो में प्रभु सेवा पाई,
जसविजय कहे दर्शन देख्यो, घर आंगन नवनिधि आई सुख... ।।4।।

## 23.

प्यारो प्यारो रे हो वाला मारा, पास जिणंद मने प्यारो,
तारो तारो रे हो वाला मारा, भवना दुखडा वारो,
काशी देश वाराणसी नगरी, अश्वसेन कुल सोहीए रे,
पास जिणंदा वामा नंदा मारा वाला, देखत जन मन मोहीए,..प्यारो0।।1।।
छप्पन दिक्कुमरी मीली आवे, प्रभुजीने हुलरावे रे,
थेई थेई नाच करे मारा वाला, हरखे जिन गुण गावे, प्यारो0।।2।।
कमठ हठ गाल्यो प्रभु पार्श्वे, बलतो उगार्यो फणी नागरे,
दीयो सार नवकार नागकुं, धरणेन्द्र पद पायो, प्यारो0।।3।।
दीक्षा लई प्रभु केवल पायो, समवसरण में सोहायो रे,
दीए मधुरध्वनि देशना प्रभु, चौमुख धर्म सुहायो, प्यारो0।।4।।
कर्म खपावी शिवपुर जावे, अजरामर पद पावे रे,
ज्ञान अमृतरस फरसे मारा वाला, ज्योति से ज्योत मिलावे,..प्यारो0।।5।।

## 24.

अंतरजामी सुण अलवेसर, महिमा त्रिजग तुमारो रे,
सांभळीने आव्यो हुं तीरे, जन्म मरण दु:ख वारो,
सेवक अरज करे छे राज, अमने शिवसुख आपो ।।1।।
सहु कोनां मन वांछित पूरो, चिंता सहुनी चुरो रे,
एवुं बिरुद छे राज तमारूं, केम राखो छो दूरे, सेवक0 ।।2।।
सेवक ने वलवलतो देखी, मनमां महेर न धरशो,
करुणासागर केम कहेवाशो, जो उपकार न करशो सेवक0 ।।3।।
लटपटनुं हवे काम नहीं छे, प्रत्यक्ष दरिशन दीजे रे,
धुमाडे धीजुं नहीं साहिब, पेट पड्यां पतीजे सेवक0 ।।4।।
श्री शंखेश्वर मंडण साहेब, विनतडी अवधारो रे,
कहे *जिनहर्ष* मया करी मुजने, भवसागरथी तारो सेवक0 ।।5।।

# 1. महावीर स्वामी

गिरुआरे गुण तुम तणा, श्री वर्धमान जिनराया रे,
सुणतां श्रवणे अमी झरे, मारी निर्मल थाये काया रे गिरुआ0 ।।1।।
तुम गुण गण गंगाजले, हुं झीलीने निर्मल थाउं रे,
अवर न धंधो आदरुं, निश दिन तोरा गुण गांउ रे गिरुआ0 ।।2।।
झील्या जे गंगाजले, ते छिल्लर जल नवी पेसेरे,
जे मालती फूले मोहीया, ते बावल जई नवी बेसे रे गिरुआ0 ।।3।।
एम अमे तुम गुण गोठशुं, रंगे राच्या ने वली माच्या रे,
ते केम पर सुर आदरे, जे परनारी वश राच्या रे गिरुआ0 ।।4।।
तुं गति तुं मति आशरो, तुं आलंबन मुझ प्यारो रे,
वाचक *यश* कहे माहरे, तु जीव जीवन आधारो रे गिरुआ0 ।।5।।

## 2.

माता त्रिशलानंद कुमार, जगतनो दीवो रे,
मारा प्राणतणो आधार, वीर घणुं जीवो रे,
आमलकी क्रीडाअे रमतां, हार्यो सुर प्रभु पामी रे,
सुणजो ने स्वामी अंतरजामी, वात कहुं शीर नामी रे जग0 ।।1।।
सुधर्म देवलोके रहेता, अमो मिथ्यात्व भराणां रे,
नागदेवनी पूजा करतां, शीर न धरी प्रभु आणा रे जग0 ।।2।।
अेक दिन इंद्र सभामां बेठा, सोहमपति अेम बोल रे,
धीरज बल त्रिभुवननुं नावे, त्रिशला बालक तोले रे जग0 ।।3।।
साचुं साचुं सहु सुर बोल्या, पण में वात न मानी रे,
फणिधर ने लघु बालक रूपे, रमत रमीयो छानी रे जग0 ।।4।।
वर्धमान तुम धीरज मोटुं, बलमां पण नहि काचुं रे,
गिरूआना गुण गिरूआ गावे, हवे में जाण्युं साचुं रे जग0 ।।5।।

अेकज मुष्ठि प्रहारे मारुं, मिथ्यात्व भाग्युं जाय रे,
केवल प्रगटे मोहरायने, रहेवानुं नहि थाय रे जग0 ।।6।।
आज थकी तुं साहिब मारो, हुं छुं सेवक ताहरो रे,
क्षण अेक स्वामी गुण न विसारूं, प्राण थकी तुं प्यारो रे जग0 ।।7।।
मोह हरावे समकित पावे, ते सुर स्वर्ग सिधावे रे,
महावीर प्रभु नाम धरावे, इंद्रसभा गुण गावे रे जग0 ।।8।।
प्रभु मलपंता निज घर आवे, सरखा मित्र सोहावे रे,
श्री शुभवीरनुं मुखडुं नीरखी, माताजी सुख पावे रे जग0 ।।9।।

## 3.

रूडी ने रढीयाळी रे, वीर तारी देशना रे,
ए तो भली योजनमां संभळाय, समकित बीज आरोपण थाय. रूडी ने0 ।।1।।
षट् महिनानीरे भूख तरस शमे रे, साकर द्राख ते हारी जाय,
कुमतिजनना मद मोडाय. रूडी ने0 ।।2।।
चार निक्षेपे रे सात नये करी रे, मांहे भली सप्तभंगी विख्यात,
निज निज भाषाए समजाय. रूडी ने0 ।।3।।
प्रभुजीने ध्यातां रे शिवपदवी लहे रे, आतम ऋद्धिनो भोक्ता थाय,
ज्ञानमां लोकालोक समाय. रूडी ने0 ।।4।।
प्रभुजी सरिखा रे देशक को नहि रे, एम सहु जिन उत्तम गुण गाय,
ज्ञानमां लोकालोक समजाय. रूडी ने0 ।।5।।

## 4.

(राग : रीझो रीझो.../तेरा मेरा प्यार अमर...ओ गुरुदेव ! ओ गुरुदेव !...)
दीठो रे दीठो त्रिशलानो नंदन दीठो...दीठो रे दीठो,
शासननायक वीर जिनेश्वर, निरखत अमीय पईठो रे... दीठो० ।।1।।
शूलपाणी सुर समता धार्यो, तें चमराने उगार्यो रे,
श्रेणिकने निज पदवी दीधी, चंडकोशीयो तार्यो रे... दीठो० ।।2।।

इन्द्रभूति अभिमान उतारी, कीधो निज पट्टधारी रे,
अडदतणा बाकुला लईने, चंदनबाला तारी रे... दीठो०।।3।।
मेघकुमार मुनि स्थिर कीनो, संयम शमरस भीनो रे,
रोहीणीयो हणीयो नहीं अभये, जे तुज वयणे लीनो रे... दीठो०।।4।।
शिवसुख दायक भवदुःख वारक, तारक तुं प्रभु मलीयो रे,
'ज्ञानविमल' श्री वीरजिनेश्वर, दर्शने सुरतरु फलीयो रे...दीठो०।।5।।

## 5.

(राग : मारा मनमां पधारो...आवो ने...आवो ने...)

वीर वहेला आवोने, गौतम कही बोलावो ने,
दरिशण वहेला दीजीए, होजी...हो दरिशण वहेला दीजीए होजी...!
प्रभु ! तुं निःस्नेही, हुं ससनेही अजाण रे... वीर०।।1।।
गौतम भणे भो नाथ में, विश्वांस आपी छेतर्यो,
परगाम मुजने मोकली, तुं मुक्ति रमणीने वर्यो,
हे जिनजी ! तारा, गुप्त भेदोथी अजाण रे... वीर०।।2।।
शिवनगर हतुं शुं सांकडुं के, हती नहीं मुज योग्यता,
जो कह्युं होत मुजने तो, कोण कोईने रोकता,
हे प्रभुजी ! हुं शुं, मागत भाग सुजाण रे... वीर०।।3।।
मम प्रश्नना उत्तर देइ, गौतम कही कोण बोलावशे,
कोण करशे सार संघनी,ने शंका बिचारी क्यां जशे ?
हे ! पुण्य कथा कही, पावन करो मम कान रे... वीर०।।4।।
जिन भाण अस्त थतां तिमिर, मिथ्यात्व सघले व्यापशे,
कुमति कौतुक जागशे ने, चोर चुंगल वधी जशे,
हे ! त्रिगडे बेसी, देशना द्यो जगभाण रे... वीर०।।5।।
मुनि चौद सहस छे ताहरे ने, माहरे वीर तुं एक छे,
टलवलतो मूकी गयां मुजने, क्यां तमारे टेक छे,
प्रभु ! स्वप्नांतरमां, अंतर न धर्यो सुजाण रे... वीर०।।6।।

पण हुं आज्ञावाट चाल्यो, नथी मल्यो आ अवसरे,
हुं रागवश रखडुं निरागी, वीर शिवपुर संचरे,
हुं वीर ! वीर ! करुं, वीर न धरे कांई कान रे... वीर० ।।7।।
कोण वीर ने कोण गौतम, नहीं कोई कोईनुं कदा,
ए राग ग्रंथी तूटतां, वर-ज्ञान गौतमने थतां,
हे सुरतरू सुरमणि ! गौतम नामे निधान रे... वीर० ।।8।।

## 6.

(राग : देख तेरे संसारकी...)

दीन दु:खीयानो तुं छे बेली, तुं छे तारणहार,
तारा महिमानो नहि पार, तारा महिमानो नहि पार,
राज पाट ने वैभव छोडी, छोडी दीधो संसार,तारा महिमा0 ।।1।।
चंडकोशीयो डसियों ज्यारे, दूधनी धारा पगथी नीकळे,
विष ने बदले दूध जोइने, चंडकोशीयो आव्यो शरणे,
चंडकोशीया ने तें तारी, कीधो घणो उपकार.तारा महिमा0 ।।2।।
कानमां खीला ठोक्या ज्यारे, थइ वेदना प्रभुने भारे,
तोय प्रभुजी शांत विचारे, गोवालनो नहीं वांक लगारे,
क्षमा आपीने ते जीवोनो, तारी दीधो संसार, तारा महिमा0 ।।3।।
महावीर महावीर गौतम पोकारे, आंखोथी आंसुनी धारा वहावे,
क्यां गया अेकला छोडी मुजने, हवे नथी कोइ जगमां मारे,
पश्चात्ताप करतां करतां, उपन्युं केवळ ज्ञान, तारा महिमा0 ।।4।।
ज्ञान विमळ गुरू वयणे आजे, गुण तमारा हरखे गावे,
थइने सुकानी तुं प्रभु आवे, भवजल नैया पार करावे,
अरज स्वीकारी दिलमां धारी, करुं हुं वंदना वारंवार, तारा महिमा0 ।।5।।

## 7.

वीर जिणंद जगत उपकारी, मिथ्या घाम निवारीजी,
देशना अमृत धारा वरसी, परपरिणति सवि वारीजी.वीर जिणंद० ।।1।।
पांचमे आरे जेहनुं शासन, दोय हजार ने चारजी,
युग प्रधान सूरीश्वर वहेशे, सुविहित मुनि आधारजी.वीर जिणंद० ।।2।।
उत्तम आचारज मुनि अज्जा, श्रावक श्राविका अच्छजी,
लवण जलधिमांहे मीठुं, जळ पीवे शृंगी मच्छजी.वीर जिणंद० ।।3।।
दस अच्छे रे दुषित भरते, बहु मतभेद कराळ जी,
जिनकेवळी पूरवधर विरहे, फणीसम पंचम काळजी.वीर जिणंद० ।।4।।
तेहनुं झेर निवारण मणिसम, तुज आगम तुज बिंबजी,
निशि दीपक प्रवहण जिम दरिये, मरुमां सुरतरु लुंबजी.वीर जिणंद० ।।5।।
जैनागम वक्ताने श्रोता, स्याद्वाद शुचि बोधजी,
कळिकाले पण प्रभु तुज शासन, वरते छे अविरोधजी.वीर जिणंद० ।।6।।
माहरे तो सुषमाथी दुषमा, अवसर पुन्य निधानजी,
खिमाविजय जिनवीर सदागम, पाम्यो सिद्धि निदानजी.वीर जिणंद० ।।7।।

## 8.

सिद्धारथना रे नंदन विनवुं, विनतडी अवधार,
भवमंडपमां रे नाटक नाचियो, हवे मुज दान देवराव,
हवे मुज पार उतार... सिद्धारथ0 ।।1।।
त्रण रतन मुज आपो तातजी, जेम नावे रे संताप,
दान दीयंता रे प्रभु कोसर कीसी, आपो पदवी रे आप, सिद्धारथ0 ।।2।।
चरण अंगुठे रे मेरु कंपावीयो, मोड्यां सुरना रे मान,
अष्ट करमना रे झगडा जीतवा, दीधां वरसी रे दान, सिद्धारथ0 ।।3।।
शासन नायक शिवसुख दायक, त्रिशला कुखे रतन,
सिद्धारथनो रे वंश दीपावीयो, प्रभुजी तुमे धन्य धन्य, सिद्धारथ0 ।।4।।

वाचक शेखर कीर्तिविजय गुरु, पामी तास पसाय,
धर्म तणा ए जिन चौवीशमा, *विनय विजय* गुण गाय सिद्धारथ0 ।।5।।

## 9.

माता त्रिशला झुलावे पुत्र पारणे रे,
गावे हालो हालो हालरूवाना गीत,
सोना रूपा ने वळी रत्ने जडियुं पारणुं रे,
रेशम दोरी घुघरी वागे छुम छुम रीत,
हालो हालो हालो हालो मारा नंदने रे ।।1।।

जिनजी पास प्रभुथी वरस अढीसे अंतरे,
होशे चोवीशमो तीर्थंकर जिन परिणाम,
केशी स्वामी मुखथी अेहवी वाणी सांभळी,
साची साची हुई ते म्हारे अमृत वाण हालो0 ।।2।।

चौदे स्वप्ने होवे चक्री के जिनराज,
वीत्या बारे चक्री नहीं हवे चक्रीराज,
जिनजी पास प्रभुना श्री केशी गणधार,
तेहने वचने जाण्या चोवीशमां जिनराज हालो0 ।।3।।

म्हारी कुखे आव्या त्रण भुवन शिरताज,
म्हारी कुखे आव्या तरण तारण जहाज,
म्हारी कुखे आव्या संघ तीरथनी लाज,
हुं तो पुन्य पनोती इंद्राणी थइ आज हालो0 ।।4।।

मुजने दोहला उपन्या बेसुं गज अंबाडीअे,
सिंहासन पर बेसु चामर छत्र धराय,
अे सहु लक्षण मुजने नंदन त्हारा तेजनां,
ते दिन संभारूं ने आनंद अंग न माय हालो0 ।।5।।

करतल पगतल लक्षण अेक हजार ने आठ छे,
तेहथी निश्चय जाण्या जिनवर श्री जगदीश,
नंदन जमणी जंघे लंछन सिंह बिराजतो,
में तो पहेलां स्वप्ने दीठो विशवा वीश हालो0 ।।6।।

नंदन नवला बंधव नंदिवर्धनना तमे,
नंदन भोजाइओना दीयर छो सुकुमाळ,
हसशे भोजाइओ कही दीयर मारा लाडका
हसशे रमशे ने वळी चूंटी खणशे गाल,
हसशे रमशे ने वळी ठुंसा देशे गाल. हालो0 ।।7।।

नंदन नवला चेडा राजाना भाणेज छो,
नंदन नवला पांचशे मामीना भाणेज छो,
नंदन मामलीयाना भाणेजा सुकुमाळ,
हसशे हाथे उछाळी कहीने न्हाना भाणेजा,
आंखों आंजीने वळी टपकुं करशे गाल. हालो0 ।।8।।

नंदन मामा मामी लावशे टोपी आंगलां,
रतने जडीआं झालर मोती कसबी कोर,
नीला पीळां ने वळी रातां सरवे जातिनां,
पहेरावशे मामी म्हारा नंद किशोर हालो0 ।।9।।

नंदन मामा मामी सुखलडी बहु लावशे,
नंदन गजुवे भरशे लाडुं मोतीचूर,
नंदन मुखडां जोइने लेशे मामी भामणां,
नंदन मामी कहेशे जीवो सुख भरपूर हालो0 ।।10।।

नंदन नवला चेडा मामानी साते सती,
म्हारी भत्रीजी ने ब्हेन तमारी नंद,
ते पण गजवे भरवा लाखणसाइ लावशे,
तमने जोइ जोइ होशे अधिको परमानंद हालो0 ।।11।।

रमवा काजे लावशे लाख टकानो घूघरो,
वळी सुडा मेना पोपट ने गजराज,
सारस कोयल हंस तीतर ने वळी मोरजी,
मामी लावशे रमवा नंद तमारे काज. हालो0 ।।12।।
छप्पन कुमरी अमरी जल कळशे नवरावीआ,
नंदन तमने अमने वेगली धरनी मांही,
फुलनी वृष्टि कीधी योजन अेकने मांडले,
बहु चिरंजीवो आशिष दीधी तुमने त्यांही हालो0 ।।13।।
तमने मेरूगिरि पर सुरपतिअे नवरावीआ,
निरखी निरखी हरखी सुकृत लाभ कमाय,
मुखडा उपर वारू कोटी कोटी चंद्रमां,
वळी तन पर वारू ग्रहगणनो समुदाय हालो0 ।।14।।
नंदन नवला भणवा निशाळे पण मूकसुं,
गजपर अंबाडी बेसाडी म्होटे साज,
पसली भरशुं श्रीफळ फोफळ नागरवेलशुं,
सुखलडी लेशुं निसाळीयाने काज हालो0 ।।15।।
नंदन नवला म्होटा थाशे ने परणावीशुं,
वहुवर सरखी जोडी लावशुं राजकुमार,
सरखे सरखा वेवाइ वेवाणोने पधरावशुं,
वरवहु पोंखी लेशुं जोइ जोईने देदार हालो0 ।।16।।
पीयर सासर म्हारा बेहु पख नंदन उजळा,
मारी कूखे आव्या तात पनोता नंद,
म्हारे आंगण वुठ्या अमृत दुधे मेहुला,
म्हारे आंगण फलीआ सुरतरू सुखना कंद हालो0 ।।17।।
इणि परे गायुं माता त्रिशला सुतनुं पारणुं,
जे कोइ गाशे लेशे पुत्र तणा साम्राज,

बीलीमोरा नगरे वरणव्युं वीरनुं हालरडुं,
जय जय मंगल होजो *दीपविजय* कविराज हालो0 ।।18।।

## 10. श्री महावीर स्वामी के सत्ताइस भव का पांच ढाल का स्तवन

### कुल ढाळ-5

### दोहे

श्री शुभविजय सुगुरू नमी, नमी पद्मावती माय,
भव सत्तावीश वर्णवुं, सुणतां समकित थाय ।।1।।
समकित पामे जीवने, भव गणती ए गणाय,
जो वळी संसारे भमे, तो पण मुगते जाय ।।2।।
वीर जिनेश्वर साहिबो, भमियो काळ अनंत,
पण समकित पाम्या पछी, अंते थया अरिहंत ।।3।।

### ढाळ पहली

(कपुर होय अति उजळो रे...ए देशी)

पहेले भवे एक गामनो रे, राय नामे नयसार,
काष्ट लेवा अटवी गयो रे, भोजन वेळा थाय रे.
प्राणी, धरीये समकित रंग, जिम पामिये सुख अभंग रे. प्राणी0 ।।1।।
मनचिंते महिमा नीलो रे, आवे तपसी कोय,
दान दइ भोजन करुं रे, तो वांछित फळ होय रे. प्राणी0 ।।2।।
मारग देखी मुनिवरा रे, वंदे देइ उपयोग,
पूछे केम भटको इहां रे, मुनि कहे साथ विजोग रे. प्राणी0 ।।3।।
हरख भरे तेडी गयो रे, पडिलाभ्या मुनिराज,
भोजन करी कहे चालीए रे, साथ भेळा करुं आज रे. प्राणी0 ।।4।।

पगवतीए भेळा कर्यां रे, कहे मुनि द्रव्य ए मार्ग,
संसारे भूला भमो रे, भाव मारग अपवर्ग रे, प्राणी0 ।।5।।
देव गुरू ओळखावीया रे, दीधो विधि नवकार,
पश्चिम महाविदेहमां रे, पाम्यो समकित सार रे. प्राणी0 ।।6।।
शुभ ध्याने मरी सुर हुओ रे, पहेलां स्वर्ग मझार,
पल्योपम आयु चवी रे, भरत घरे अवतार रे. प्राणी0 ।।7।।
नामे मरीची जोबने रे, संयम लीए प्रभु पास,
दुष्कर चरण लही थयो रे, त्रिदंडिक शुभ वास रे. प्राणी0 ।।8।।

## ढाळ दूसरी

(विवाहलानी-ए देशी)

नवो वेष रचे तेणी वेळा, विचरे आदीसर भेळा,
जळ थोडे स्नान विशेष, पग पावडी भगवे वेष ।।1।।
धरे त्रिदंड लाकडी मोटी, शिर मूंडण न धरे चोटी,
वळी छत्री विलेपन अंगे, थुलथी व्रत धरतो रंगे ।।2।।
सोनानी जनोइ राखे, सहुने मुनि मारग भाखे,
समोवसरणे पूछे नरेश, कोइ आगे होसे जिनेश ।।3।।
जिन जंपे भरतने ताम, तुज पुत्र मरीचि नाम,
वीर नामे थशे जिन छेल्ला, आ भरते वासुदेव पहेला ।।4।।
चक्रवर्ति विदेहे थाशे, सुणी आव्या भरत उल्लासे,
मरिचीने प्रदक्षिणा देता, नमी वंदी ने एम कहेता. ।।5।।
तमे पुन्याइवंत गवाशो, हरि चक्री चरम जिन थाशो,
नवि वंदु त्रिदंडिक वेष, नमु भक्तिये वीर जिनेश. ।।6।।
एम स्तवना करी घर जावे, मरिची मन हर्ष न मावे,
म्हारे त्रण पदवीनी छाप, दादा जिन चक्री बाप ।।7।।
अमे वासुदेव धूर थइशुं, कुळ उत्तम महारुं कहीशुं,
नाचे कुळ मदशुं भराणो, नीच गोत्र तिहां बंधाणो ।।8।।

एक दिन तनु रोगे व्यापे, कोइ साधु पाणी न आपे,
त्यारे वंछे चेलो एक, तव मळियो कपिल अविवेक ।।9।।
देशना सुणी दीक्षा वासे, कहे मरिची लीयो प्रभु पासे
राज पुत्र कहे तुम पासे, लेशुं एम दीक्षा उल्लासे ।।10।।
तुम दरशने धरमनो व्हेम, सुणी चिंते मरिची एम
मुज योग्य मळ्यो ए चेलो, मूळ कडवे कडवो वेलो ।।11।।
मरिची कहे धर्म उभयमां, लीए दीक्षा जोबन वयमां,
एणे वचने वध्यो संसार, ए त्रीजो कह्यो अवतार ।।12।।
लाख चोराशी पूरव आय, पाळी पंचमे स्वर्ग सधाय,
दश सागर जीवित त्यांही, शुभवीर सदा सुख मांही ।।13।।

## ढाळ तीसरी

(चोपाइनी देशी)

पांचमे भव कोल्लाग सन्निवेश, कौशिक नामे ब्राह्मण वेष,
ऐंशी लाख पूरव अनुसरी, त्रिदंडीया ने वेषे मरी ।।1।।
काळ बहु भमीयो संसार, थुणापुरी छठ्ठो अवतार,
बहोंतेर लाख पूरवनुं आय, विप्र त्रिदंडीक वेष धराय ।।2।।
सौधर्मे मध्य स्थितिये थयो, आठमे चैत्य सन्निवेशे गयो,
अग्निद्योत द्विज त्रिदंडीयो, पूर्व आयु लख साठे मूओ ।।3।।
मध्य स्थितिये सुर स्वर्ग इशान, दशमे मंदिर पुर द्विज ठाण,
लाख छप्पन पूरवा पूरी, अग्निभूति त्रिदंडीक मरी ।।4।।
त्रीजे सरग मध्यायु धरी, बारमे भव श्वेतांबीपुरी,
पुरव लाख चुम्माळीश आय, भारद्विज त्रिदंडीक थाय ।।5।।
तेरमे चोथे सर्गे रमी, काळ घणो संसारे भमी,
चउदमे भव राजगृही जाय, चोत्रीश लाख पूर्वने आय ।।6।।
थावर विप्र त्रिदंडी थयो, पांचमे सर्गे मरीने गयो,
सोळमे भव क्रोड वरस समया, राजकुमार विश्वभूति थाय ।।7।।

संभूतिमुनि पासे अणगार, दुक्कर तप करी वरस हजार,
मासखमण पारण धरी दया, मथुरामां गौचरी ए गया ।।8।।
गाये हण्या मुनि पडिया वशा, विशाखनंदी पितरीयो हस्या,
गौशृंगे मुनि गर्वे करी, गयण उछाळी धरती धरी ।।9।।
तप बळथी होज्यो बळ घणी, करी नियाणुं मुनि अणसणी,
सत्तरमें महाशुक्रे सुरा, श्री शुभवीर सत्तर सागरा ।।10।।

## ढाळ चोथी

(नदी यमुना के तीर, उडे दोय पंखीयां-ए देशी)

अढारमें भवे सात सुपने सुचित सति, पोतन पुरीये प्रजापति राणी मृगावती,
तस सुत नामे त्रिपृष्ठ वासुदेव निपन्या, पाप घणुं करी सातमी नरके उपन्या ।।1।।

वीशमें भव थइ सिंह चोथे नरके गया, तिहांथी चवी संसारे भव बहुळा थया,
बावीशमें नरभव लइ पुण्य दशा वर्या, त्रेवीशमें राज्यधानी मुकामे संचर्या ।।2।।

राय धनंजय धारणी राणीये जनमीया, लाख चोराशी पूरव आयु जीवीया,
प्रिय मित्र नामे चक्रवर्ती दीक्षा ग्रही, लाख चोराशी दशा पाळी सही ।।3।।

महाशुक्र थइ देव इणे भरते चवी, छत्रिका नगरी ये जितशत्रु राजवी,
भद्रा माय लाख पचवीश वरस स्थिति धरी, नंदन नामे पुत्रे दीक्षा आचरी ।।4।।
अगियार लाख ऐंसी हजार छस्से वळी, उपर पीस्ताळीस अधिक पण दिन रूडी
वीशस्थानक मासखमणे जाव जीव साधता, तीर्थंकर नाम कर्म तिहां निकाचता ।।5।।
लाख वरस दीक्षा पर्याय ते पाळता, छव्वीश में भव प्राणत कल्पे देवता,
सागर वीशनु जीवीत सुख भर भोगवे, श्री शुभवीर जिनेश्वर भवसुणजो हवे ।।6।।

## ढाळ पांचमी

(गजरा मारूजी चाल्या चाकरी रे-ए देशी)

नयर माहणकुंडमां वसे रे, महाऋद्धि ऋषभदत्त नाम,
देवानंद द्विज श्राविका रे, पेट लीधो प्रभु विसराम रे (2) ।।1।।

ब्यासी दिवसने अंतरे रे, सुर हरिणगमेषी आय,
सिद्धारथ राजा घरे रे, त्रिशला कुखे छटकाय रे (2) ।।2।।
नव मासांतरे जनमीया रे, देव देवीये ओच्छव कीध,
परणी यशोदा जोबने रे, नामे महावीर प्रसिद्ध रे नामे0।।3।।
संसार लीला भोगवी रे, त्रीश वर्षे दीक्षा लीध रे,
बार वरसे हुआ केवळी रे, शिव वहुनुं तिलक शिर दीध रे. शिव0।।4।।
संघ चतुर्विध थापीओ रे, देवानंदा ऋषभदत्त प्यार,
संयम देइ शिव मोकल्यां रे, भगवती सूत्रे अधिकार रे भग0 ।।5।।
चोत्रीश अतिशय शोभता रे, साथे चउद सहस अणगार,
छत्रीश सहस ते साधवी रे, बीजा देव देवी परिवार रे बीजा0 ।।6।।
त्रीश वरस प्रभु केवळी रे, गाम नगर ते पारन कीध,
ब्होंतेर वरसनुं आउखुं रे, दिवाळीए शिवपद लीध रे दिवा0 ।।7।।
अगुरूलघुं अवगाहने रे, कीयो सादि अनंत निवास,
मोहराय मल्ल मुळशुं रे, तनमन सुखनो होय नाश रे तन0 ।।8।।
तुम सुख एक प्रदेशनुं रे, नवि मावे लोकाकाश,
तो अमोने सुखीया करो रे, अमे धरीये तुमारी आश रे अमे0 ।।9।।
अखय खजानो नाथनो रे, में दीठो गुरू उपदेश,
लालच लागी साहिबा रे, नवि भजीए कुमतिनो लेश रे नवि0।।10।।
म्होटानो जे आशरो रे, तेथी पामीये लील विलास,
द्रव्य भाव शत्रु हणी रे, शुभवीर सदा सुख वास रे शुभ0।।11।।

## कळश

ओगणीश एके वरस छे के, पूर्णिमा श्रावण वरो,
नमे थुण्यो लायक विश्वनायक, वर्धमान जिनेश्वरो,
संवेग रंग तरंग झीले, जस विजय समता धरो,
शुभ विजय पंडित चरण सेवक, *वीरविजय* जय जय करो

# 11. महावीर स्वामी के पंचकल्याणक का स्तवन

## कुल ढाळ-3

शासन नायक शिवकरण, वंदुं वीरजिणंद,
पंच कल्याणक जेहना, गाशुं धरी आनंद ।।1।।
सुणतां थुणतां प्रभुतणा, गुण गिरूआ एकतार,
ऋद्धि वृद्धि सुख संपदा, सफळ हुए अवतार ।।2।।

## ढाळ पहेली

सांभळजो ससनेही सयणां, प्रभुना चरित्र उल्लासे रे,
जे सांभळशे प्रभु गुण तेनां, समकित निर्मळ थाशे रे,
सांभळजो ससनेही प्यारा ।।1।।
जंबुद्वीपे दक्षिण भरते, माहणवुंड गामे रे,
ऋषभदत्त ब्राह्मण तस नारी, देवानंदा नामे रे सां0।।2।।
अषाड शुदी छठ्ठ प्रभुजी, पुष्पोत्तरथी च्यवीया रे,
उत्तरा फाल्गुनी योगे आवी, तस कुखे अवतरीया रे सां0।।3।।
तिण रयणी या देवानंदा, सुपन गजादिक निरखे रे,
प्रभाते सुणी कंथ ऋषभदत्त, हैडामांही हरखे रे सां0।।4।।
भाखे भोग अर्थ सुख होशे, होशे पुत्र सुजाण रे,
ते निसुणी सा देवानंदा, कीधुं वचन प्रमाण रे सां0।।5।।
भोग भला भोगवता विचरे, ए हवे अचरिज होवे रे,
शतकृत जीव सुरेसर हरख्यो, अवधि प्रभुने जोवे रे सां0।।6।।
करी वंदन ने इंद्र सन्मुख, सात आठ पग आवे रे,
शक्रस्तव विधि सहित भणीने, सिंहासन सोहावे रे सां0।।7।।
संशय पडीयो एम विमासे, जिन चक्री हरि हाम रे,
तुच्छ दारिद्र माहणकुल नावे, उग्रभोग विण धाम रे सां0।।8।।

अंतिम जिन माहणकुल आव्या, एह अच्छेरू कहीए रे,
उत्सर्पिणी अवसर्पिणी अनंती, जातां एवुं लहीए रे सां0।।9।।
इण अवसर्पिणी दश अच्छेरां, थयां ते कहीए तेह रे,
गर्भ हरण गोशाला उपसर्ग, निष्फळ देशना जेह रे. सां0।।10।।
मूळ विमाने रवि शशी आव्या, चमरानो उत्पात रे,
ए श्री वीरजिनेश्वर वारे, उपन्या पंच विख्यात रे सां0।।11।।
स्त्री तीर्थ मल्लीजिन वारे, शीतलने हरिवंश रे,
ऋषभने अठ्ठोतेरसो सिध्या, सुविधि असंजती संस रे सां0।।12।।
शंख शब्द मिलिया हरि हरस्यु, नेमिसरने वारे रे,
तेम प्रभु नीच कुले अवतरीया, सुरपति एम विचारे रे सां0।।13।।

## ढाळ बीजी

भव सत्तावीश स्थूलमांही त्रीजे भवे, मरिची कीयो कुळमद भरत यदा स्तवे,
नीच गोत्रकर्म बांध्युं तिहां ते थकी, अवतरीया माहणकुळे अंतिम जिनपति ।।1।।
अति अघटतु एह थयुं थाशे नहि, जे प्रसवे जिन चक्री नीचकुळे नहीं,
इहां मारो आचार धरूं उत्तम कुळे, हरिणगमेषी देव तेडावे एटले ।।2।।
कहे माहणकुंड नयरे जइ उचित करो, देवानंदा कुखेथी प्रभुने संहरो,
नयर क्षत्रियकुंड राय सिद्धारथ गेहिनी, त्रिशला नामे धरो प्रभु कुखे तेहनी ।।3।।
त्रिशला गर्भ लइने धरो माहणी उरे, ब्यासी रात वसीने कह्युं, तिम सुर करे,
माहणी देखे सुपन जाणे त्रिशला हर्या, त्रिशला सुपन लहे तव चौद अलंकर्या ।।4।।
हाथी, वृषभ, सिंह, लक्ष्मी माला सुंदरुं, शशी रवि ध्वज कुंभ पद्मसरोवर सागरुं,
देव विमान रयणपुंज अग्नि विमले, हवे देखे त्रिशला एह के पिउने विनवे ।।5।।
हरख्यो राय सुपन पाठक तेडावीया, राजभोग सुतफळ सुणी तेह वधावीया,
त्रिशला राणी विधिशुं गर्भ सुखे वहे, माय तणे हित हेत के प्रभु निश्चल रहे ।।6।।
माय धरे दु:ख जोर, विलाप घणो करे, कहे में कीधां पाप अघोर भवांतरे,
गर्भ हर्यो मुज केणे हवे केम पामीए, दु:खनुं कारण जाणी विचार्युं स्वामी ए ।।7।।

अहो ! अहो ! मोह विटंबण जालम जगत में, अणदीठे दु:ख एवडो उपायो पलक में,
ताम अभिग्रह धारे प्रभु ते कहुं, मातपिता जीवतां हुं संयम नवि ग्रहुं ।।8।।
करूणा आणी अंग हलाव्युं जिनपति, बोली त्रिशला मात हैये घणुं हिसती,
अहो मुज भाग्य जाग्यां गर्भ मुज सल सल्यो, सेव्यो श्री जिनधर्म के सुरतरू जिम फळ्यो ।।9।।
सखीय कहे शिखामण स्वामिनी सांभळो, हळवे हळवे बोलो हसो रंगे चलो,
इम आनंदे विचरता दोहला पुरते, नव महिना ने साडा सात दिवस थते ।।10।।
चैत्र तणी सुद तेरस नक्षत्र उत्तरा, जोगे जन्म्या वीर के तव विकसी धरा,
त्रिभुवन थयोरे उद्योत के रंग वधामणां, सोना रूपानी वृष्टि करे घेर सुर घणा ।।11।।
आवी छप्पन कुमारी के ओच्छव प्रभु तणे, चल्युं रे सिंहासन इंद्र के घंटा रणझणे,
मळी सुरनी क्रोडके सुरवर आवीयो, पंच रूप करी प्रभुने सुरगिरि लावीयो ।।12।।
एक क्रोड साठ लाख कळश जळ शुं भर्यां, किम सहेशे लघु वीर के इंद्र संशय धर्या,
प्रभु अंगुठे मेरू चांप्यो अति घडघडे, गडगडे पृथ्वीलोक जगतना लडथडे ।।13।।
अनंत बळ जाणी प्रभुने इंद्रे खमावीया, चार वृषभना रूप करी जळ नामीआ,
पूजी अर्ची प्रभुने माया पास धरे, धरी अंगुठे अमृत गया नंदीश्वरे।।14।।

## ढाळ त्रीजी

करी महोच्छव सिद्धारथ भूप, नाम धरे वर्धमान,
दिन दिन वाधे प्रभु सुरतरू जिम, रूप कला असमान रे हम0।।1।।
एक दिन प्रभुजी रमवा कारण, पुर बाहिर जब जावे,
इंद्र मुखे प्रशंसा सुणी तिहां, मिथ्यात्वी सुर आवे रे हम0।।2।।
अहिरूपे विंटाणो तरु शुं, प्रभु नांख्यो उछाळी,
सात ताडनुं रूप कर्युं तव, मुंठे नांख्यो वाळी रे हम0।।3।।
पाये लागीने ते सुर खामे, नाम धरे महावीर,
जेवो इन्द्र वखाण्यो स्वामी, तेवो साहस धीरे रे हम0।।4।।
माता पिता निशाळे मूके, आठ वरसना जाणी,
इंद्रतणा तिहां संशय टाळ्या, नव व्याकरण वखाणी रे हम0।।5।।

अनुक्रमे यौवन पाम्या प्रभुजी, वर्या यशोदा राणी,
अठ्ठावीश वर्षे प्रभुना, मात पिता निर्वाणी रे हम0।।6।।
दोय वरस भाइने आग्रह, प्रभु घरवासे वसीया,
धर्म पंथ देखाडो इम कहे, लोकांतिक उलसीया रे हम0।।7।।
एक क्रोड आठ लाख सोनैया, दिन दिन प्रभुजी आपे,
इम संवच्छरी दान देइने, जगना दारिद्र कापे रे हम0।।8।।
छोड्या राज अंतेउर प्रभुजी, भाइए अनुमति दीधी,
मागशीर वद दशमी उत्तराए, वीरे दीक्षा लीधी रे हम0।।9।।
चउनाणी ते दिनथी प्रभुजी, वरस दिवस झाझे रे,
चिवर अर्ध ब्राह्मणने दीधुं, खंड खंड बे फेरी रे हम0।।10।।
घोर परिषह साडा बारे, वरस जे जे सहीया,
घोर अभिग्रह जे जे धरिया, ते नवि जाये कहीया रे हम0।।11।।
शूलपाणी ने संगमदेवे, चंडकोशीक गोशाळे,
दीधुं दु:खने पायस रांधी, पग उपर गोवाळे रे हम0।।12।।
काने गोपे खीला मार्या, काढतां मूकी रांढी,
जे सांभळता त्रिभुवन कंप्या, पर्वतशिला फाटी रे हम0।।13।।
ते ते दुष्ट सहु उद्धरीया, प्रभुजी पर उपगारी,
अडद तणा बाकुला लइने, चंदनबाळा तारी रे हम0।।14।।
दोय छमासी नव चउमासी, अढीमासी त्रणमासी रे,
दोढ मासी बे बे कीधां, छ कीधां बे मासी रे हम0।।15।।
बार मास ने पख बहोतेर, छठ्ठ बसें ओगणत्रीस वखाणुं,
बार अठ्ठम भद्रादि प्रतिमा, दिन दोय चार दश जाणुं रे हम0।।16।।
इम तप कीधां बारे वरसे, विण पाणी उल्लासे,
तेमां पारणे प्रभुजीए कीधां, त्रणसे ओगणपचास रे हम0।।17।।
कर्म खपावी वैशाख मासे, सुद दशमी शुभ जाण,
उत्तरायोग शालिवृक्ष तळे, पाम्या केवळनाण रे हम0।।18।।

इन्द्रभूति आदि प्रतिबोध्या, गणधर पदवी दीधी,
साधु साधवी श्रावक श्राविका, संघ स्थापना कीधी रे हम0।।19।।
चउद सहस अणगार साधवी, सहस छत्रीश कहीजे,
एक लाख ने सहस ओगणसठ्ठ, श्रावक शुद्ध कहीजे रे हम0।।20।।
तीन लाख अढार सहस वळी, श्राविका संख्या जाणो,
त्रणशे चौदपूर्वधारी, तेरसे ओहिनाणी रे हम0।।21।।
सात सया ते केवलनाणी, लब्धिधारी पण तेता,
विपुल मतिया पांचशे कहीया, चारशे वादि जीत्या रे हम0।।22।।
सातसें अंतेवासी सिध्या, साध्वी चौदशे सार,
दिन दिन तेज सवाये दीपे, प्रभुजीनो परिवार रे हम0।।23।।
त्रीश वरस घरवासे वसीया, बार वरस छद्मस्थे,
तीश वरस केवल बेंतालीश, वरस समणामध्ये रे. हम0।।24।।
वरस बहोंतेर केरू आयु, वीर जीणंदनुं जाणो,
दिवाली दिन स्वाति नक्षत्रे, प्रभुजीनुं निर्वाण रे,
पंच कल्याणक एम वखाण्या, प्रभुजीना उल्लासे,
संघ तणो आग्रह हरखभरीने, सुरत रही चोमासुं रे.

### कळश

इम चरम जिनवर, सयल सुखकर, थुण्यो अति उलट धरी,
अषाढ उज्ज्वल पांचमी दिन, संवत सतर त्रीहोतरे,
भाद्रवा सुद पाडवा तणे दिन, रविवारे उलट भरे,
रामविजय जिनवर नामे, लहे अधिक जगशी ए.

## 1. सामान्य जिन स्तवन

आनंद की घडी आई, सखी री आज आनंद की घडी आई ।
करके कृपा प्रभु दरिसण दीनो, भव की पीड मीटाई,
मोहनिद्रा से जाग्रत करके, सत्य की बात सुनाई,
तन मन हर्ष न माई... सखी री0 ।।1।।

नित्यानित्य का भेद बताकर, मिथ्यादृष्टि हराई,
सम्यग्ज्ञान की दिव्यप्रभा को, अंतर में प्रगटाई,
साध्य साधन दिखलाई... सखी री0 ।।2।।
त्याग वैराग्य संयम के योग से, नि:स्पृह भाव जगाई,
सर्व संग परित्याग करा कर, अलख धुन मचाई,
अपगत दु:ख कहलाई... सखी री0 ।।3।।
अपूर्व करण गुणस्थानक सुखकर, श्रेणी क्षपक मंडवाई,
वेद तीनोंका छेद करा कर, क्षीणमोही बनवाई,
जीवन मुक्ति दिलाई... सखी री0 ।।4।।
भक्तवत्सल प्रभु करुणा सागर, चरण शरण सुखदाई,
जस कहे ध्यान प्रभु का ध्यावत, अजर अमर पद पाई,
द्वंद्व सकल मिट जाई... सखी री0 ।।5।।

## 2.

### (राग : हे दयाधन क्यारे जोशो)

अबोलडां शानां लीधां छे राज, जीव जीवन प्रभु म्हारा,
तमे अमारा अमे तमारा, वास निगोदमां रहेता, अबोलडां0
काल अनंत स्नेही प्यारा, कदीय न अंतर करता,
बादर स्थावरमां बेहु आपण, काल असंख्य निगमता. अबो0।।1।।
विकलेन्द्रियमां काल संख्याता, विसर्या नवि विसरता,
नरकस्थाने रह्या बेहु साथे, तिहां पण बेहु दु:ख सहतां अबो0।।2।।
परमाधामी सनमुख आपण, टग टग नजरे जोतां,
देवना भवमां एक विमाने, देवनां सुख अनुभवता. अबो0।।3।।
एकण पासे देवशय्यामां, थेइ थेइ नाटक सुणतां,
तिहां पण तमे अने अमे बेउ साथे, जिन जन्म महोत्सव करता अबो0।।4।।
तिर्यंच गतिमां सुख दु:ख अनुभवता, तिहां पण संग चलंता,
एक दिन तमे अने अमे बेउ साथे, वेलडीओ वळगीने फरता, अबो0।।5।।

एक दिन समवसरणमां आपण, जिन गुण अमृत पीता.
एक दिन तमे अने अमे बेउ साथे गेडी दडे नित्य रमता. अबो0।।6।।
तमे अने अमे बेउ सिद्ध स्वरुपी, एवी कथा नित्य करतां,
एक कुल गोत्र एक ठेकाणे, एकज थाळीमां जमता. अबो0।।7।।
एक दिन हुं ठाकोर तमे चाकर, सेवा माहरी करता,
आज तो आप थया जग ठाकोर, सिद्धि वधुना पनोता. अबो0।।8।।
काल अनंतनो स्नेह विसारी, काम कीधां मनगमता,
हवे अंतर कीम कीधुं प्रभुजी, चौद राज जइ पहोंत्या अबो0।।9।।
*दीपविजय* कविराज प्रभुजी, जगतारण जगनेता,
निज सेवकने यशपद दीजे, अनंत गुणी गुणवंता अबो0।।10।।

## 3. सामान्य जिन

(राग : मैं नहीं माखण.../चांदी की दिवार ना तोडी...)

थाशुं काम सुभट गयो हारी रें, थाशुं काम सुभट गयो हारी,
रतिपति आण वहे सौ सुर-नर, हरि हर ब्रह्म मुरारि रे...थाशुं...।।1।।
गोपीनाथ विगोपित कीनो, हर अर्धांगित नारी रे...थाशुं... ।।2।।
तेह अनंग कीयो चकचूरण, ए अतिशय तुज भारी रे...थाशुं... ।।3।।
ए साचुं जिम नीर-प्रभावे, अग्नि होत सवि छारी रे...थाशुं... ।।4।।
ते वडवानल प्रबल जब प्रगटे, तब पीवत सवि छारि रे...थाशुं...।।5।।
एणी परे ते अति दहवट कीनो, विषय अरति रति वारी रे...थाशुं...।।6।।
'नयविमल' प्रभु तुं ही निरागी, महा मोटो ब्रह्मचारी रे...थाशुं... ।।7।।

## 4. सामान्य जिन

(राग : तार मुज तार मुज.../ जय गणेश जय गणेश...)

आज जिनराज ! मुज काज सिध्यां सवे, विनति माहरी चित्त धारी,
मार्ग जो में लह्यो, तुज कृपारस थकी, तो हुई सम्पदा प्रगट सारी..।।1।।

वेगलो मत हुजे देव ! मुज मन थकी, कमलना वन थकी जिम परागो,
चमक पाषाण जिम लोहने खेंचशे, मुक्तिने सहज तुज भक्ति रागो..।।2।।
तुं वसे जो प्रभु ! हर्षभर हियडले, तो सकल पापना बंध तूटे,
उगते गगन सूरयतणे मण्डले, दह दिशि जिम तिमिर पडल फूटे..।।3।।
सींचजे तुं सदा विपुल करुणारसे, मुज मने शुद्ध मति कल्पवेली,
नाण दंसण कुसुम चरणवर मंजरी, मुक्ति फल आपशे ते अकेली..।।4।।
लोकसंज्ञा थकी लोक बहु वाउलो, राउलो दास ते सवि उवेखे,
एक तुज आणसुं जेह राता रहे, तेहने एह निज मित्र देखे.. ।।5।।
आण जिनभाण ! तुज एक हुं शिर धरुं, अवरनी वाणी नवि काने सुणीए,
सर्व दर्शन तणुं मूल तुज शासन, तेणे ते एक सुविवेक थुणीए.. ।।6।।
तुज वचन राग सुखसागरे हुं गणुं, सकल सुर मनुज सुख एक बिंदु,
सार करजे सदा देव ! सेवक तणी, तु सुमति कमलिनी वन दिणिंदु..।।7।।
ज्ञानयोगे धरी तृप्ति नवि लीजिये, गाजियें एक तुज वचनरागे,
शक्ति उल्लास अधिको होशे तुज थकी, तुं सदा सयल सुखहेतु जागे..।।8।।

## 5. श्री सामान्य जिन

आज माहरा प्रभुजी स्हामु जुओने, सेवक कहीने बोलावो रे,
ऐटले हुं मनगमतुं पाम्यो, रूठडा बाल मनावो, मोरा सांइ रे.आज0।।1।।
पतित पावन शरणागत वच्छल, ए जस जगमां चावो रे,
मन रे मनाव्या विण नवी मुकूं, एहिज माहरो दावो, मोरा. आज0।।2।।
कबजे आव्या हवे नहिं छोडुं, जिहां लगे तुम सम थावुं रे,
जो तुम ध्यान विना शिव लहीए, तेही ज दाव बतावो, मोरा.आज0।।3।।
महा गोप ने महानिर्यामक, एवा एवा बिरूद धरावो रे,
तो शुं आश्रितने उद्धरतां, घणुं घणुं शुं कहेवरावो मोरा सांइरे. आज0।।4।।
ज्ञान विमल गुणनो निधि महिमा, मंगल एहि वधावो रे,
अचल अभेदपणे अवलंबी, अहनिश एहि दिल ध्यावो, मोरा. आज0।।5।।

# 1. सीमंधर स्वामी

सुणो चंदाजी सीमंधर परमातम पासे जाजो,
मुज विनतडी प्रेम धरीने एणी पेरे तुमे संभळावजो,
जे त्रण भुवननो नायक छे, जस चोसठ इन्द्र पायक छे,
नाण दरिसन जेहने खायक छे, सुणो0।।1।।
जेनी कंचन वरणी काया छे, जस धोरी लंछन पाया छे,
पुंडरीकगिणि नगरीनो राया छे, सुणो0।।2।।
बार पर्षदा मांही बिराजे छे, जस चोत्रीश अतिशय छाजे छे,
गुण पांत्रीश वाणीअे गाजे छे, सुणो0।।3।।
भविजनने जे पडिबोहे छे, तुम अधिक शीतल गुण सोहे छे,
रुप देखी भविजन मोहे छे, सुणो0।।4।।
तुम सेवा करवा रसियो छुं, पण भरतमां दूरे वसीयो छुं,
महामोहराय कर फसियो छुं, सुणो0।।5।।
पण साहिब चित्तमां धरीयो छे, तुम आणा खडग कर ग्रहियो छे,
तो कांइक मुजथी डरीयो छे, सुणो0।।6।।
जिन उत्तम पूंठ हवे पूरो, कहे *पद्मविजय* थाउ शूरो,
तो वाधे मुज मन अति नूरो, सुणो0।।7।।

## 2.

विनंती माहरी रे, सुणजो साहिबा, सीमंधर जिनराज,
त्रिभुवन तारक अरज उरे धरो, देजो दरिशन आज ।।1।।
आप वस्या जइ क्षेत्र विदेहमां, हुं रहुं भरत मोझार
ए मेळो केम होय जगधणी, ए मुझ सबल विचार ।।2।।
वचमां वनद्रह पर्वत अति घणां, वळी नदीओना रे घाट,
कीणविध भेटुं रे आवी तुम कने, अति विषमी ए वाट ।।3।।

कीहां मुज दाहिण भरतक्षेत्र रहुं, कीहां पुक्खलवइ राज,
मनमां अलजो रे मळवानो अति घणो, भवजल तरणजहाज ।।3।।
निशदिन आलंबन मुज ताहरुं, तुं मुज हृदय मोझार,
भवदु:खभंजन तुं ही निरंजनो, करुणा रस भंडार ।।5।।
मनवांछित सुखसंपद पूरजो, चूरजो कर्मनी राश,
नितनित वंदन हु भावे करुं, एहीं ज छे अरदास ।।6।।
तात श्रेयांस नरेसर जगतिलो, सत्यकी राणीनो जात,
सीमंधर जिन विचरे महीतले, त्रण भुवनमां विख्यात ।।7।।
भवोभव सेवारे, तुम पदकमलनी, देजो दीनदयाल,
बे कर जोडी *उदयरतन* वदे, नेक नजरथी निहाळ ।।8।।

## 3.

तारी मूरतिअे मन मोह्युं रे मनना मोहनीया,
तारी सूरतिअे जग सोह्युं रे जगना जीवनीया,
तुम जोतां सवि दुरमति वीसरी, दिन रातडी नवि जाणी,
प्रभु गुणगण सांकळशुं बांध्युं, चंचळ चित्तडुं ताणी रे. मन0 ।।1।।
पहेला तो अेक केवल हरखे, हेजाळु थइ हळियो,
गुण जाणीने रूपे मिलीओ, अभ्यंतर जइ फळियो रे. मन0 ।।2।।
वीतराग इम जस निसुणीने, रागी राग करेह,
आप अरूपी राग निमित्ते, दास अरूप धरेह रे. मन0 ।।3।।
श्री सीमंधर तुं जगबंधु, सुंदर ताहरी वाणी,
मंदर भूधर अधिक धीरज धर, वंदे ते धन्य प्राणी रे. मन0 ।।4।।
श्री श्रेयांस नरेसर नंदन, चंदन शीतल वाणी,
सत्यकी माता वृषभलंछन प्रभु, *ज्ञानविमल* गुण खाणी रे. मन0 ।।5।।

## 4.

तमे महाविदेहमां जइने कहेजो चांदलीया ! सीमंधर तेडा मोकले,
मारा भरतक्षेत्रना दु:ख कहेजो चांदलीया ! सीमंधर तेडा मोकले,
अज्ञानता अहिं छवाइ रही छे, तत्वनी वात तो भूलाइ गई छे
हाँ रे एवा आत्माना दु:ख मारा, कहेजो चांदलिया, सीमंधर0।।1।।
पुद्गलना मोहमां फंसाइ गयो छुं, कर्मोनी जालमां जकडाइ गयो छुं,
हा रे एवा कर्मोना दु:ख मारा, कहेजो चांदलिया, सीमंधर0।।2।।
मारूं न हतुं तेने, मारूं कही मान्युं, मारुं हतुं तेने ना रे पिछान्युं,
हा रे एवा मूर्खताना दु:ख मारा, कहेजो चांदलिया, सीमंधर0।।3।।
सीमंधर सीमंधर हृदयमां धरतो, प्रत्यक्ष दर्शननी आशा हुं राखतो,
हा रे एवा वियोगना दु:ख मारा, कहेजो चांदलिया, सीमंधर0।।4।।
संसार नुं सुख मने कारमुं ज लागे, तारा विना कहुं वात कोनी आगे
हा रे एवा वीरविजयना दु:ख मारा कहेजो चांदलिया, सीमंधर0 ।।5।।

## 5.

(राग : जननीनी जोड.../फूल तुम्हें भेजा था...)

प्रभाते ऊठी करुं वंदना रे, प्रभाते ऊठी करुं वंदना रे...
बे कर जोडीने विनवुं रे, मारी विनतडी अवधार रे,
तमे महाविदेहमां वस्या रे, अमने छे तुम आधार रे... प्रभाते० ।।1।।
भरतक्षेत्रमां अवतर्यो रे, केम करी आवुं हजुर रे,
तुम दर्शन नवि पामीयो रे, रह्यो मजूरनो मजूर रे... प्रभाते० ।।2।।
तुम पासे देव घणा वसे रे, एक मोकलजो महाराज रे,
मननो संदेह प्रभु ! पूछीने रे, करुं सफल दिन आज रे... प्रभाते० ।।3।।
केवलज्ञानीना विरहथी रे, मनुष्य जन्म अेणे जाय रे,
शुभभाव आवे नहीं रे, शी गति महारी थाय रे... प्रभाते० ।।4।।

कर्मने मोहे खूब फश्यो रे, हजु न थयो खुलाश रे,
जेम तेम करी प्रभु तारजो रे, हुं धरुं तमारी आश रे... प्रभाते० ।।5।।
सीमंधरस्वामिना नामथी रे, थाय सफल अवतार रे,
'उदयरत्न' एम विनवे रे, प्रभु नामे जय जयकार रे... प्रभाते० ।।6।।

## 6.

पुक्खलवई विजये जयो रे, नयरी पुंडरीगिणी सार,
श्री सीमंधर साहिबा ! रे, राय श्रेयांसकुमार !
जिणंदराय ! धरजो धर्मसनेह... जिणंद० ।।1।।
मोटा नाना अंतरो रे, गिरुआ नवि दाखंत,
शशि दरिशण सायर वधे रे, कैरव वन विकसंत... जिणंद० ।।2।।
ठाम कुठाम नवि लेखवे रे, जग वरसंत जलधार,
कर दोय कुसुमे वासिये रे, छाया सवि आधार... जिणंद० ।।3।।
राय ने रंक सरीखा गणे रे, उद्योते शशी सूर,
गंगाजल ते बिहुं तणा रे, ताप करे सवि दूर... जिणंद० ।।4।।
सरीखा सहुने तारवा रे, तिम तुमे छो महाराज !,
मुजशुं अंतर किम करो रे ! बाह्य ग्रह्यानी लाज... जिणंद० ।।5।।
मुख देखी टीलुं करे रे, ते नवि होय प्रमाण,
मुजरो माने सवि तणो रे, साहिब तेह सुजाण... जिणंद० ।।6।।
वृषभ लंछन माता सत्यकी रे, नंदन रुक्मिणी कंत,
'वाचकयश' एम विनवे रे, भयभंजन भगवंत... जिणंद० ।।7।।

## 7.

### ढाळ पहली

स्वामि सीमंधर वीनती, सांभळो माहरी देव रे ।
ताहरी आण हुं शिर धरूं, आदरुं ताहरी सेवरे. स्वा0।।1।।

कुगुरूनी वासना पासमां, हरिण परे जे पड्या लोक रे ।
तेहने शरण तुज विण नहीं, टलवले बापडा फोक रे. स्वा0।।2।।
ज्ञानदर्शन चरण गुण विना, जे करावे कुलाचार रे ।
लूंटिया तेणे जन देखतां, किंहा करे लोक पोकार रे. स्वा0।।3।।
जेह नवि भव तर्या निरगुणी, तारशे केणी पेरे तेह रे ।
एम अजाण्या पडे फंदमां, पापबंधे रह्या जेह रे. स्वा0।।4।।
कामकुंभादिक अधिकनुं, धर्मनुं को नवि मूल रे ।
दोकडे कुगुरू ते दाखवे, शुं थयुं एह जग शूल रे. स्वा0।।5।।
अर्थनी देशना जे दीए, ओलवे धर्मना ग्रंथ रे ।
परमपदनो प्रगट चोर ते, तेहथी किम वहे पंथे रे. स्वा0।।6।।
विषयरसमां ग्रही माचिया, राचिया कुगुरू-मदपूर रे ।
धूमधामे धमाधम चली, ज्ञानमारग रह्यो दूर रे. स्वा0।।7।।
कलहकारी कदाग्रह भर्या, थापता आपणा बोल रे ।
जिनवचन अन्यथा दाखवे, आज तो वाजते ढोल रे. स्वा0।।8।।
केई निजदोषने गोपवा, रोपवा केई मतकंद रे ।
धर्मनी देशना पालटे, सत्य भाषे नहीं मंद रे. स्वा0।।9।।
बहुमुखे बोल एम सांभली, नवि धरे लोक विश्वास रे ।
ढुंढतां धर्मने ते थया, भमर जेम कमलनी वास रे. स्वा0।।10।।

## 1. श्री सिद्धाचलजी के स्तवन

सिद्धाचलना वासी जिनने क्रोडो प्रणाम, जिनने क्रोडो प्रणाम.
आदि जिनवर सुखकर स्वामी, तुम दर्शनथी शिवपद गामी,
थया छे असंख्य, जिनने क्रोडो प्रणाम सिद्धा0।।1।।
विमलगिरिना दर्शन करतां, भवोभवना तम तिमिर हरतां,
आनंद अपार, जिनने क्रोडो प्रणाम सिद्धा0।।2।।

हुं पापी छुं नीचगति गामी, कंचनगिरिनुं शरणुं पामी,
तरशुं जरुर, जिनने क्रोडो प्रणाम सिद्धा0।।3।।
अणधार्या आ समयमां दर्शन, करता हृदय थयुं अति परसन,
जीवन उज्ज्वल, जिनने क्रोडो प्रणाम सिद्धा0।।4।।
गोडी पार्श्व जिनेश्वर केरी, करण प्रतिष्ठा विनति घणेरी,
दर्शन पाम्यो मानी, जिनने क्रोडो प्रणाम सिद्धा0।।5।।
संवत ओगणीशें नेवुं वरसे, सुद पंचमी कर्या दर्शन हर्षे,
मळ्यो ज्येष्ठ शुभमास, जिनने क्रोडो प्रणाम सिद्धा0।।6।।
आत्म कमलमां सिद्धगिरि ध्याने, जीवन भलशे केवलज्ञाने,
*लब्धिसूरि* शिवधाम, जिनने क्रोडो प्रणाम सिद्धा0।।7।।

## 2.

यात्रा नवाणुं करीए विमलगिरि, यात्रा नवाणुं करीए
पूर्व नवाणुं वार शत्रुंजय गिरि, ऋषभजिणंद समोसरीए वि0 यात्रा0।।1।।
कोडी सहस भव पातक त्रूटे, शत्रुंजय सामो डग भरीए वि0 यात्रा0।।2।।
सात छट्ठ दोय अठ्ठम तपस्या, करी चढीए गिरिवरीए वि0 यात्रा0।।3।।
पुंडरीक पद जपीए मन हरखे, अध्यवसाय शुभ धरीए वि0 यात्रा0।।4।।
पापी अभव्य नजरे न देखे, हिंसक पण उद्धरीए वि0 यात्रा0।।5।।
भूमि संथारो ने नारी तणो संग, दूर थकी परिहरीए वि0 यात्रा0।।6।।
सचित्त परिहारी ने एकल आहारी, गुरु साथे पद चरीए वि0 यात्रा0।।7।।
पडिक्कमणां दोय विधिशुं करीए, पाप पडल विखरीये वि0 यात्रा0।।8।।
कलिकाळे ए तीरथ मोटुं, प्रवहण जेम भर दरिये वि0 यात्रा0।।9।।
उत्तम ए गिरिवर सेवंता, *'पद्म'* कहे भव तरीए वि0 यात्रा0।।10।।

## 3.

चालो चालो विमलगिरि जइए रे, भवजल तरवाने
तुमे जयणाए धरजो पाय रे, पार उतरवाने,

बाळकाळनी चेष्टा टाळी, हुं तो धर्म यौवन हवे पायो रे, भव0
भूल अनादिनी दूर निवारी, हुं तो अनुभवमां लय लायो रे. पार0 चालो0।।1।।
भवतृष्णा सवि दूर निवारी, मारी जिनचरणे लय लागी रे, भव0
संवर भावमां दिल हवे ठरीयुं, मारी भवनी भावठ भांगी रे. पार0 चालो0।।2।।
सचित्त सर्वनो त्याग करीने, नित्य एकासणां तपकारी, भव0
पडिक्कमणां दोय टंकना करीशुं, भली अमृत क्रिया दिलधारी रे.पार0 चालो0।।3।।
व्रत उच्चरशुं गुरुनी पासे, हुं तो निज शक्ति अनुसारे रे. भव0
गुरु साथे चडशुं गिरिराजे, जे भवोदधि डूबतां तारे रे. पार0 चालो0।।4।।
भवतारक ए तीरथ फरसी, हुं तो सूरजकुंडमां नाही रे भव0
अष्टप्रकारी ऋषभजिणंदनी, हुं तो पूजा करीश लय लाइ रे. पार0 चालो0।।5।।
तीरथपतिने तीरथ सेवा, ए तो साचा मोक्षना मेवा रे. भव0
सात छट्ठ दोय अठ्ठम करीने, मने स्वामिवच्छलनी हेवा रे. पार0 चालो0।।6।।
प्रभुपदपद्म रायण तळे पूजी, हुं तो पामीश हरख अपार रे. भव0
*'रुपविजय'* प्रभु ध्यान पसाये, हुं तो पामीश सुख श्रीकार रे.पार0 चालो0।।7।।

## 4.

ऐसी दशा हो भगवान, जब प्राण तन से निकले,
गिरिराज की हो छाया, मनमें न होवे माया,
तपसे हो शुद्ध काया, जब प्राण तन से निकले ऐसी0।।1।।
उर मे न मान होवे, दिल एक तान होवे,
तुम चरण ध्यान होवे, जब प्राण तन से निकले ऐसी0।।2।।
संसार दुख हरणां, जैन धर्म का हो शरणा,
हो कर्म भर्म खरनां, जब प्राण तन से निकले ऐसी0।।3।।
अनसन को सिद्धवट हो, प्रभु आदिदेव घट हो,
गुरूराज भी निकट हो, जब प्राण तन से निकले ऐसी0।।4।।
यह दान मुज को दीजे, इतनी दया तो कीजे,
अरजी तिलक की लीजे, जब प्राण तन से निकले ऐसी0।।5।।

## 5.

सिद्धाचलगिरि भेट्या रे, धन्य भाग्य हमारा,
ए गिरिवरनो महिमा मोटो, कहेतां न आवे पार,
रायण रुख समोसर्या स्वामी, पूर्व नवाणुं वारा रे, धन्य0सिद्धा0 ।।1।।
मुळनायक श्री आदिजिनेश्वर, चउमुख प्रतिमा चार,
अष्ट द्रव्यशुं पूजो भावे, समकित मूल आधारा रे धन्य0सिद्धा0 ।।2।।
भाव भक्ति शुं प्रभु गुण गाता, अपना जन्म सुधारा,
यात्रा करी भविजन शुभ भावे, नरक तिर्यंच गति वारा रे धन्य0सिद्धा0 ।।3।।
दूर देशांतरथी हुं आव्यो, श्रवणे सुणी गुण तोरा
पतित उद्धारण बिरुद तमारुं, ए तीरथ जग सारा रे धन्य0सिद्धा0 ।।4।।
संवत अढारसें त्याशी मास अषाढा, वदी आठम भोमवारा,
प्रभुजी के चरण प्रताप के संघ में *खिमारतन* प्रभु प्यारा रे धन्य0सिद्धा0 ।।5।।

## 6.

नीलुडी रायण तरु तळे सुणसुंदरी, पीलुडा प्रभुना पाय रे, गुणमंजरी,
उज्ज्वळ ध्याने ध्याईए सुणसुंदरी, एही ज मुक्ति उपाय रे, गुणमंजरी0।।1।।
शीतल छायंडे बेसीए सुणसुंदरी, रातडो करी मन रंग रे गुणमंजरी,
पूजीए सोहन फुलडे सुणसुंदरी, जेम होय पावन अंग रे, गुणमंजरी0।।2।।
खीर झरे जेह ऊपरे सुणसुंदरी, नेह धरीने एह रे गुणमंजरी
त्रीजे भवे ते शिव लहे सुणसुंदरी, थाये निर्मळ देह रे, गुणमंजरी0।।3।।
प्रीत धरी प्रदक्षिणा रे, सुणसुंदरी, दीये एह जे सार रे गुणमंजरी
अभंग प्रीति होय तेहने सुणसुंदरी, भवभव तुम आधार रे, गुणमंजरी0।।4।।
कुसुम पत्र फळ मंजरी सुणसुंदरी, शाखा थड अने मूळ रे गुणमंजरी,
देवतणा वासाय छे सुणसुंदरी, तीरथने अनुकूळ रे, गुणमंजरी0।।5।।
तीरथ ध्यान धरो मुदा सुणसुंदरी, सेवो एहनी छांय रे गुणमंजरी,
*ज्ञानविमल* गुण भाखीयो सुणसुंदरी, शत्रुंजय महात्म्य मांह्य रे, गुणमंजरी0।।6।।

## 7.

(राग : कडवा फळ छे क्रोधना)

आज मारा नयणां सफळ थयां, श्री सिद्धाजल निरखी,
गिरिने वधावुं मोतीडे, मारा हैडामां हरखी, आज... ।।1।।
धन्य धन्य सोरठ देशने, जिहां अे तीरथ जोडी,
विमलाचल गिरनारने वंदु बे जोडी... ।।2।।
साधु अनंता इण गिरि, सिद्धां अणसण लेइ,
राम पांडव नारद ऋषि, बीजा मुनिवर केइ, आज... ।।3।।
मानव भव पामी करी, नवि अे तीरथ भेटे,
पाप करम जे आकरां, कहो केणी पेरे मेटे, आज... ।।4।।
तीर्थराज समरुं सदा, सारे वंछित काज,
दु:ख दोहग दूरे करी, आपे अविचलाज, आज... ।।5।।
सुख अभिलाषी प्राणीया, वंछे अविचल सुखडां,
माणेक मुनि गिरि ध्यानथी, भांगे भवोभव दुखडा, आज... ।।6।।

## 8.

एक दिन पुंडरीक गणधरुं रे लाल, पूछे श्री आदिजिणंद सुखकारी रे,
कहीए ते भवजल उतरीरे लाल, पामीश परमानंद भववारी रे,एक0।।1।।
कहे जिन इणगिरि पामशो रे लाल, ज्ञान अने निरवाण जयकारी रे,
तीरथ महिमा वाधशे रे लाल, अधिक अधिक मंडाण निरधारी रे, एक0।।2।।
एम निसुणीने इहां आवीया रे लाल, घाती करम कर्यां दूर तम वारी रे,
पंच कोडी मुनि परिवर्या रे लाल, हुआ सिद्धी हजुर भव वारी रे, एक0।।3।।
चैत्री पूनम दिन कीजीए रे लाल, पूजा विविध प्रकार दिल धारी रे,
फळ प्रदक्षिणा काउस्सग्गा रे लाल, लोगस्स थुइ नमुक्कार नरनारी रे, एक0।4।।
दश वीस त्रीस चालीश भला रे लाल, पच्चास पुष्पनी माल अति सारी रे,
नरभव लाहो लीजीए रे लाल, जेम होय ज्ञान विशाल मनोहारी रे, एक0।।5।।

## 9.

सिद्धाचलना वासी, विमलाचलना वासी, जिनजी प्यारा, आदिनाथने वंदन अमारा,
प्रभुजीनुं मुखडुं मलके, नयनोमांथी वरसे, अमीरस धारा, आदिनाथने वंदन अमारा...
प्रभुजीनुं मुखडुं छे मन को मिलाकर, दिल में भक्ति की ज्योत जगाकर
भजले प्रभुने भावे, दुर्गति कदी ना आवे जिनजी प्यारा,
आदिनाथने वंदन अमारा ।।1।।
अमे तो मायाना विलासी, तमे छो मुक्तिपुरीना वासी,
कर्म बंधन कापो, मोक्षसुख आपो, जिनजी प्यारा, आदिनाथने0।।2।।
भ्रमीने लाख चौरासी हुं आव्यो, पुण्ये दरिशन तुम्हारा हुं पाम्यो,
धन्य दिवस मारो, भवना फेरा टाळो, जिनजी प्यारा, आदिनाथने0।।3।।
अरजी उरमां धरजो अमारी, अमने आशा छे प्रभुजी तुम्हारी,
कहे *हर्ष*हवे साचा स्वामी तमे, वंदन करीए अमे, जिनजी प्यारा, आदिनाथने0।।4।।

## 10. सिद्धाचल शिखरे दीवो

सिद्धाचल शिखरे दीवो रे, आदीश्वर अलबेलो छे,
जाणे दर्शन अमृत पीवो रे, आदीश्वर अलबेलो छे,
शिव सोमजसानी लारे रे. आ...तेरकोडी मुनि परिवार रे आ..सिद्धा० 1
करे शिवसुंदरीनुं आणुं रे, आ...नारदजी लाख एकाणुं रे. आ.
वसुदेवनी नारी प्रसिद्धि रे, आ...पांत्रीश हजार ते सिद्धि रे आ..सिद्धा० 2
लाख बावन ने एक कोडी रे, आ...पंचावन सहस ने जोडी रे. आ.
सातसे सत्योतेर साधु रे, आ...प्रभु शान्ति चोमासुं कीधुं रे आ..सिद्धा० 3
तव अे वरीया शिवनारी रे, आ...चौद सहस मुनि दमितारी रे, आ.
प्रद्युम्नप्रिया अचंभी रे, आ...चौवालीससे वैदर्भि रे आ..सिद्धा० 4
थावच्चापुत्र हजारे रे आ...शुक परिव्राजक ए धारे रे, आ.
सेलग पणसय विख्याते रे, आ...सुभद्र मुनि सयसाते रे आ..सिद्धा० 5

भव तरिया तेणे भव तारण रे, आ...गजचंद्र महोदय कारण रे, आ.
सुरकांत अचल अभिनंदो रे, आ...सुमति श्रेष्ठा भयकंदो रे आ..सिद्धा०6
इहां मोक्षे गया केइ कोटी रे, आ...अमने पण आशा मोटी रे. आ.
श्रद्धा संवेगे भरियो रे, आ...मे मोटो दरियो तरियो रे आ..सिद्धा० 7
श्रद्धाविण कुण इहां आवे रे, आ..लघुं जळमां केम ते नावे रे, आ.
तेणे हाथ हवे प्रभु झालो रे, आ...शुभवीरने हैडे वहालो रे आ..सिद्धा० 8

## 11. आंखडीअे रे में आज

आंखडीए रे में आज, शत्रुंजय दीठो रे,
सवा लाख टकानो दहाडो रे, लागे मने मीठो रे,
सफळ थयो मारा मननो उमाहो, वालामारा,
भवनो संशय भांग्यो रे,
नरक तिर्यंचगति दूर निवारी, चरणे प्रभुजीने लाग्या रे. शत्रुं०1
मानवभवनो लाहो लीजे, वाला० देहडी पावन कीजे रे,
सोना-रुपाने फुलडे वधावी, प्रेमे प्रदक्षिणा दीजे रे. शत्रुं०2
दुधडे पखाळीने केसर घोळी, वाला० श्री आदीश्वर पूज्या रे,
श्री सिद्धाचल नयणे जोतां, पाप मेवासी धुज्या रे. शत्रुं०3
श्रीमुख सुधर्मा सुरपति आगे, वाला० वीर जिणंद अेम बोले रे,
त्रण भुवनमां तीरथ मोटुं, नहि कोइ शत्रुंजय तोले रे. शत्रुं०4
इन्द्र सरिखा अे तीरथनी, वाला० चाकरी चित्तमां चाहे रे,
कायानी तो कासळ काढी, सुरजकुंडमां नाहे रे. शत्रुं०5
कांकरे कांकरे श्री सिद्धक्षेत्र, वाला० साधु अनंता सिध्या रे,
ते माटे अे तीरथ मोटुं, उद्धार अनंता कीधा रे. शत्रुं०6
नाभिराया सुत नयणे जोतां, वाला० मेह अमीरस वूठ्या रे,
उदयरत्न कहे आज मारे पोते, श्री आदीश्वर त्रूठ्यो रे, शत्रुं०7

## 12. सिद्धाचल वंदोरे

सिद्धाचल, वंदो रे नरनारी, नरनारी नरनारी, सि०
नाभिराया मरुदेवानंदन, ऋषभदेव सुखकारी...सि० ।।1।।
पुंडरीक पमुहा मुनिवर सिया, आतमतत्व विचारी सि० ।।2।।
शिव सुख कारण भवदुःख वारण, त्रिभुवन जन हितकारी..सि०।।3।।
समकित शुद्धकरण अे तीरथ, मोह मिथ्यात्व निवारी सि..सि० ।।4।।
ज्ञान उद्योत प्रभु केवल धारी, भक्ति करुं एक तारी..सि० ।।5।।

## 13. ऊँचा ऊँचा शत्रुंजयना शिखरो सोहाय...

(राग : मेरा जीवन कोरा कागज.../आँख मारी उघडे त्यां...)

ऊँचा ऊँचा शत्रुंजयना शिखरो सोहाय,
वच्चे मारा दादा केरा देरा जगमग थाय...!
दादा तारी यात्रा करवा, मारूं मन ललचाय,
तलेटीए शीश नमावी, चढता लागुं पाय,
पावन गिरीनो स्पर्श थाता, पापो दूर पलाय... ऊँचा..।।1।।
लीली लीली झाडीओमां, पंखी करे कलशोर,
सोपान चढतां चढतां जाणे, हैयुं अषाढी मोर,
कांकरे कांकरे सिद्धया अनंता, लळी लळी लागुं पाया... ऊँचा..।।2।।
पहेली आवे रामपोलने, त्रीजी वाघणपोल,
शांतिनाथना दर्शन करतां, पहोंच्या हाथीपोल,
सामे मारा...दादा केरा दरबार देखाय... ऊँचा..।।3।।
दोडी दोडी आवुं दादा तारा, दर्शन करवा आज,
भाव भरेली भक्ति करीने, सारु आतम काज,
मरूदेवाना...नंदन नीरखी, जीवन पावन थाय... ऊँचा..।।4।।
क्षमा भावे ओमकार पदनो, नित्य करीश हुं जाप,
दादा तारा गुणला गातां, कापीश भवना पाप,
'पद्मविजयने'...हैये आजे, आनंद उभराय... ऊँचा..।।5।।

## 14. मेरे तो जिन तेरो ही चरण आधार...

(राग : मैया मोरी में नहीं माखण.../दीन दु:खीयानो...पायोजी मैंने...)

मेरे तो जिन तेरो ही चरण आधार...!

पुंडरीक गणधर पुंडरीक पट्टधर, पुंडरीक पद करनार... मेरे...।।1।।

पुंडरीक गिरि पर पुंडरीक पावन, पुंडरीक प्रभुनो विहार... मेरे...।।2।।

पुंडरीक कमलासन प्रभु राजीत, पुंडरीक कमलनो हार... मेरे...।।3।।

पुंडरीक गाउं पुंडरीक ध्याउं, पुंडरीक हृदय मोझार... मेरे...।।4।।

पुंडरीक आतमराम अरूपी, पुंडरीक 'कांति' जयकार... मेरे...।।5।।

## 15. वंदना वंदना वंदना रे...

(राग : वंदना वंदना वंदना रे जिन राजकुं...)

वंदना वंदना वंदना रे, गिरिराजकुं सदा मोरी वंदना रे,
वंदना ते पाप निकंदना रे, आदिनाथकुं सदा मोरी वंदना रे...गिरिराज०
जिनको दर्शन दुर्लभ देखी, कीधी ते कर्म निकंदना रे...आदि० गिर०।।1।।

विषय कषाय ताप उपशमीए, जिम मले बावन चंदना रे,
धन धन ते दिन कबही होंशे, थाशे तुम मुख दर्शना रे...आदि० गिर०।।2।।

तिहां विशाल भाव पण होशे, जीहां प्रभु पदकज स्पर्शना रे,
चित्त मोहेथी कबहुं न विसारूं, प्रभु गुण गणनी ध्यावना रे.आदि० गिर०।।3।।

वली वली दर्शन वहेलुं लहीए, एवी रहे नित्य भावना रे,
भवोभव एहीज चित्तमां चाहुं, मेरी नहि और विचारणा रे.आदि० गिर०।।4।।

चित्र गयंदना महावतनी परे, फेर न होय उतारणा रे,
'ज्ञानविमल' प्रभु पूर्ण कृपाथी, सुकृत सुबोध सुवासना रे.आदि० गिर०।।5।।

## 16. मनना मनोरथ सवि फल्यां ए...

(राग : नीले गगन के तले...)

मनना मनोरथ सवि फल्यां ए, सिध्यां वांछित काज,
पूजो गिरिराजने रे, वंदो गिरिराजने रे, जय गिरिराज...(4) !!
प्राये ए गिरि शाश्वतो ए, भवजल तरवा जहाज... पूजो०।।1।।
मणि माणेक मुक्ताफले ए, रजत कनकनां फूल, पूजो०
केशर चंदन घसी घणां ए, बीजी वस्तु अमूल... पूजो०।।2।।
छट्ठे अंगे दाखीयो ए, आठमे अंगे भाख, पूजो०
थिरावली पयन्ने वर्णव्यो ए, ए आगमनी साख... पूजो०।।3।।
विमल करे भविलोकने ए, तेणे विमलाचल जाण, पूजो०
शुकराजाथी विस्तर्यो ए, शत्रुंजय गुण खाण... पूजो०।।4।।
पुंडरीक गणधरथी थयो ए, पुंडरीक गिरि गुणधाम, पूजो०
सुरनरकृत एम जाणीए ए, उत्तम एकवीश नाम... पूजो०।।5।।
ए गिरिवरना गुण घणा ए, नाणीए नरि कहेवाय, पूजो०
जाणे पण कही नवि शके ए, मूक गुडने न्याय... पूजो०।।6।।
गिरिवर फरसन नवि कर्यो ए, ते रह्यो गर्भावास, पूजो०
नमन दर्शन फरसन कर्यो ए, पूरे मननी आश... पूजो०।।7।।
आज महोदय में लह्यो ए, पाम्यो प्रमोद रसाल, पूजो०
'मणि' उद्योतगिरि सेवतां ए, घेर घेर मंगल माल... पूजो०।।8।।

## पर्युषण पर्व स्तवन-1

रीझो रीझो श्री वीर देखी, शासनना शिरताज,
हरखो हरखो आ मौसम आवी, पर्व पजुषण आज, रीझो।।1।।
प्रभुजी देवे पर्षदामांहे, उत्तम शिक्षा एम,
आलसमां बहु काल गुमाव्यो, पर्व न साधो केम ? रीझो।।2।।

सोनानो रज कण संभाले, जेम सोनी एक चित्त,
तेथी पण आ अवसर अधिको, करो आतम पवित्र रीझो।।3।।
जेने माटे निशदिन रखडो, तजी धरमनी नीम,
पाप करो तो शिरपर बोजो, तो व्याजबी किम रीझो।।4।।
कोई न लेशे भाग पापनो, धननो लेशे सर्व,
परभव जातां साथ धर्मनो, साधो आ शुभ पर्व रीझो।।5।।
संपीने समताए सुणजो, अट्ठाई व्याख्यान,
छट्ठ करजो श्री कल्पसूत्रनो, वार्षिक अट्ठम जाण रीझो।।6।।
निशीथसूत्रनी चूर्णिमांहे, आलोचना वखणाय,
खमीए होंशे सर्व जीवने, जीवन निर्मल थाय रीझो।।7।।
उपकारी श्री प्रभुनी कीजे, पूजा अष्ट प्रकार,
चैत्य जुहारी गुरु वंदीजे, आवश्यक बे काल रीझो।।8।।
पौषध चोसठ प्रहरी करतां, जाये कर्म जंझाल,
'पद्मविजय' समता रस झीले, धर्मे मंगलमाल रीझो।।9।।

## 2. श्री पर्युषण पर्व

सुणजो साजन संत पजुसण आव्या रे,
तमे पुण्य करो पुण्यवंत, भविक मन भाव्यां रे...
वीर जिणेसर अति अलवेसर, वहाला मारा, परमेश्वर एम बोले रे,
पर्वमांहे पजुसण म्होटो, अवर न आवे तस तोले रे. पजु0।।1।।
चौपदमां जेम केशरी मोटो, वहाला0 खगमां गरूड ते कहीए रे,
नदीमांही जेम गंगा म्होटी, नगमां मेरू लहीए रे. पजु0।।2।।
भूपतिमां भरतेश्वर भाख्यो, वहाला0 देव मांहे सुर इंद्र रे,
तीरथमां शत्रुंजय दाखयो, ग्रहगणमां जेम चंद्र रे.पजु0।।3।।
दशरा दिवाळी ने वळी होळी, अखात्रीज दिवासो रे,
बळेव प्रमुख बहुलां छे बीजा, पण नहि मुक्तिनो वासो रे. पजु0।।4।।

ते माटे तमे अमर पलावो, वहाला0 अठ्ठाई महोत्सव कीजे रे,
अठ्ठमतप अधिकाइ ए करीने, नरभव लाहो लीजे रे.पजु0।।5।।
ढोल ददामा भेरी न फेरी, वहाला0 कल्पसूत्र ने जगावो रे,
झांझरना झमकार करीने, गोरीनी टोळी मळी आवो रे.पजु0।।6।।
सोना रूपाना फूलडे वधावो, वहाला0 कल्पसूत्र ने पुजो रे
नव वखाण विधिए सांभळता, पाप मेवासी धुजो रे. पजु0।।7।।
एम अठ्ठाई महोत्सव करतां, वहाला0 बहु जीव जग उद्धरीया रे,
विबुध विमल वर सेवक एहथी, नवनिधि ऋद्धि सिद्धि वरीया रे. पजु0।।8।।

## 3. श्री पर्युषण स्तवन

प्रभु वीरजिणंद विचारी भाख्या पर्व पजुसण भारी,
आखा वर्षमां ते दिन मोटा आठे नही तेहमां छोटा रे,
ए उत्तमने उपकारी...भाख्या०।।1।।
जेम औषधि मांहे कहीये अमृतने सारुं लहीये रे,
महामंत्रमां नवकारवाळी...भाख्या०।।2।।
वृक्षमांहे कल्पतरु सारो, तेम पर्व पजुसण धारो रे,
सूत्रमांहे कल्प भवतारु...भाख्या०।।3।।
नारागणमां जेम चंद्र सुरवर मांहे जेम इंद्र रे,
सतीओमांहे सीता नारी...भाख्या०।।4।।
जो बने तो अट्ठाई कीजे, वळी मासक्षमण तप लीजे रे,
सोळभत्थानी बलिहारी...भाख्या०।।5।।
नहीं तो चोथ छट्ठ लहीये, अट्ठम करी दुःख सहीये रे,
ते प्राणी जुज अवतारी...भाख्या०।।6।।
ते दिवसे राखी समता, छोडो मोह माया ने ममता रे,
समतारस दिलमां धारी...भाख्या०।।7।।

नवपूर्वतणो सार लावी, जेणे कल्पसूत्र बनावी रे,
भद्रबाहु वारे अनुसारी...भाख्या० ।।8।।
सोना रुपाना फुलडां भरीये, ए कल्पनी पूजा करीए रे,
ए शास्त्र अनुपम भारी...भाख्या० ।।9।।
गीतगान वाजीत्र बजावे, प्रभुजीनी आंगी रचावे रे,
करे भक्ति वार हजारी...भाख्या० ।।10।।
सुगुरु मुखे ए सार, सुणे अखंड एकवीश वार रे,
जुए एहिज भव शिव प्यारी...भाख्या० ।।11।।
एम अनेक गुणना खाणी, ते पर्व पजुसण जाणी रे,
सेवो दान दया मनोहारी...भाख्या० ।।12।।

## 1. दूज स्तवन

(दोहे)

सरस वचन रस वरसती, सरसती कळा भंडार,
बीज तणो महिमा कहुं, जिम कह्यो शास्त्र मोझार. ।।1।।
जंबूद्वीपना भरतमां, राजगृही उद्यान,
वीर जिणंद समोसर्या, वांदवा आव्या राजन. ।।2।।
श्रेणिक नामे भूपति, बेठा बेसण ठाय,
पूछे श्री जिनरायने, द्यो उपदेश महाराय. ।।3।।
त्रिगडे बेठा त्रिभुवनपति, देशना दिये जिनराय,
कमळ सुकोमळ पांखडी, एम जिन हृदय सोहाय. ।।4।।
शशी प्रगटे जिम ते दिन, धन्य ते दिन सुविहाण,
एक मने आराधतां, पामे पद निर्वाण. ।।5।।

(ढाळ 1 ली)

कल्याण जिनना कहुं, सुण प्राणीजी रे,
अभिनंदन अरिहंत, ए भगवंत भवि प्राणीजी रे,

माघ सुदि बीजने दिने, सुण प्राणीजी रे,
पाम्या शिवमुख सार, हरख अपार, भवि प्राणीजी रे ।।1।।
वासुपूज्य जिन बारमां, सुण प्राणीजी रे,
एहज तिथे थयुं नाण, सफळ विहाण, भवि प्राणीजी रे,
अष्ट कर्म चूरण करी, सुण प्राणीजी रे,
अवगाहन एकवार, मुक्ति मोझार, भवि प्राणीजी रे ।।2।।
अरनाथ जिनजी नमुं, सुण प्राणीजी रे,
अष्टादशमां अरिहंत, ए भगवंत भवि प्राणीजी रे,
उज्जवळ तिथि फागण भली, सुण प्राणीजी रे,
वरीया शिववधु सार, सुंदर नार, भवि प्राणीजी रे ।।3।।
दशमा शीतळ जिनेश्वरु, सुण प्राणीजी रे,
परम पदनी ए वेल, गुणनी गेल, भवि प्राणीजी रे,
वैशाख वदि बीजने दिन, सुण प्राणीजी रे,
मूक्यो सरवे ए साथ, सुर नर नाथ, भवि प्राणीजी रे ।।4।।
श्रावण सुदनी बीज भली, सुण प्राणीजी रे,
सुमतिनाथ जिनदेव, सारे सेव भवि प्राणीजी रे,
एणी तिथिए जिनजी तणा, सुण प्राणीजी रे,
कल्याणपंच सार, भवनो पार, भवि प्राणीजी रे ।।5।।

(ढाळ 2 जी)

जगपति जिन चोवीसमो रे लाल, ए भाख्यो अधिकर रे, भविक जन,
श्रेणिक आदे सहु मल्यारे लाल, शक्तितणे अनुसार रे, भविकंजन,
भाव धरीने सांभळोरे लाल आराधो धरी खंत रे, भविकजन ! भाव धरीने० ।।1।।
दोय वरस दोय मासनी रे लाल, आराधो धरी हेत रे, भविकजन
उजमणुं विधिशुं करो रे लाल, बीज ते मुक्ति संकेत रे,
भविकजन, भाव० ।।2।।

मार्ग मिथ्या दूरे तजो रे लाल, आराधो गुण थोक रे, भविकजन०
वीरनी वाणी सांभळी रे लाल, उछरंग थया बहु लोक रे,
भविकजन, भाव० ।।3।।
अेणी बीजे केइ तर्या रे लाल, वळी तरशे केइ संत रे, भविकजन०
शशी निधि अनुमानथी रे लाल, शैल नागधर अंक रे,
भविकजन, भाव० ।।4।।
अषाडसुदि दशमी दिने रे लाल, ऐ गायो स्तवन रसाळ रे, भविकजन०
नवलविजय सुपसाय थी रे लाल, चतुरने मंगळमाळ रे,
भविकजन, भाव० ।।5।।

कळश

इम वीर जिनवर सयल सुखकर, गायो अति उलट भरे,
अषाड उज्जवळ दशमी दिवसे, संवत अढार अट्ठोत्तरे,
बीज महिमा अेम वर्णव्यो, रही सिद्धपुर चोमासए,
जेह भविक भावे भणे गुणे, तस घरे लील विलास ए...

## 2. ज्ञान पंचमी स्तवन

ढाळ पहली (देशी रसीआनी)

प्रणमी पास जिणेसर प्रेमशु, आणी उलट अंग चतुर नर,
पंचमी तप महिमा महियल घणो, कहेशुं सुणजो रे रंग चतुर नर,
भाव भले पंचमी तप कीजीये ।।1।।

इम उपदेशे हो नेमि जीनेश्वरू, पंचमी करजो रे तेम, च0
गुणमंजरी वरदत्त तणी परे, आराधे फळ जेम. च0 भाव0।।2।।
जंबुद्विपे भरत मनोहरू, नयरी पदमपुर खास च0
राजा अजितसेनाभिध तिहां कणे, राणी यशोमती तास. च0 भाव0।।3।।
वरदत्त नामे हो कुंवर तेहनो, कोढे व्यापी रे देह च0
नाण विराधन कर्म जे बांधीयुं, उदये आव्युं रे तेह. च0 भाव0।।4।।

तेणे नयरे सिंहदास गृही वसे, कपूर तिलका तस नारी च0
तस बेटी गुणमंजरी रोगिणी, वचने मूंगी रे खास च0 भाव0।।5।।
चउनाणी विजयसेन सूरीश्वरू, आव्या तिण पुर जाम च0
तस बेटी गुणमंजरी रोगिणी, वचने मूंगी रे खास. च0 भाव0।।6।।
पूछे तिहां सिंहदास गुरु पत्ये, उपज्या पुत्री ने रोग च0
थइ मूंगी वळी परणे को नहीं, ए शा कर्मना भोग. च0 भाव0।।7।।
गुरु कहे पूरवभव तमे सांभळो, खेटक नयरे वसंत च0
श्री जिनदेव तिहां व्यवहारीओ, सुंदरी गृहिणीनो कंत. च0 भाव0।।8।।
बेटा पांच थया हवे तेह ने, पुत्री अति भली चार च0
भणवा मूक्या पांचे पुत्र ने, पण ते चपळ अपार. च0 भाव0।।9।।

## ढाळ दूसरी

(सीरोहीनो चेलो हो के उपर योधपुरी-ए देशी)

ते सुत पांचे हो के, पढण करे नही, रमतां रमतां हो के, दिन जाये वही,
सीखवे पंडित हो के, छात्रने सीख करी,
आवी माताने हो के, कहे सुत रूदन करी... ।।1।।
मात अध्यारू हो के, अमने मारे घणुं, काम अमारे हो के, नहीं भणवा तणुं,
शंखणी माता हो के, सुतने सीख दीये,
भणवा मत जाजो हो के, शुं कंठ शोष दीये... ।।2।।
तेडवा तुमने हो के, अध्यारू आवे, तो तस हणजो हो के, पुनरपि जिम नावे,
सीखवी सुतने हो के, सुंदरीए तिहां,
पाटी पोथी हो के, अग्निमां नाखी दीया... ।।3।।
ते वात सुणीने हो के, जिनदेव बोले इस्यु, फीट रे सुंदरी हो के, काम कर्युं कीस्युं,
मूरख राख्या हो के, ए सवे पुत्र तमे,
नारी बोली हो के, नवि जाणुं अमे... ।।4।।

मूरख मोटा हो के, पुत्र थया ज्यारे, न दीये कन्या हो के, कोइ तेहने त्यारे,
कंत कहे सुण हो के, ए करणी तुमची,
वचन न मान्या हो के, ते पहेला अमचा... ।।5।।
एम वात सुणीने हो के, सुंदरी क्रोधे चढी, प्रीतम साथे हो के, प्रेमदा अतिहि वढी,
कंते मारी हो के, तिहांथी काळ करी,
ए तुम बेटी हो के, थइ गुणमंजरी... ।।6।।
पूर्व भवे एणे हो के, ज्ञान विराधीयुं, पुस्तक बाळी हो के, जे कर्म बांधीयुं,
उदये आव्युं हो वेर, देहे रोग थयो,
वचने मूंगी हो के, ए फळ तास लह्यो... ।।7।।

## ढाळ तीसरी

निज पुरव-भव सांभळी, गुणमंजरीए तांहि, ललना0
जाति स्मरण पामियुं, गुरुने कहे उच्छांहि ललना0
भविक ज्ञान अभ्यासीए, ।।1।।
ज्ञान भलो गुरुजी तणो, गुणमंजरी कहे एम, ल0
शेठ पूछे गुरूने तिहां, रोग जाये कहो केम, ल0 भवि0।।2।।
गुरू कहे हवे विधि सांभळो, जे कह्यो शास्त्र मोझार, ल0
कार्तिक शुदि दिन पंचमी, पुस्तक आगळ सार, ल0 भवि0।।3।।
दीवो पंच दीवेट तणो, कीजीये स्वस्तिक सार ल0
नमो नाणस्स गुणणुं गणो, चौविहार उपवास, ल0 भवि0।।4।।
पडिक्कमणां दोय कीजीये, देववंदन त्रण काळ ल0
पांच वरस पांच मासनी, कीजीये पंचमी सार, ल0 भवि0।।5।।
तप उजमणुं पारणे, कीजीए विधिनो प्रपंच, ल0
पुस्तक आगळ मूकवां, सघळां वानां पंच पंच ल0 भवि0।।6।।
पुस्तक ठवणी पुंजणी, नवकारवाळी प्रत, ल0
लेखण खडीया दाभडा, पाटी कवळी जुक्त, ल0 भवि0।।7।।

धान्य फळादिक ढोइए, कीजीये ज्ञाननी भक्ति, ल0
उजमणुं एम कीजीए, भावथी जेहवी शक्ति, ल0 भवि0।।8।।
गुरु वाणी एम सांभळी, पंचमी कीधी तेह, ल0
गुणमंजरी मूंगी टळी, निरोगी थइ देह, ल0 भवि0।।9।।

## ढाळ चोथी

राजा पूछे साधुने रे, वरदत्त कुमरने अंग,
कोढ रोग ए कीम थयो रे, मुज भाखो भगवंत,
सद्गुरुजी, धन्य तमारूं ज्ञान ।।1।।
गुरु कहे जंबुद्वीपमां रे, भरते श्रीपुर गाम,
वसु नामा व्यवहारीओ रे, दोय पुत्र तस नाम. सद्0 ।।2।।
वसुसारने वसुदेवजी रे, दीक्षा लीए गुरू पास,
लघु बंधव वसुदेवने रे, पदवी दीए गुरू तास. सद्0 ।।3।।
पंच सहस अणगारने रे, आचार ज वसुदेव,
शास्त्र भणावे खंत शुं रे, नहीं आळश नित्य मेव. सद्0 ।।4।।
एक दिन सूरि संथारीया रे, पूछे पद एक साध,
अर्थ कहीओ तेहने वळी रे, आव्यो बीजो साध. सद्0 ।।5।।
एम बहु मुनि पद पूछवा रे, एक आवे एक जाय,
आचारजनी उंघमां रे, थाय अति अंतराय सद्0 ।।6।।
सूरि मन एम चिंतवे रे, क्यां मुज लाग्युं पाप,
शास्त्र में ए अभ्यासीया रे, तो एटलो संताप सद्0 ।।7।।
पद न कहुं हवे केहने रे, सघळा मूकुं विसार,
ज्ञान उपर एम आणीयो रे, त्रिकरण क्रोध अपार. सद्0 ।।8।।
बार दिवस अणबोलीआ रे, अक्षर न कह्यो एक,
अशुभ ध्यान ते मरी रे, ए सुत तुज अविवेक. सद्0 ।।9।।

## ढाळ पांचमी

(मुखने मरकलडे-ए देशी)

वाणी सुणी वरदत्तेजी, जाति स्मरण लह्युं,
निज पूर्व भव दीठोजी, जेम गुरूए कह्युं,
वरदत्त कहे तव गुरूनेजी, रोग ए केम जावे,
सुंदर काय होवजी, विद्या केम आवे ? ।।1।।

भाखे गुरुजी भली भातजी, पंचमी तप करो,
ज्ञान आराधो रंगेजी, उजमणुं करो,
वरदत्ते ते विधि कीधीजी, रोग ए दूरे गयो,
भुक्त भोगी राज्य पाळीजी, अंते सिद्ध थयो. ।।2।।

गुणमंजरी परणावीजी, शाह जिन चंद्रने,
सुख भोगवी पछी लीधुंजी, चारित्र सुमतिने,
गुणमंजरी वरदत्तेजी, चारित्र पाळीने,
विजय विमाने पहोंच्याजी, पाप प्रजाळीने ।।3।।

भोगवी सुर सुख तिहांथीजी, चविया दोय सुरा,
पाम्या जंबू विदेहेजी, मानव अवतारा,
भोगवी राज्य उदारजी, चारित्र लीये सारा,
हुवा केवळज्ञानीजी पाम्या भव पारा. ।।4।।

## ढाळ छठ्ठी

(गिरिथी नदीयां न तरे रे लोल-ए देशी)

जगदीश्वर नेमीश्वरू रे लोल, ए भाख्यो संबंध रे, सोभागी लाल,
बारे पर्षदा आगळे रे लोल, ए सघळो पर बंध रे, सोभागी लाल,
नेमीश्वर जिन जय करू रे लोल, ।।1।।
पंचमी तप करवा भणी रे लोल, उत्सुक थया बहु लोक रे, सोभागी लाल,
महा पुरुषनी देशना रे लोल, ते कीम होवे फोक रे, सोभागी लाल ।।2।।

कार्तिक शुदि जे पंचमी रे लोल, सौभाग्य पंचमी नाम रे, सोभागी लाल,
सौभाग्य लहीए एहथी रे लोल, फळे मनवांछित काम रे, सोभागी लाल ।।3।।
समुद्रविजय कुळ सेहरो रे लोल, ब्रह्मचारी शिरदार रे, सोभागी लाल,
मोहनगारी मानिनी रे लोल, रूडी राजुल नारी रे, सोभागी लाल ।।4।।
ते नवि परणी पद्मिणी रे लोल, पण राख्यो जेणे रंग रे, सोभाली लाल,
मुक्ति महेलमां बेहु मळ्या रे लोल, अविचळ जोड अभंग रे, सोभागी लाल ।।5।।
तेणे ए माहात्म्य भाखीयुं रे लोल, पांचमनुं परगट रे, सोभागी लाल,
जे सांभळतां भावशुं रे लोल, श्री संघने गहगट रे, सोभागी लाल।।6।।

कलश

इम नेमि जिनवर सयल सुखकर, उपदिशे भवि हित करो,
तपगच्छ नायक सुखदायक, लायक मांही पुरंदरो ।।1।।
श्री लाल कुशल विबुद्ध सुखकर, वीर कुशल पंडित वरो
सौभाग्य कुशल सुगुरु सेवक, केशर कुशल जय करो ।।2।।

## श्री अष्टमी स्तवन-1

कुल ढाल-2 (ढाळ पहली)

श्री राजगृही शुभ ठाम, अधिक दीवाजे रे,
विचरंता वीर जिणंद, अतिशय छाजे रे ।।1।।
तिहां चोत्रीश ने पांत्रीश, वाणी गुण लावे रे,
पधार्या वधामणी जाय, श्रेणिक आवे रे ।।2।।
तिहां चोसठ सुरपति आवीने, त्रिगडुं बनावे रे,
तेमां बेसीने उपदेश, प्रभुजी सुणावे रे ।।3।।
तिहां सुर नर ने तिर्यंच, निज निज भाषा रे,
मन समजीने भवतीर, पामे सुख खासा रे ।।4।।
तिहां इन्द्र भूति गणधार, श्री गुरु वीरने रे,
पूछो अष्टमीनो महिमा, कहो प्रभु अमने रे ।।5।।

तव भाखे वीर जिणंद, सुणो सहु प्राणी रे,
आठम दिन जिनना कल्याण, धरो चित्त आणी रे. ।।6।।

## ढाळ दूसरी

(वालाजीना वाटडी अमे जोतां रे...ए देशी)

श्री ऋषभनुं जन्म कल्याण रे, वळी चारित्र लह्युं भले वान रे,
त्रीजा संभवनुं च्यवन कल्याण, भवि तमे अष्टमी तिथि सेवो रे,
ए छे शिव वधु वरवानो मेवा. भवि0 ।।1।।

श्री अजित सुमति जिन जन्म्या रे, अभिनंदन शिवपद पाम्या रे,
जिन सातमा च्यवन ने पाम्या. भवि0 ।।2।।

वीशमां मुनिसुव्रत स्वामी रे, तेहना जन्म होय गुणधामी रे,
एकवीशमां शिव विसरामी. भवि0 ।।3।।

पार्श्वनाथजी मोक्ष महंत रे, इत्यादि जिन गुणवंत रे,
कल्याणक मुख्य कहंत. भवि0 ।।4।।

श्री वीरजिणंदनी वाणी रे, सुणी समज्या बहु भव्य प्राणी रे,
आठम दिन अति गुण खाणी. भवि0 ।।5।।

आठ कर्म ते दूरे पलाय रे, तेथी अडसिद्धि अडबुद्धि थाय रे,
तेणे कारणे सेवो चित्त लाय. भवि0 ।।6।।

श्री उदयसागरसूरि राया रे, गुरु शिष्य विवेके ध्याया रे,
तस न्यायसागर जस गाया. भवि0 ।।7।।

## 2.

(ढाळ पहली)

हांरे मारे ठाम धरमना साडा पचवीश देश जो,
दीपे रे तिहां देश मगध सहुमां शिरे रे लोल.
हांरे मारे नगरी तेहमां राजगृही सुविशेषजो.
राजे रे तिहां श्रेणिक गाजे गज परे रे लोल ।।1।।

हांरे मारे गाम नगर पुर पावन करता नाथ जो,
विचरंता तिहां आवी वीर समोसर्या रे लोल,
हांरे मारे चौद सहस मुनिवरना साथे साथ जो,
सुधारे तप संयम शीयले अलंकर्या रे लोल... ।।2।।

हांरे मारे फुल्या रसभर झुल्या अंब कदंबजो,
जाणुं रे गुण शीलवन हसी रोमांचियो रे लोल,
हांरे मारे वाया वाय सुवाय तिहां अविलंबजो
वासे रे परिमल चिहुं पासे संचर्या रे लोल... ।।3।।

हांरे मारे देव चतुर्विध आवे कोडा कोड जो,
त्रिगडुं रे मणि हेम रजत नुं ते रचे रे लोल,
हांरे मारे चोसठ सुरपति सेवे होडा होड जो,
आगे रे रस लागे इंद्राणी नाचे रे लोल... ।।4।।

हांरे मारे मणिमय हेम सिंहासन बेठा आपजो,
ढाळे रे सुर चामर मणिरत्ने जड्या रे लोल,
हांरे मारे सुणतां दुदुंभि नाद टळे सवि तापजो,
वरसे रे सुर फुल सरस जानुं अड्यां रे लोल... ।।5।।

हांरे मारे ताजे तेजे गाजे घन जेम लुंबजो,
राजे रे जिनराज समाजे धर्मने रे लोल,
हांरे मारे निरखी हरखी आवे जनमन लुंबजो.
पोषेरे रस न पडे घोषे भर्ममां रे लोल... ।।6।।

हांरे मारे आगम जाणी जिननो श्रेणिक रायजो,
आव्यो रे परवरियो हय गय रथ पायगे रे लोल,
हांरे मारे देइ प्रदक्षिणा वंदी बेठो ठायजो,
सुणवा रे जिनवाणी मोटे भायगे रे लोल... ।।7।।

हांरे मारे त्रिभुवन नायक लायक तव भगवंतजो,
आणी रे जन करुणा धर्मकथा कहे रे लोल,

हांरे मारे सहज विरोधविसारी जगना जंतुजो,
सुणवा रे जिनवाणी मनमां गहगहे रे लोल... ।।8।।

(ढाळ दूसरी)

वीर जिनवर इम उपदिशे, सांभळो चतुर सुजाण रे,
मोहनी निंदमां कां पडो ? ओळखो धर्मनां ठाण रे...वि० ।।1।।
विरतिए सुमतिधरी आदरो, परिहरो विषय कषाय रे,
बापडा ! पंचप्रमादथी, कां पडो कुमतिमां धाय रे ?...वि० ।।2।।
करी शको धर्मकरणी सदा, तो करो ए उपदेश रे,
सर्व काळे करी नवि शको, तो करो पर्व विशेष रे...वि० ।।3।।
जुजुआ पर्वषटना कह्यां, फळ घणां आगमे जोय रे,
वचन अनुसारे आराधतां, सर्वथा सिद्धिफळ होय रे...वि० ।।4।।
जीवने आयु परभवतणुं, तिथि दिने बंध होय प्रायरे,
ते भणी एह आराधतां, प्राणीओ सद्गति जाय रे...वि० ।।5।।
तेहवे अष्टमी फळ तिहां, पूछे श्री गौतमस्वामी रे,
भविक जीव जाणवा कारणे, कहे वीरप्रभु नाम रे...वि० ।।6।।
अष्ट महासिद्धि होय एहथी, संपदा आठनी वृद्धि रे,
बुद्धिना आठ गुण उपजे, जेहथी अष्टगुण सिद्ध रे...वि० ।।7।।
लाभ होय आठ पडिहारनो, आठ पवयण फळ जोय रे,
नाश आठ कर्मनो मूळथी, अष्टमीनुं फळ जोय रे...वि० ।।8।।
आदिजिन जन्म दीक्षातणो, अजितनो जन्मकल्याण रे,
च्यवन संभव तणो अेह तिथे, अभिनंदन निर्वाण रे...वि० ।।9।।
सुमति सुव्रत नमि जनमीया, नेमनो मुक्ति दिन जाण रे,
पार्श्वजिन अेह तिथे सिद्ध थया, सातमा जिन च्यवन माण रे...वि० ।।10।।
आदिजिन जन्म दीक्षातणो, अजितनो जन्मकल्याण रे,
च्यवन संभव तणो एह तिथे, अभिनंदन निर्वाण रे...वि० ।।11।।

सुमति सुव्रत नमि जनमीया, नेमनो मुक्ति दिन जाण रे,
पार्श्वजिन अेह तिथे सिद्ध थया, सातमा जिन च्यवन माण रे...वि० ।।12।।
अेह तिथि साधतो राजीयो, दंडवीरज लह्यो मुक्ति रे,
कर्म हणवा भणी अष्टमी, कहे सूत्र निर्युक्ति रे...वि० ।।13।।
अतीत अनागत काळना, जिन तणां केइ कल्याण रे,
अेह तिथे वळी घणा संयमी, पामशे पद निर्वाण रे...वि० ।।14।।
धर्मवासी पशुपंखीया, अेह तिथे करे उपवास रे,
व्रतधारी जीव पोषह करे, जेहने धर्म अभ्यास रे...वि० ।।15।।
भाखीयो वीरे आठम तणो, भविक हित अे अधिकर रे,
जिनमुखे उच्चरी प्राणीया, पामशे भवतणो पार रे...वि० ।।16।।
अेहथी संपदा सवि लहे, टळे कष्टनी कोडी रे,
सेवजो शिष्य बुध प्रेमनो, कहे कांति करजोडी रे...वि० ।।17।।

कळश

इम त्रिजगभासन अचलशासन वर्धमान जिनेश्वरु,
बुधप्रेम गुरु सुपसाय पामी, संथुण्यो अलवेसरु ।।1।।
जिनगुण प्रसंगे भण्यो रंगे, स्तवन अे आठम तणो,
जे भविक भावे सुणे गावे, कांति सुख पावे घणो. ।।2।।

## मौन एकादशी स्तवन

### कुल ढाळ-3 ढाळ पहली

(राग भांजे काया भांजतो रे)

प्रणमी पूछे वीरने रे, श्री गोयम गणधार,
मृगशिर शुद एकादशी रे, तपथी शुं फळ थाय रे,
जिनवर उपदेशे तिहां, सांभळे सहु समुदाय रे जिन0...।।1।।
वीर केह गोयम ! सुणो रे ! हरि आगळ कह्यो नेम,
तेम तुम आगळ हुं कहुं रे, सांभळो मन धरी प्रेम रे. जिन0 ।।2।।

द्वारिका नयरी समोसर्या रे, एक दिन नेम जिणंद,
कृष्ण आव्या तिहां वांदवा रे, पूछे प्रश्न नरिंद रे जिन0 ।।3।।

वर्ष दिवसना दिन मळी रे, त्रणसो साठ कहंत,
तेहमां दिन कुण एहवो रे, तपथी बहु फळ हुंत रे जिन0 ।।4।।

मृगशिर सुदी एकादशी रे, वर्णवी श्री जगनाथ,
दोढसो कल्याणक थयां रे, जिनना एकण साथ रे जिन0 ।।5।।

श्री अरजिन दीक्षा ग्रही रे, नमिने केवलनाण,
जन्म दीक्षा केवळ लह्या रे, श्री मल्लि जगभाण रे जिन0 ।।6।।

वर्तमान चोविशीना रे, भरते पंच कल्याण,
ए पांचे भरते थइ रे, पंचाधिक वीश जाण रे जिन0 ।।7।।

पांचे ऐरवते मिलि रे, कल्याणक पंच पंच,
दश क्षेत्रे सहु ए मिली रे, पचास कल्याणक संच रे जिन0 ।।8।।

अतीत अनागत काळना रे, वर्तमाननां वळी जेह,
दोढसो कल्याणक थयां रे, उत्तम इण दिन एह रे जिन0 ।।9।।

जे एकादशी तप करे रे, विधिपूर्वक गुण गेह,
दोढसो उपवास तणो रे, फळ लहे भवियण तेह रे जिन0 ।।10।।

## ढाळ दूसरी

हवे एकादशी तप तणो माधवजी, विधि कहुं निर्मळ बुद्धि हो,
गुणरागी नरेश्वर सांभळो जादवजी.
देव जुहारो देहरे मा0 गुरू वंदो भाव विशुद्धि हो. गुण0 ।।1।।
अहोरत्तो पोषह करी मा0 गुरूमुखे करो पच्चक्खाण हो, गुण0
देव वंदो त्रण टंकना मा0 सांभळो सदगुरू वाणी हो गुण0 ।।2।।
दोढसो कल्याणक तणो मा0 गुणणुं गणो एक मन्न हो गुण0
भणण गुणण क्रिया विना मा0 नवी बोले अन्य वचन हो. गुण0 ।।3।।

मौन ग्रहो निशि दिवसनो मा0 राखो शुभ परिणाम हो, गुण0
मौन एकादशी ते भणी मा0 निरूपम एनुं नाम हो. गुण0 ।।4।।
प्रथम दिने एकासणु मा0 पारणे एही ज रीत हो गुण0
बार वर्ष तप इम करे मा0 शुद्ध धर्म शुं प्रीत हो. गुण0 ।।5।।
अंग अग्यारे ते भणे मा0 पडिमा तप अग्यार हो गुण0
प्रतिमासे उपवासनो मा0 तप करे निरूपम वार हो. गुण0 ।।6।।
सुव्रत शेठ तणी परे मा0 मन राखे स्थिरता जोग, गुण0
तो एकादशी दशमे भवे मा0 लहे शिववधु संजोग गुण0 ।।7।।

## ढाळ तीसरी

हवे उजमणुं तप तणुं, एकादशी दिनसार, ललना,
दिन उग्या रे देह रे, स्नात्रपूजा अधिकार, ललना,
भगवंत भाखे हरि भणी0।।1।।
ढोणुं ढोविये देह रे, धान्य इग्यार प्रकार, ललना,
श्रीफळ फोफळ सुखडी, नवनवी भात इग्यार ललना भणी0।।2।।
केसर सुखड धोतियां, कांचन कळश शृंगार ललना,
धूपधाणां ने वाटकी, अंगलुहाण घनसार, ललना भणी0।।3।।
अंग इग्यारे लखावीए, पुठां ने रूमाल, ललना,
झाबी दोरा दाबडी, लेखण कांबी निहाल, ललना भणी0।।4।।
झीलमल चंद्रआ भला, ठवणी स्थापना काज, ललना,
पाटी जपमाला भली, वासना वाटुआ साज, ललना भणी0।।5।।
वींजणाने वळी पूजणा, कवळी कोथळी ताम, ललना,
रेशमनी पाटी रूअडी, मुहपत्ति तणा काम, ललना भणी0।।6।।
ज्ञानना उपगरण भला, इग्यार इग्यार मान, ललना,
साधर्मिक इग्यारने, पोषी जे पकवान, ललना. भणी0।।7।।

ते सांभळी हरि हरखीया, आदरे व्रत पच्चक्खाण, ललना,
तिथि एकादशी तप करे, बार वर्ष गुण खाण, ललना. भणी0।।8।।
तीर्थंकर पद तिण थकी, गोत्र निकाचित कीध, ललना,
अमम नामे जीन बारमा, होशे तप फळ सिद्ध, ललना. भणी0।।9।।
इणविधि श्री वीरे कह्यो, ए अधिकार अशेष, ललना,
तेह भणी तप तुमे आदरो, लेशे सुख सुविशेष, ललना भणी0।।10।।

## 1. सिद्धचक्र स्तवन

सिद्धचक्र वर सेवा कीजे, नरभव लाहो लीजे जी,
विधिपूर्वक आराधन करतां, भव भव पातिक छीजे, भविजन भजीओ जी.
अवर अनादिनी चाल, नित नित तजीओ जी. ।।1।।
देवना देव दयाकर ठाकर, चाकर सुर नर इंदा जी,
त्रिगडे त्रिभुवन नायक बेठां, प्रणमो श्री जिनचंदाजी भवि0 ।।2।।
अज अविनाशी अकल अजरामर, केवलदंसण नाणी जी,
अव्याबाध अनंतु वीरज, सिद्ध प्रणमो गुणखाणी भवि0 ।।3।।
विद्या सौभाग्य लक्ष्मी पीठ, मंत्रराज योगपीठ जी,
सुमेरू पीठ अे पंच प्रस्थाने, नमो आचारज इठ्ठ भवि0 ।।4।।
अंग उपांग नंदी अनुयोग, छ छेद ने मूल चार जी,
दश पयन्ना अेम पणयालीस, पाठक तेहना धार भवि0 ।।5।।
वेद त्रण ने हास्यादिक षट्, मिथ्यात्व चार कषाय जी,
चौद अभ्यंतर नवविध बाह्यनी, ग्रंथि तजे मुनिराय भवि0 ।।6।।
उपशम क्षय उपशम ने क्षायिक, दर्शन त्रण प्रकार जी,
श्रद्धा परिणति आतम केरी, नमीअे वारंवार भवि0 ।।7।।
अठ्ठावीश चौद ने षट् दुग अेक, मत्यादिकना जाण जी,
अेम अेकावन भेदे प्रणमो, सातमे पद वरनाण भवि0 ।।8।।

निवृत्ति ने प्रवृत्ति भेदे, चारित्र छे व्यवहार जी,
निजगुण स्थिरता चरण ते प्रणमो, निश्चय शुद्ध प्रकार भवि0 ।।9।।
बाह्य अभ्यंतर तप ते संवर, समता निर्जरा हेतु जी,
ते तप नमीओ भाव धरीने, भवसायरमां सेतु भवि0 ।।10।।
अे नवपदमां पण छे धर्मी, धर्म ते वरते चार जी,
देवगुरूने धर्म ते अेहमां, दो तीन चार प्रकार भवि0 ।।11।।
मारगदेशक अविनाशीपणुं, आचार विनय संकेते जी,
सहायपणुं धरता साधुजी, प्रणमो अेहिज हेते भवि0 ।।12।।
विमलेश्वर सान्निध्य करे तेहने, उत्तम जे आराधे जी,
*पद्मविजय* कहे ते भवी प्राणी, निजआतम हित साधे भवि0 ।।13।।

## 2. नवपद स्तवन

(राग : चोखलीयारी चुंदडी सखी रास रमवा आवोने)

नवपदनो महिमा सांभळजो, सहुने सुखडुं थाशे जी,
नवपद स्मरण करतां प्राणी, भवभवनां दुःख जासे जी. नव0 ।।1।।
नवपदना महिमाथी प्यारे, कुष्ट अढारे जावे जी,
खांसी खय ने रोगनी पीडा, पासे कदि नवी आवे जी. नव0 ।।2।।
अरि करी सागर जलण जलोदर, बंधनना भय जाशे जी,
चोर चरड ने शाकण डाकण, तुज नामे दूर नासे जी. नव0 ।।3।।
अपुत्रीयाने पुत्रो होवे, निर्धनीया धन पावे जी,
निराशंसपणे ध्यान धरी जे, ते नर मुक्ति जावे जी. नव0 ।।4।।
श्रीमतीने अे मंत्र प्रभावे, सर्प थयो फुलमाल जी,
अमरकुमार नवपद महिमाथी, सुख पाम्यो सुरसाल जी. नव0 ।।5।।
मयणा वयणाअे सेव्या नवपद, श्री श्रीपाल उल्लासे जी,
रोग गयो ने संपदा पाम्या, नवमे भवे शिव जाशे जी. नव0 ।।6।।

अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक, साधु महागुणवंता जी,
दर्शन ज्ञान चरण तप रूडा, अे नवपद सोहंता जी. नव0 ।।7।।
सिद्धचक्रनो महिमा अनंतो, कहेता पार न आवे जी,
दु:ख हरे वंछित पूरे, वंदन करीये भावे जी. नव0 ।।8।।
*भावसागर* कहे सिद्धचक्रनी, जे नर सेवा करशे जी,
आत्म गुण अनुभवीने प्राणी, मंगळमाळा वरशे जी. नव0 ।।9।।

**3.**

सिद्धचक्रने भजीये रे, के भवियण भाव धरी,
मद मानने तजीये रे, के कुमति दूर करी,
पहेले पदे राजे रे, के अरिहंत श्वेत तनु,
बीजे पदे छाजे रे, के सिद्ध प्रगट भणुं. सिद्धचक्र0।।1।।
त्रीजे पदे पीळा रे, के आचारज कहीअे,
चोथे पदे पाठक रे, के नीलवर्ण लहीये. सिद्धचक्र0।।2।।
पांचमे पदे साधु रे, के तप संयम शूरा,
श्याम वर्णे सोहे रे, के दर्शन गुण पुरा. सिद्धचक्र0।।3।।
दर्शन ज्ञान चारित्र रे, के तप संयम शुद्ध वरो,
भवियण चित्त आणी रे, के हृदयमां ध्यान धरो. सिद्धचक्र0।।4।।
सिद्धचक्रने ध्याने रे, के संकट सर्व टळे,
कहे गौतम वाणी रे, के अमृत पद पावे. सिद्धचक्र0।।5।।

## 4. सिद्धचक्र वर सेवा कीजे...

(राग : अवर अनादिनी चाल नित नित...)

सिद्धचक्र वर सेवा कीजे, नरभव लाहो लीजे जी,
विधिपूर्वक आराधन करतां, भव भव पातिक छीजे,
भविजन ! भजीएजी...अवर अनादिनी चाल, नित्य नि्य तजीए जी..।।1।।

देवना देव दयाकर ठाकर, चाकर सुर नर इंदा जी,
त्रिगडे त्रिभुवन नायक बेठां, प्रणमो श्री जिनचंदा... भवि०।।2।।
अज अविनाशी अकल अजरामर, केवलदंसण नाणी जी,
आव्याबाघ अनंतु वीरज, सिद्ध प्रणमो गुण खाणी... भवि०।।3।।
विद्या सौभाग्य लक्ष्मी पीठ, मंत्रराज योगपीठजी,
सुमेरु पीठ ए पंच प्रस्थाने, नमो आचरज इठ्ठु... भवि०।।4।।
अंग उपांग नंदी अनुयोग छ छेदने मूल चार जी,
दश पयन्ना एम पणचालीस, पाठक तेहना धार... भवि०।।5।।
वेद त्रण ने हास्यादिक षट्, मिथ्यात्व चार कषाय जी,
चौद अभ्यंतर नवविध बाह्यनी, ग्रंथी तजे मुनिराय... भवि०।।6।।
उपशम क्षय उपशम ने क्षायिक, दर्शन त्रण प्रकार जी,
श्रद्धा परिणति आतम केरी, नमीए वारंवार... भवि०।।7।।
अठ्ठावीश चौद षट् दुग एक, मत्यादिकना जाण जी,
एम एकावन भेदे प्रणमो, सातमे पद वरनाण... भवि०।।8।।
निवृत्ति ने प्रवृत्ति भेदे, चारित्र छे व्यवहार जी,
निजगुण स्थिरता चरण ते प्रणमो, निश्चय शुद्ध प्रकार... भवि०।।9।।
बाह्य अभ्यंतर तप ते संवर, समता निर्जरा हेतु जी,
ते तप नमीए भाव धरीने, भवसायरमां सेतु... भवि०।।10।।
ए नवपदमां पण छे धर्मी, धर्म ते वरसे चार जी,
देवगुरूने धर्म ते एहमां, दो तीन चार प्रकार... भवि०।।1।।
मारगदेशक अविनाशीपणुं, आचार विनय संकेत जी,
सहायपणुं धरता साधुजी, प्रणमो एहिज हेत... भवि०।।12।।
विमलेश्वर सान्निध्य करे तेहनी, उत्तम ते आराधे जी,
'पद्मविजय' कहे ते भवि प्राणी, निज आतम हित साधे...भवि०।।13।।

## 5. अहो भवि प्राणी रे...

(राग : भवि तुमे वंदो रे जिनआगम सुखकारी...)

अहो भवि प्राणी रे ! सेवो, सिद्धचक्र ध्यान समो नहि मेवो,
जे सिद्धचक्र आराधे, तेनी कीरति जगमां वाधे...अहो ! भवि० ।।1।।
पहेले पदे रे अरिहंत, बीजे सिद्ध बुद्ध ध्यान महंत,
त्रीजे पदे रे सूरीश्वर चोथे उवज्झायने पांचमे मुनीश्वर...अहो ! भवि० ।।2।।
छठ्ठे दरिशन कीजे, सातमे ज्ञानथी शिवसुख लीजे,
आठमे चारित्र पालो, नवमे तपथी मुक्ति भालो...अहो ! भवि० ।।3।।
ओली आंबिलनी कीजे, नवकारवाली वीश गणीजे,
त्रणे टकंना रे देववंदन, पडिलेहण पडिक्कमणां आंबेल.अहो ! भवि० ।।4।।
गुरुमुख किरिया रे कीजे, देवगुरु भक्ति चित्तमां धरीजे,
एम कहे रामनो 'शिष्य' ओली उजवजो जगदीश...अहो ! भवि० ।।5।।

## 6. अवसर पामीने रे...

(राग : आतमध्यानथी रे संतो सदा स्वरूपे रहेवुं...)

अवसर पामीने रे कीजे, नव आंबिलनी ओली !,
ओली करतां आपद जाये, रिद्धि सिद्धि लहीए बहुली...अवसर० ।।1।।
आसो ने चैत्रे आदरशुं, सुद सातमथी संभाळी रे,
आलस मेली आंबिल करशे, तस घर नित्य दिवाली...अवसर० ।।2।।
पूनमने दिन पूरी थाता, प्रेमशुं पखाली रे,
सिद्धचक्रने शुद्ध आराधी, जाप जपे जपमाली...अवसर० ।।3।।
देहरे जईने देवजुहारो, आदीश्वर अरिहंत रे,
चोवीशे जिन चाहीने पूजो, भावेशुं भगवंत...अवसर० ।।4।।
बे टंक पडिक्कमणुं बोल्युं, देववंदन त्रण काले रे,
श्री श्रीपालतणी परे समजी, चित्तमां राखो चाल...अवसर० ।।5।।

समकित पामी अंतरजामी, आराधो एकांत रे,
स्याद्वाद पंचे संचरतां, आवे भवनो अंत...अवसर० ।।6।।

सत्तर चोराणुं शुदि चैत्रीये, बारशे बनावी रे,
सिद्धचक्र गातां सुख संपत्ति, चालीने घेर आवी रे...अवसर० ।।7।।

'उदयरत्न' वाचक उपदेशे, जे नर नारी चाले रे,
भवनी भावठ ते भांजीने, मुक्तिपुरीमां म्हाले...अवसर० ।।8।।

## 7.

नवपद धरजो ध्यान, भवि तुमे नवपद धरजो ध्यान,
ए नवपदनुं ध्यान धरंता, पामे जीव विश्राम, भवि. ।।1।।

अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक, साधु सकलगुण खाण,
दर्शन ज्ञान चारित्र ए उत्तम, तप तपो बहुमान, भवि. ।।2।।

आसो चैतरमां सुदि सातमथी, पूनम लगे प्रमाण,
एम एकाशी आंबेल कीजे, वर्ष साडा चारनुं मान, भवि. ।।3।।

पडिक्कमणा दोय टंकना कीजे, पडिलेहण दोय वार,
देववंदन त्रण टंकना कीजे, देव पूजो त्रिकाळ, भवि. ।।4।।

बार आठ छत्रीस पंचवीशनो, सत्यावीश सडसठ सार,
एकावन सित्तेर पचासनो, काउस्सग्ग करो सावधान, भवि. ।।5।।

एक एक पदनुं गणणुं गणीये, गणीये दोय हजार,
एणीपरे जे तप आराधे, ते पामे भव पार, भवि. ।।6।।

करजोडी सेवक गुण गावे, मोहन गुणमणि माल,
तास शिष्य मुनि हेम कहे छे, आवागमन निवार, भवि. ।।7।।

# नवपद और श्रीपाल-मयणा की चार ढालें

## ढाळ पहेली

(राग : मीठा मधु ने मीठा मेहुला रे लोल)

आसो मासे ते ओळी आदरी रे लोल, धर्युं नवपदजीनुं ध्यान रे,
श्रीपाल महाराज मयणा सुंदरी रे लोल ।।1।।
मालवदेशनो राजीयो रे लोल, नामे प्रजापाल भुप रे. श्रीपाल0।।2।।
सौभाग्यसुंदरी रूपसुंदरी रे लोल, राणी बे रूप भंडार रे. श्रीपाल0।।3।।
एक मिथ्यात्वी धर्मनी रे लोल, बीजी जैन धर्म राग रे. श्रीपाल0।।4।।
पुत्री एकेकी बेउने रे लोल, वधे जेम बीज केरो चंद्र रे. श्रीपाल0।।5।।
सौभाग्य सुंदरीनी सुरसुंदरी रे लोल, भणे मिथ्यात्वी पास रे.श्रीपाल0।।6।।
मयणासुंदरीने, रूपसुंदरी रे लोल, भणावे जैन धर्म सार रे. श्रीपाल0।।7।।
रूपकला गुण शोभती रे लोल, चोसठ कळानी जाण रे.श्रीपाल0।।8।।
बेठो सभामां राजवी रे लोल, बोलावे बालिका दोय रे. श्रीपाल0।।9।।
सोळे शणगारे शोभती रे लोल, आवी उभी पिताजीनी पास रे. श्रीपाल0।।10।।
विद्या भण्यानुं जोवा पारखुं रे लोल, पूछे राजा तिहां प्रश्न रे.श्रीपाल0।।11।।

### (साखी)

जीव लक्षण शुं जाणवुं, कोण कामदेव घर नार,
शुं करे परणी कुमारीका, उत्तम कूल शुं आचार,
राजा पूछे चारनो आपो उत्तर एक, बुद्धिशाळी कुमारीका आपे उत्तर छेक ।।12।।
श्वास लक्षण पहेलुं जीवनुं रे लोल, रति कामदेव घर नार रे, श्रीपाल0
जाइनुं फुल उत्तम जातिनुं रे लोल, कन्या परणीने सासरे जाय रे. श्रीपाल0 ।।13।।

### (साखी)

प्रथम अक्षर विना जीवाडनार जगनो कह्यो,
मध्यम अक्षर विना संहार ते जगनो थयो,

अंतिम अक्षर विना सौ मन मीठुं होय.
आपो उत्तर एकमां जेम स्त्रीने व्हालु होय,
आपे उत्तर मयणा सुंदरी रे लोल,
मारी आंखोमां काजळ सोहाय रे. श्रीपाल0।।14।।

(साखी)

पहेलो अक्षर काढतां, सोहे नरपति वृक्ष ने दोय,
मध्यम अक्षर विना जेम, स्त्री मन व्हालुं होय,
त्रीजो अक्षर काढतां, पंडीत ने प्यारो थयो,
मांगु उत्तर एकमां, तातो पुत्रीने कह्यो.

मयणाए उत्तर आपीयो रे लोल, अर्थ त्रणेनो वादळ थाय रे. श्रीपाल0।।15।।
राजा पूछे सुर सुंदरी रे लोल, कहो पुन्यथी शुं शुं पमाय रे, श्रीपाल0।।16।।
धन यौवन सुंदर देहडी रे लोल, चोथो मन वल्लभ भरथार रे. श्रीपाल0।।17।।
कहे मयणा निज तातने रे लोल, सहु पामीये पून्य पसाय रे, श्रीपाल0।।18।।
शीयलव्रते शोभे देहडी रे लोल, बीजी बुद्धि न्याये करी होय रे. श्रीपाल0।।19।।
गुणवंत गुरुनी संगती रे लोल, मळे वस्तु पुन्यने योग रे, श्रीपाल0।।20।।
बोले राजा अभिमाने करी रे लोल, करुं निरधनने धनवंत रे, श्रीपाल0।।21।।
सर्वे लोको सुख भोगवे रे लोल, ए सघळो छे मारो पसाय रे. श्रीपाल0।।22।।
सुर सुंदरी कहे तातने रे लोल, ए साचामां शानो संदेह रे, श्रीपाल0।।23।।
राय त्रुठ्यो सुर सुंदरी रे लोल, परणावी पहेरामणी दीध रे, श्रीपाल0।।24।।
शंख पुरीनो राजीयो रे लोल, जेनुं अरिदमन छे नाम रे, श्रीपाल0।।25।।
राय सेवार्थे आवीयो रे लोल, सुर सुंदरी आपी सोय रे. श्रीपाल0।।26।।
राये मयणाने पूछ्युं रे लोल, मारी वातमां तने संदेह रे, श्रीपाल0।।27।।
मयणा कहे निज तातने रे लोल, तमे शाने करो छो अभिमान रे. श्रीपाल0।।28।।
संसारमां सुख दु:ख भोगवे रे लोल, ते तो कर्मनो जाणो पसाय रे, श्रीपाल0।।29।।
राजा क्रोधे बहु कळ कळ्यो रे लोल, भाखे मयणा शुं रोष वचन रे. श्रीपाल।।30।।

रत्न हींडोले तु हींचती रे लोल, पहेरी रेशमी ऊंचा चीर रे. श्रीपाल0।।31।।
जगत सौ जी जी करे रे लोल, तारी चाकर करे पग सेव रे. श्रीपाल0।।32।।
ते मारा पसायथी जाणजो रे लोल, रूठे रोली नांखु पलमांय रे, श्रीपाल0।।33।।
मयणा कहे तुम कुळमां रे लोल, उपजवानो क्यां जोयो तो जोश रे, श्रीपाल0।।34।।
कर्म संयोगे उपनी रे लोल, मळ्या खान पान आराम रे, श्रीपाल0।।35।।
त्हमे म्होटे मने महलावता रे लोल, मुज कर्म तणो छे पसाय रे, श्रीपाल0।।36।।
राजा कहे कर्म ऊपरे रे लोल, दीसे तने घणो हठवाद रे. श्रीपाल0।।37।।
कर्म आणेलां भरथारने रे लोल, परणावी उतारुं गुमान रे. श्रीपाल0।।38।।
राजाना क्रोधने निवारवा रे लोल, लइ चाल्यो रयवाडी प्रधान रे. श्रीपाल0।।39।।
नवपद ध्यान पसायथी रे लोल, सवी संकट दूरे पलाय रे. श्रीपाल0।।40।।
कह्युं न्याय सागरे पहेली ढाळमां रे लोल, नवपदथी नवनिधी थाय रे. श्रीपाल0।।41।।

## ढाळ बीजी

(राग : टोपीवाळाना टोळां उतर्यां)

राजा चाल्यो रे रयवाडी ए, साथे लीधो सैन्यनो परिवार रे,
साहेली मोरी ध्यान धरो अरिहंतनुं,
ढोल निशान तिहां घुरके, बरछीओ ने भालानो झलहलाट रे. साहेली ।।1।।
धूळ उडेने लोको आवता, राजा पूछे प्रधानने ए कोण रे, सा0
कहे प्रधान सुणो भुपति, ए छे सातसो कोढियानुं सैन्य रे. सा0।।2।।
राजा राणानी पासे याचवा, आवे कोढीया स्थापी राजा एक रे, सा0
कोढे गळी छे जेनी अंगुली, याचवा आव्यो कोढीया केरो दूत रे, सा0।।3।।
राणी नही रे अम रायने, ऊंचां कुळनी कन्या मले कोइ रे, सा0
दाढ खटके रे जाणे कांकरो, नयन खटके ते तो रेणुं समान रे. सा0।।4।।
वयण खटके जाणे वाउलो, राजा हैडे खटके मयणा बोल रे, सा0
कोढिया राजाने केवरावीयुं, आवजो नगरी उजेणीनी माय रे, सा0।।5।।

कीर्ति अविचल राखवा, आपीश मारी राजकुंवरी कन्या रे, सा0
उंबर राणो हवे आवीयो, साथे सातसो कोढिया केरू सैन्य रे सा0।।6।।
आव्यो वरघोडो मध्य चोकमां, खच्चर ऊपर बेठो उंबर राय रे, सा0
कोइ लुला न कोइ पांगुळा रे, कोइना मोटा सुपडा जेवा कान रे, सा0।।7।।
मोढे चांदा ने चाठा चग चगे, मुख ऊपर माखीयोनो भणकार रे, सा0
शोर बकौर सुणी सामटा, लाखो लोको जोवा भेगा थाय रे. सा0।।8।।
सर्वे लोको मळी पूछतां, भूत प्रेत वेर रखे होय पिशाच रे, सा0
भूतडा जाणीने भसे कुतरा, लोकोने मन थयो छे उत्पात रे सा0।।9।।
जान लइने अमे आवीयां, परणे अमारो राणो राज कन्या रे, सा0
कौतुक जोवाने लोको साथमां, उंबर राणो आव्यो रायनी पास रे सा0।।10।।
हवे राय मयणाने कहे सांभलो, कर्मे आव्यो करो तुमे भरथार रे, सा0
करो अनुभव सुखनो, जुओ तमारा कर्म तणो पसाय रे,
कह्युं न्याय सागरे बीजी ढाळमां, नवपद ध्याने थाशे मंगळ माळ रे सा0।।11।।

## ढाळ त्रीजी

(राग : मालव धूर उजेणी रे लाल)

तात आदेशे मयणा चिंतवे रे लोल, जे ज्ञानीए दीठुं ते थाय रे.
कर्मतणी गति पेखजो रे. लोल0 ।।1।।
अंश मात्र खेद नथी आणती रे लोल, न मुखडानो रंग पलटाय रे।।2।।
हशे जायो राजा नो के रंकनो रे लोल, पिता सोंपे छे पंचनी साख रे ।।3।।
एने देवनी पेरे आराधवो रे लोल, उत्तम कुलनी स्त्रीनो ए आचार रे ।।4।।
एम विचारी मयणा सुंदरी रे लोल, कर्युं तातनुं वचन प्रमाण रे ।।5।।
मुख रंग पुनमनी चांदनी रे लोल, शास्त्रे लग्न वेळा जाणी शुद्ध रे ।।6।।
आवी उंबर राणानी डाबी बाजुए रे लोल, जाते करे छे हस्त मेलाप रे ।।7।।
कोढी राणो कहे रायने रे लोल, काग कंठे मोती ना सोहाय रे ।।8।।
होय दासी कन्या तो परणावजो रे लोल, कोढी साथे न राज कन्याय रे ।।9।।

माता मयणानी झुरती रे लोल, रोवे कुटुंब सखी परिवार रे ।।10।।
कोइ राजानो रोष धिक्कारता रे लोल, कोइ कहे कन्या अपराध रे ।।11।।
देखी राजकुंवरी अती दीपती रे लोल, रोगी सर्वे थया रळीयात रे ।।12।।
चाली मयणा उंबरनी साथमां रे लोल, ज्यां छे कोढी तणो जानी वास रे ।।13।।
हवे उंबर राणो मन चिंतवे रे लोल, धिक् धिक् म्हारो अवतार रे ।।14।।
सुंदर रंगीली छबी शोभती रे लोल, तेनुं जीवन कर्युं में धूळ रे ।।15।।
कहे उंबर राणो मयणा सुंदरी रे लोल, तमे उंडो करोने आलोच रे ।।16।।
त्हारी सोना सरीखी छे देहडी रे लोल, मारा संगतथी थासे विनाश रे ।।17।।
तुं तो रूपे करी रंभा सारीखी रे लोल, मुज कोढी साथे शुं स्नेह रे ।।18।।
पति उंबर राणाना वचन सांभळी रे लोल, मयणा हैडे दु:ख न समाय रे ।।19।।
ढळक ढळक आंसु ढळे रे लोल, काग हसवुं देडक जीव जाय रे ।।20।।

## (साखी)

कमलिनी जळमां वसे, चंद्र वसे आकाश, जे जीहां रे मन वसे, ते तीहां रे पास.
हवे मयणा कहे उंबर रायने रे लोल, तमे व्हाला छो जीवन प्राण रे. कर्म0 ।।21।।
पश्चिम रवि उगे नहि रे लोल, नवि मुके जलधि मर्याद रे कर्म0।।22।।
सती अवर पुरुष इच्छे नहि रे लोल, कदी प्राण जाय परलोक रे. कर्म0 ।।23।।
पिता पंचनी साखे परणावीयो रे लोल, अवर पुरुष बांधव होय रे. कर्म0 ।।24।।
हवे पाय लागीने वीनवुं रे लोल, तमे बोलो विचारीने बोल रे. कर्म0 ।।25।।
रात्री वीती एम वातमां रे लोल, बीजे दीन थयो परभात रे. कर्म0 ।।26।।
हवे मयणा आदिश्वर भेटवा रे लोल, जाय साथे लइ भरथार रे. कर्म0।।27।।
भरी कुसुम चंदने जइ पूजीया रे लोल, प्रभु कंठे ठवी फुलनी माळ रे. कर्म0 ।।28।।
करे चैत्यवंदन भावे भावना रे लोल, धरे काउस्सग्ग मयणा ध्यान रे. कर्म0।।29।।
प्रभु हाथे बीजोरूं शोभतुं रे लोल, प्रभु कंठे सोहे फुलनी माळ रे. कर्म0।।30।।
शासन देव सहु देखता रे लोल, आप्युं बीजोरू ने फुल माळ रे. कर्म0।।31।।

लीधुं उंबर राणाए ते हाथमां रे लोल, मयणा हैडे ते हर्ष न माय रे. कर्म0।।32।।
पौषधशालामां गुरु वांदवा रे लोल, चाली मयणा साथे भरथार रे. कर्म0।।33।।
गुरु आपे छे धर्मनी देशना रे लोल, दोहिलो मनुष्य अवतार रे. कर्म0।।34।।
पांचे भूल्याने चारे चुकीयो रे लोल, त्रणनुं जाण्युं न नाम रे कर्म0।।35।।
जगत ढंढेरो फेरीयो रे लोल, छे श्रावक अमारुं नाम रे. कर्म0।।36।।
पप्पा शुं परख्यो नहि रे लोल, व्हालो ददो कीधो दूर रे. कर्म0।।37।।
लल्लासुं लागी रह्यो रे लोल, व्हालो नन्नो रह्यो हजुर रे. कर्म0।।38।।
उंबर मयणा ए गुरु वांदीओ रे लोल, गुरु दीए छे धर्मलाभ रे. कर्म0।।39।।
सखी परिवारे तुं शोभती रे लोल, आज सखी न दीसे एक रे. कर्म0।।40।।
सर्व वृत्तांत सुणावीयो रे लोल, एक वातनुं मने छे दु:ख रे.कर्म0।।41।।
जैन शासननी हेलना रे लोल, करे मूर्ख मिथ्यात्वी लोक रे. कर्म0।।42।।
हवे गुरुने मयणा विनवे रे लोल, मटे रोग जो मुज भरथार रे. कर्म0।।43।।
लोक निंदा टले जेहथी रे लोल, उपाय कहो गुरुराज रे. कर्म0।।44।।
यंत्र जडी बुटी औषधि रे लोल, भणी मंत्र बीजा उपचार रे. कर्म0।।45।।
गृहस्थीने ए कहेवा तणो रे लोल, नहि साधुनो ए आचार रे. कर्म0।।46।।
गुरु कहे मयणा सुंदरी रे लोल, आराधो नवपद सार रे. कर्म0।।47।।
जेथी विघन सहु दूर थशे रे लोल, धर्म उपर राखो मन दृढ रे. कर्म0।।48।।
कहे न्याय सागर त्रीजी ढाळमां रे लोल, तमे सांभळजो नरनार रे. कर्म0।।49।।

## ढाळ चोथी

(राग : रातुं रातुं गुलाबनुं फुल, गुलाबे रमतीती)

मयणा सिद्धचक्र आराधे गुलाबे रमतीती
निज पति उंबरनी साथे जापोने जपतीती ।।1।।
पहेले पदे अरिहंत पूजो गुलाबे रमतीती,
हण्या घाती अघाती धूजे जापोने जपतीती ।।2।।
त्रण लोकनी ठकुराइ छाजे गुलाबे रमतीती,
वाणी पुर योजनमां गाजे जापोने जपतीती ।।3।।

बीजे सोहे सिद्ध महाराज गुलाबे रमतीती
त्रण लोकना थइ शिरताज जापोने जपतीती ।।4।।
त्रीजे पदे आचारज जाणो गुलाबे रमतीती,
मली लाकडी अंध प्रमाणो जापोने जपतीती ।।5।।
चोथे पदे उपाध्याय सोहे गुलाबे रमतीती,
भणे भणावे जन मन मोहे जापोने जपतीती ।।6।।
पद पांचमे साधु मुनिराया गुलाबे रमतीती,
गुण सत्तावीश सोहाया जापोने जपतीती ।।7।।
मन वचन गोपवी काया गुलाबे रमतीती
वंदुं तेवा मुनिवर राया जापोने जपतीती ।।8।।
छठ्ठे दर्शन पद छे मूळ गुलाबे रमतीती,
कोइ आवे न तस तोल रे जापोने जपतीती ।।9।।
सोहे सातमुं पद वरनाण गुलाबे रमतीती,
तेना भेद एकावन जाण जापोने जपतीती ।।10।।
ज्ञान पांचमुं केवल थाय गुलाबे रमतीती,
त्रण लोकना भाव जणाय जापोने जपतीती ।।11।।
पद आठमे चरित्र आवे गुलाबे रमतीती,
देवो इच्छा करे ना पावे जापोने जपतीती ।।12।।
भवि जीवो ते भावना भावे गुलाबे रमतीती,
कोई रीते उदयमां आवे जापोने जपतीती ।।13।।
करो नवमे पद तप भावे गुलाबे रमतीती,
आठ कर्मो बळीने राख थावे जापोने जपतीती ।।14।।
रिद्धि आतम अनंती पावे गुलाबे रमतीती,
देव देवी मली गुण गावे जापोने जपतीती ।।15।।
प्रभुपूजो केशर मद घोळी गुलाबे रमतीती,
भरी हरखे हेम कचोली जापोने जपतीती ।।16।।

भरी शुद्ध जले अंघोली गुलाबे रमतीती
चउगतिना दु:ख हरे ढोली जापोने जपतीती ।।17।।
दुरगतिना दु:ख दूर ढोली गुलाबे रमतीती,
आसो सुदी सातमथी खोली जापोने जपतीती ।।18।।
करो नव आंबिलनी ओळी गुलाबे रमतीती,
मळी सरखी सैयरोनी टोली जापोने जपतीती ।।19।।
मयणा धरे नवपद ध्यान गुलाबे रमतीती,
पति काया थइ कंचनवान जापोने जपतीती ।।20।।
सौ मंत्रमां छे शिरदार गुलाबे रमतीती,
तमे आराधो सहु नरनार जापोने जपतीती ।।21।।
न्याय सागरे कही ढाल चोथी गुलाबे रमतीती,
सुणो श्रीपाळ राजानी पोथी जापोने जपतीती ।।22।।

प्रतिक्रमण उपयोगी संग्रह

# सज्झाय विभाग

## 1. आठ मद

मद आठ महामुनि वारीये, जे दुर्गतिना दातारो रे,
श्री वीर जिणेसर उपदिशे, भाखे सोहम गणधारो रे, मद.।।1।।
हा जी जातिनो मद पहेलो कह्यो, पूर्वे हरिकेशीये कीधो रे,
चंडाळतणे कुल उपन्यो, तपथी सवि कारज सीधो रे, मद.।।2।।
हा जी कुळमद बीजो दाखीयो, मरिची भवे कीधो प्राणी रे,
कोडाकोडी सागर भवमां भम्यो, मद म करो इम मन जाणी रे, मद.।।3।।
हा जी बळमदथी दु:ख पामीया, श्रेणिक वसुभूति जीवो रे,
जइ नरक तणां दु:ख भोगव्यां, मुख पाडंता नित रीवो रे,मद.।।4।।
हा जी सनतकुमार नरेसरू, सुर आगळ रूप वखाण्युं रे,
रोम रोम काया बगडी गई, मद चोथानुं ए टाणुं रे, मद.।।5।।
हा जी मुनिवर संयम पाळतां, तपनो मद मनमां आयो रे,
थया कुरगडु ऋषि राजीया, पाम्या तपनो अंतरायो रे, मद.।।6।।
हा जी देश दशारणनो धणी, दशार्णभद्र अभिमानी रे,
इन्द्रनी ऋद्धि देखी बुझीयो, संसार तजी थयो ज्ञानी रे, मद.।।7।।
हा जी स्थूलीभद्रे विद्यानो कर्यो, मद सातमो जे दु:खदाइ रे,
सुत्र पूरण अर्थ न पामीया, जुओ मानतणी अधिकाइ रे, मद.।।8।।
राय सुभुम षट् खंडनो धणी, लाभनो मद कीधो अपार रे,
हय गय रथ सब सायर गयुं, गयो सातमी नरक मोझार रे, मद.।।9।।

इम तन धन जोवन राज्यनो, म धरो मनमां अहंकारो रे,
ए अस्थिर असत्य सवि कारमुं, विणशे क्षणमां बहु वारो रे, मद.।।10।।
मद आठ निवारो व्रत धारी, पाळो संयम सुखकारी रे,
कहे *मानविजय* तो पामशो, अविचळ पदवी नरनारी रे, मद.।।11।।

## 2. स्वार्थी संसार

सगुं तारूं कोण साचुं रे, संसारीआमां सगुं0
पापनो तो नाख्यो पायो, धरममां तुं नहि धायो,
डाह्यो थइने तुं दबायो रे संसारीआमां, सगुं0।।1।।
कुडुं कुडुं हेत कीधुं, तेने सांचुं मानी लीधुं,
अंतकाळे दु:ख दीधुं रे संसारीआमां, सगुं0।।2।।
विसवासे वहाला कीधा, पीयाला झेरनां पीधा,
प्रभुने विसारी दीधा रे संसारीआमां सगुं0।।3।।
मनगमतामां महाल्यो, चोरने मारग चाल्यो,
पापीओनो संग झाल्यो रे संसारीआमां, सगुं0।।4।।
मुखे बोल्यो मीठी वाणी, धन कीधुं धुळधाणी,
जीती बाजी गयो हारी रे, संसारीआमां सगुं0।।5।।
घरने धंधे घेरी लीधो, कामिनीये वश कीधो,
*ऋषभदास* कहे दगो दीधो रे संसारीआमां, सगुं0।।6।।

## 3. वैराग्य की सज्झाय

उंचा ते मंदिर माळीया, सोड वाळीने सूतो,
काढो काढो रे एने सहु कहे, जाणे जन्म्यो ज नहोतो,
एक रे दिवस एवो आवशे ।।1।।
मन सबळो जी साले, मंत्री मळ्या सवि कारमां,
तेनुं कांइ नवि चाले. एक0।।2।।

साव सोनाना रे सांकला, पहेरण नव नवा वाघा,
धोळु रे वस्त्र एना कर्मनुं, ते तो शोधवा लाग्या. एक0।।3।।

चरू कढाइयां अति घणा, बीजानुं नहिं लेखुं,
खोखरी हांडी एना कर्मनी, ते तो आगळ देखुं. एक0।।4।।

केना छोरू ने केना वाछरू, कोना मायने बाप,
अंतकाले जावुं जीवने एकलुं, साथे पुण्य ने पाप. एक0।।5।।

सगी रे नारी एनी कामिनी, उभी टगमग जुवे,
तेनुं पण कांइ चाले नहीं, बेठी धुसके रूवे. एक0।।6।।

व्हालां ते व्हालां शुं करो ? व्हालां वोळावी वळशे,
व्हालां ते वनना लाकडा, ते तो साथे ज बळशे. एक0।।7।।

नहीं त्रापो नहीं तुंबडी, नथी तरवानो आरो,
*उदयरत्न* प्रभु इम भणे, मने पार उतारो. एक0।।8।।

## 4. उपदेश की सज्झाय

आतमध्यानथी रे, संतो सदा स्वरूपे रहेवुं
कर्माधीन छे सहु संसारी, कोइने कांइ न कहेवुं. आतम0।।1।।

कोइ जन नाचे, कोई जन खेले, कोई जन युद्ध करंता,
कोइ जन जन्मे, कोइ जन रूवे, देशाटन कोइ करता. आतम0 ।।2।।

वेळु पीली तेलनी आशा, मूरख जन मन राखे,
बावळीओ वावीने केरी, आंबा रस शुं चाखे, आतम0।।3।।

रागीथी तो राग न कीजे, द्वेषीथी नहि द्वेष,
समभावे सहु जीव ने गणीए, तो शिवसुख नो लेश. आतम0।।4।।

झूठी जगनी पुद्गलबाजी, त्यां नवि रहिए राजी,
तन धन जोबन साथ न आवे, आवे न मात पिताजी. आतम0।।5।।

लक्ष्मी सत्ता थी शुं थाये, जोजो मनमां विचारी,
एक दिन छोडी जाउ आ, दुनिया सहु विसारी. आतम0।।6।।
भल भला पण उठी चाल्या, जोने केइक चाले,
बिलाडीनी दोटे चडीयो, उंदरडो शुं महाले. आतम0।।7।।
काळझपाटा सहुने वागे, योगीजन झट जागे,
*चिदानंदघन* आतम अर्थी, रहेजो सौ वैरागे. आतम0।।8।।

## 5. जग सपनेकी माया

जग सपनेकी माया रे, नर ! जग सपने की माया,
सपने राज पाया कोई रंक ज्युं, करत काज मन भाया,
उघडत नयन हाथ देख खप्पर, मनहु मन पछताया रे, नर.।।1।।
चपला चमकार जिम चंचळ, नरभव सूत्र बताया,
अंजलि जल सम जगपति जिनवर, आयु अथिर दरसाया रे. नर.।।2।।
यौवन संध्याराग रूप फुनि, मळ मलीन अति काया,
विणसत जास विलंबन रंचक, जिम तरूवर की छाया रे, नर.।।3।।
सरिता वेग समान ज्युं संपत्ति, स्वारथ सुत मित जाया,
आमिष लुब्ध मीन जिम तिम संग, मोहजाळ बंधाया रे, नर.।।4।।
ए संसार असार सार पण, या में इतना पाया,
*चिदानंद* प्रभु सुमरन सेति, धरिये नेह सवाया रे, नर.।।5।।

## 6. चंचल मन

मनाजी तुं तो जिन चरणे चित्त लाय, तेरो अवसर वीत्यो जाय,
मनाजी तुं तो जिन चरणे चित्त लाय,
उदर भरण के कारणे रे, गौआ वन में जाय,
चारो चरे चिंहु दिशि फिरे रे, वांकुं चित्तडुं वाछरूआ मांय. मना0।।1।।
चार पांच सहेली मलीने, हिलमिल पाणीए जाय,
ताली दीये खडखड हसे रे, वांकु चित्तडुं गागरीयां मांही. मना0।।2।।

नटवो नाचे चोकमां रे, लख आवे लख जाये,
वंस चढी नाटक करे रे, वांकुं चित्तडुं दोरडीयां मांही. मना0।।3।।
सोनी सोनाना घडे रे, वली घडे रूपाना घाट,
घाट घडे मन रीझवे रे, वांकुं चित्तडुं सोनैया मांही. मना0।।4।।
जुगटीयांने मन जुगटुं रे, कामिनीने मन काम,
*आनंदघन* एम विनवे रे, ऐसे प्रभु का धरो ध्यान. मना0।।5।।

## 7. वैराग्य

मानमां मानमां मानमां रे, जीव मारूं करीने मानमां,
अंतकाळे तो सर्व मूकीने, ठरवुं छे जइ श्मशानमां रे, जीव. ।।1।।
वैभव विलासी पाप करो छो, मरी तिर्यंच थाशो रानमां रे, जीव. ।।2।।
रागना रंगमां भूला भमो छो, पडशो चोराशीनी खाणमां रे. जीव. ।।3।।
जगतमां तारूं कोई नथी रे, मन राखजो भगवानमां रे, जीव. ।।4।।
वृद्धावस्था आवशे त्यारे, धाको पडशे तारा कानमां रे, जीव. ।।5।।
कोइ दिन जानमां तो कोइ दिन काणमां, मिथ्या फरे अभिमानमांरे जीव. ।।6।।
एक दिन सुखमां तो एक दिन दु:खमां, सघळा ते दिन सरखा जाणमां रे, जीव. ।।7।।
सुत वित्त दारा पुत्री ने भृत्यो, अंते ते तारा जाणमां रे, जीव. ।।8।।
आयु अथिरने धन चपळ छे, फोगट मोह्यो तेना तानमां रे, जीव. ।।9।।
छेल बटुक थइ शाने फरो छो, अधिक गुमान मान तानमां रे, जीव. ।।10।।
मुनि *केवळ* कहे सुणो सज्जन सहु, चित्त राखजो प्रभु ध्यानमां रे, जीव. ।।11।।

## 8. क्रोध

कडवा फळ छे क्रोधना, ज्ञानी एम बोले रे,
रीस तणो रस जाणीए, हळाहळ तोले रे, कडवा0।।1।।
क्रोधे क्रोड पूरव तणुं, संजम फळ जाय,
क्रोध सहित तप जे करे, ते तो लेखे न थाय, कडवा0।।2।।

साधु घणो तपियो हतो, धरतो मन वैराग्य,
शिष्यना क्रोध थकी थयो, चंडकोशियो नाग कडवा0।।3।।
आग उठे जे घर थकी, ते पहेलुं घर बाळे,
जळनो जोग जो नवि मळे, तो पासेनुं परजाळे, कडवा0।।4।।
क्रोध तणी गति एहवी, कहे केवळनाणी,
हाण करे जे हेतनी, जाळवजो एम जाणी, कडवा0।।5।।
*उदयरत्न* कहे क्रोधने, काढजो गले साही,
काया करजो निरमळी, उपशम रस नाही. कडवा0।।6।।

## 9. मान

रे जीव ! मान न कीजीए, माने विनय न आवे रे,
विनय विना विद्या नहि, तो किम समकित पावे रे, रे जीव.।।1।।
समकित विण चारित्र नहि, चारित्र विण नहि मुक्ति रे,
मुक्तिना सुख छे शाश्वतां, तो केम लहिये युक्ति रे, रे जीव.।।2।।
विनय वडो संसारमां, जे गुणमांहे अधिकारी रे,
माने गुण जाये गळी, प्राणी जो जो विचारी रे, रे जीव.।।3।।
मान कर्युं जो रावणे, ते तो रामे मार्यो रे,
दुर्योधन गर्वे करी, अंते सवि हार्यो रे, रे जीव.।।4।।
सूकां लाकडा सारिखो, दुःखदायी ए खोटो रे,
उदयरत्न कहे मानने, देजो देशवटो रे, रे जीव.।।5।।

## 10. आत्मा

क्यां तन मांजता रे ! एक दिन मिट्टी में मिल जाना,
मिट्टीमें मिल जाना बंदे, खाख में खप जाना. क्यां0।।1।।
मिटिया चुन चुन महल बंधाया, बंदा कहे घर मेरा,
एक दिन बंदे उठ चलेंगे, यह घर तेरा न मेरा. क्यां0।।2।।

मिटीया ओढावन मीटीया बीछावण, मिट्टीका सीराना,
इस मिटीयाकुं एक भूत बनाया, अमर जाल लोभाना. क्यां0।3।।
मिटीया कहे कुंभारने रे, तुं क्यां खुंदे मोय,
एक दिन ऐसा आवेगा प्यारे, में खुंदूंगी तोय क्यां0।।4।।
लकडी कहे सुथारने रे, तुं क्या छोले मोय,
एक दिन ऐसा आवेगा प्यारे, में भुंजुगी तोय. क्यां0।।5।।
दान शीयल तप भावना रे, शिवपूर मारग चार,
आनंदघन कहे चेत ले प्यारे, आखिर जाना गमार. क्यां0।।6।।

## 11. आप स्वभाव

आप स्वभावमां रे, अवधु सदा मगन में रहना,
जगत जीव है कर्माधीन, अचरिज कछुअ न लीना. आप० ।।1।।
तुं नहि केरा कोई नहि तेरा, क्या करे मेरा मेरा,
तेरा है सो तेरी पासे, अवर सब अनेरा. आप० ।।2।।
वपु विनाशी तुं अविनाशी, अब है इनका विलासी,
वपु संग जब दूर निकाशी, तब तुम शिव का वासी. आप० ।।3।।
राग ने रीसा दोय खवीसा, ए तुम दुःख का दीसा,
जब तुम इनकुं दूर करीसा, तब तुम जग का ईसा. आप० ।।4।।
परकी आशा सदा निराशा, ए है जग जन पाशा,
वो काटननुं करो अभ्यासा, लहो सदा सुखवासा. आप० ।।5।।
कबहीक काजी कबहीक पाजी, कबहीक हुआ अपभ्राजी ।
कबहीक जग में कीर्ति गाजी, सब पुद्गल की बाजी आप० ।।6।।
शुद्ध उपयोग ने समता धारी, ज्ञान ध्यान मनोहारी,
कर्म कलंककुं दूर निवारी, जीव वरे शिव नारी, आप० ।।7।।

## 12. आठ कर्मो की सज्जाय

कर्मो लाग्या छे मारे केडले, घडीअ घडीअ आतमराम मुंझाय रे,
प्रभुजी मारा कर्मो लाग्या छे मारे केडले. ।।1।।
ज्ञानावरणीअ ज्ञान रोक्यो, दर्शनावरणीअ कीधो दर्शन घात रे. प्र0।।2।।
वेदनीय कर्मे वेदना मोकली, मोहनी कर्मे खवराव्यो बहु मार रे.प्र0।।3।।
आयुष्य कर्म ताणी बांधीयुं, नाम कर्मे नचाव्यो बहु नाच रे. प्र0।।4।।
गोत्र कर्मे बहु रझडावीयो, अंतराय कर्मे वाल्यो छे आडो आंक रे. प्र0।।5।।
आठ कर्मो नो राजा मोह छे, मुंजावे मने चोवीस कलाक रे. प्र0।।6।।
आठ कर्मोने जे वश करे, तेने घर होशे मंगलिक माल रे. प्र0।।7।।
आठ कर्मोने जे जीतशे, तेनो होशे मुक्तिपुरीमां वास रे. प्र0।।8।।
हीरविजय गुरू हीरलो, पंडित *रत्नविजय* गुण गाय रे. प्र0।।9।।

## 13. तप की सज्झाय

कीधा कर्म निकंदवा रे, लेवा मुक्तिनुं दान,
हत्या पातीक छूटवा रे, नहि कोई तप समान,
भविकजन ! तप करजो मन शुद्ध. ।।1।।
उत्तम तपना योगथी रे, सेवे सुरनर पाय,
लब्धि अठ्ठावीश उपजे रे, मनोवांछित फळ थाय. भविकजन0।।2।।
तीर्थंकर पद पामीये रे, नासे सघळा रोग,
रूप लीला सुख साहिबी रे, लहीए तप संयोग. भविकजन0।।3।।
ते शुं छे संसारमां रे, तपथी न होवे जेह,
जे जे मनमां कामीए रे, सफळ फळे सहि तेह. भविकजन0।।4।।
अष्ट कर्मना ओघने रे, तप टाळे ततकाळ,
अवसर लहीने तेहनो रे, खप करजो उजमाळ. भविकजन0।।5।।
बाह्य अभ्यंतर जे कह्या रे, तपना बार प्रकार,
होजो तेहनी चालमां रे, जेम धन्नो अणगार. भविकजन0।।6।।

*उदयरत्न* कहे तप थकी रे, वाधे सुजस सनूर,
स्वर्ग हुवे घर आंगणे रे, दुर्गति जावे दूर. भविकजन0।।7।।

## 14. एकादशी की सज्झाय

आज मारे एकादशी रे, नणदल मौन करी मुख रहीए,
पूछ्यानो पडिउत्तर पाछो, वेहने कांई न कहीए. आज0।।1।।

मारो नणदोइ तुजने वहालो, मुजने तारो वीरो,
धूमाडानां बचकां भरतां, हाथ न आवे हीरो. आज0।।2।।

घरनो धंधो घणो कर्यो पण, एके न आव्यो आडो,
परभव जाता पालव झाले, ते मुजने देखाडो. आज0।।3।।

मागसर शुदि अगीयारस मोटी, नेवुं जिनना निरखो,
दोढसो कल्याणक मोटा, पोथी जोइ जोइ हरखो.आज0।।4।।

सुव्रत शेठ थयो शुद्ध श्रावक, मौन धरी मुख रहीयो,
पावके पुर सघळो परजाळ्यो, एहनो कांई न दहीयो. आज0।।5।।

आठ पहोर पोसह ते करीए, ध्यान प्रभुनुं धरीए,
मन वच काया जो वश करीए, तो भवसागर तरीए आज0।।6।।

ईर्यासमिति भाषा न बोले, आडु अवळुं पेखे,
पडिक्कमणाशुं प्रेम न राखे, कहो केम लागे लेखे. आज0।।7।।

कर उपर तो माळा फिरती, जीभ फरे मुखमांही,
चित्तडुं तो चिहुं दिशिए डोले, इण भजने सुख नांहि. आज0।।8।।

पौषधशाळे भेगा थईने, चार कथा वळी साधे,
कांईक पाप मिटावण आवे, बार गणुं वळी बांधे. आज0।।9।।

एक उठंती आळस मोडे, बीजी उंघे बेठी,
नदीओमांथी कांइक निसरती, जई दरियामां पेठी.आज0।।10।।

आई बाई नणंद भोजाई, न्हानी म्होटी वहुने,
सासु ससरो मा ने मासी, शिखामण छे सहुने. आज0।।11।।
*उदयरत्न* वाचक उपदेशे, जे नरनारी रहेशे,
पोसहमांहे प्रेम धरीने, अविचळ लीला लहेशे. आज0।।12।।

## 15. मोह से तेरा कमाया

मोह से तेरा कमाया, धन यही रह जाएगा,
प्रेम से अति पुष्ट किया, तन जलाया जाएगा मोह0 ।।1।।
प्रभु भजन की भावना बिन, परलोक में क्या पाएगा,
कुछ कमाइ यहां न कीनी, खाली हाथे जाएगा, मोह0 ।।2।।
जन्म मानव का अपूरव, पाके कर जग का भला,
मत गला घोटो किसी का, जीवन यह उड जाएगा, मोह0 ।।3।।
झूठ छोडो चोरी छोडो, छोड दो परनार को,
माया ममता को तजो तब, मुक्त हो झट जाएगा, मोह0 ।।4।।
तन फना है धन फना है, स्थिर कोई जग में नही,
प्राण प्यारा पुत्र दारा, सब यहां रह जाएगा मोह0 ।।5।।
ज्ञान धर ले ध्यान धर ले, चरण में कर ले रूचि,
चपल जग की सब ही बाजी, छीनक में उड जाएगी, मोह0 ।।6।।
मात नहीं है तात नहीं हैं, सुत नहीं तेरा सगा,
स्वार्थ से सब अपने होते, अंत में देते दगा. मोह0 ।।7।।
मोह से क्यों मर रहा है, ध्यान से कर तन सफा,
तप करी ले जप करी लो, भजन कर ले लो नफा, मोह0 ।।8।।
एकला यहां पे तुं आया, एकला ही जायगा,
क्यों बूरे तुं कर्म करता, नरक में दु:ख पायगा, मोह0 ।।9।।
वीर जिन उपदेश देते, जो यह दिल में ठायगा,
आत्म कमले *लब्धि* लीला, जल्दी वो नर पायगा मोह0 ।।10।।

# गुरु भक्ति गीत-1

(राग : तूं प्यार का सागर है)

गुरुवर तेरे चरणों की यदि धूल ही मिल जाये,
सच कहता हूँ मेरी तकदीर बदल जाये गुरुवर० ।।1।।
कहते है तेरी करुणा, दिन रात बरसती है,
एक बुंद जो मिल जाये (२) दिल की कली खिल जाये गुरुवर० ।।2।।
मन बडा चंचल है, कैसा तेरा भजन करुं,
जितना इसे समझाए (२) उतना ही मचलता है गुरुवर० ।।3।।
गुरुवर इस जीवन की, बस एक तमन्ना है,
आप सामने हो मेरे (२) मेरा दम ही निकल जाये गुरुवर० ।।4।।
नजरो से गिराना नहीं, चाहे तो भी सजा देना,
नजरो से जो गिर जाऊं, मुश्किल है सम्हल पाना, गुरुवर० ।।5।।

# श्री प्रेमसूरि महाराजा गुरु स्तुति

तपगच्छ गगने शोभता, श्री आत्मकमलसूरीश्वरा,
तस पाटने शोभावतां, महाज्ञानी दानसूरीश्वरा,
सूरिदानपट्ट परंपरामां, प्रथम प्रेमसूरीश्वरा,
करुं नमन श्री गुरु प्रेमचरणे, आपजो आशिष सदा ।।1।।
वात्सल्यनो जाणे महासागर लहेराइ रह्यो,
करुणातणो महाधोध जेनां, जीवनमां व्यापी रह्यो,
आंखो जुओ गुरुप्रेमनी, सद्भाव छलकाइ रह्यो,
करुं नमन श्री गुरु प्रेमचरणे, आपजो आशिष सदा ।।2।।
दीक्षा लइ एकांतमां, धूणी धखावी ज्ञाननी,
सिद्धांतनां बनी पारगामी, ल्हाणी कीधी ज्ञाननी,
गुरुने वसाव्या हृदयमां, गुरुना हृदयमां जे वस्यां,
करुं नमन श्री गुरु प्रेमचरणे, आपजो आशिष सदा ।।3।।

गुरुए बनाव्यां गणी अने, पंन्यास पाठक पण कर्या,
आचार्य पदनी वात सुणतां, आंखथी आंसु सर्या,
आज्ञा बळे आचार्यपद पर, शिष्यने स्थापित कर्या,
करुं नमन श्री गुरु प्रेमचरणे, आपजो आशिष सदा ।।4।।
दस शिष्य मुज गुरुने न थाए, शिष्य मुज हुं ना करुं,
गुरु प्रेमनी हती आ प्रतिज्ञा, शिष्य सहु गुरुनां करुं,
आदर्शनो इतिहास रचनारा, हतां गुरु प्रेम ए,
करुं नमन श्री गुरु प्रेमचरणे, आपजो आशिष सदा ।।5।।
संयम ग्रही जेणे जीवनमां नित्य एकासणा कर्या,
मध्याह्न काले स्थंडिलार्थे तप्तभूमि पर डग भर्या,
प्राचीन को परमर्षीनां जस दर्शने दर्शन थतां,
करुं नमन श्री गुरु प्रेमचरणे आपजो आशिष सदा ।।6।।
त्रणसो अधिक शिष्यो तणां गुरु गच्छनायक जे हतां,
महाकर्मशास्त्र अगाधसिन्धु-ग्रन्थसर्जक जे हतां,
शासनप्रभावक शिष्यगण जन्मावनारा जे हतां,
करुं नमन श्री गुरु प्रेमचरणे आपजो आशिष सदा ।।7।।
लइ जन्म राजस्थानमां, गुजरातने गांडु कर्युं,
साधी समाधि स्तंभतीर्थे, मृत्युने महोत्सव कर्युं,
जस नाम लेतां काम जाये नाम मंत्र समु ठर्युं,
करुं नमन श्री गुरु प्रेमचरणे, आपजो आशिष सदा ।।8।।
अगणित गुणभंडार छो, गुरु ! गुण गावा केटला ?
स्वर्गे गया गुरु आप आपो, गुण खोबा जेटला,
'मुक्तिकिरण' प्रगटाववा, गुरु गुण बस छे एटला,
करुं नमन श्री गुरु प्रेमचरणे आपजो आशिष सदा ।।9।।

# गुरु भक्ति

(राग : जनम जनम का साथ है...)

कंकुबाई के नंद को है वंदन हमारा, वंदन हमारा,
पिंडवाडा का रत्न निराला, जग जीवन आधारा,
कंकुबाईके नंद को...।।1।।

जिनशासन रखवाला, त्याग तपो धन प्यारा,
कर्म साहित्य धारक, जिनागम रखवाला,
''सिद्धांत महोदधि'' नाम धारक, जग में जय जयकारा,
कंकुबाईके नंद को...।।2।।

ज्ञानी ध्यानी पूरा, मिथ्यात्व कर दूरा,
इन्द्रियवश में शुरा, दे उपदेश मधूरा,
संयम मार्ग का दर्शन देकर, भ्रांति भ्रम निवारा,
कंकुबाईके नंद को...।।3।।

गुरुवर श्री प्रेमसूरीश्वर को सेवे सुरनर इन्द्र,
उपकारी गुरु दानसूरीश्वर गुरुकुल चित्त चंद्र,
सकल संघ के गुरुवर तुम तो, हो एक सहारा,
कंकुबाईके नंद को...।।4।।

# श्री रामचन्द्रसूरि महाराजा-गुरुस्तुति

समकित दायक ओ गुरु, उपकार तुम शे वर्णवुं,
अगणित गुण तुजमां भर्या, चरणे नमावुं शीष हुं,
क्रोडो भवे पण ओ गुरु, तुज चरणनी रज हुं बनुं,
ऋणमुक्त तोये न थउं, एथी वधारे शुं कहुं ।।1।।

सूरि प्रेम पाटे प्रथम पटधर, तुं बनी विराजतो,
सूरि राम तुज साम्राज्यमां, सुविशाल गच्छ महालतो,

सत्तर अधिक सो शिष्यनो, उद्धारनारो तुं हतो,
वय पुण्य पर्याये गुणे, सहुथी वडेरो तुं हतो ।।2।।
दहेवाणमां जन्म्या अने, गंधारमां दीक्षित बन्या,
मुनिमांथी गणि पंन्यासने, उवज्झाय आचारज बन्या,
निज देह छोडी दर्शने, मृत्यु समाधि ने वर्या,
साबरमतीए विलीन थई, चिरकाळ नवजीवन वर्या ।।3।।
सूरिराम एवुं नाम पण, मुज कानमां अथडाय ज्यां,
तन मन अने क्रोडो रुंवाटा, उल्लसित थइ जाय त्यां,
कहेवाय छे के रामनामे, पत्थरो पण तरी जतां,
तारो गुरु अमने अमे, तुम भक्त केम भूली जतां ।।4।।
कलिकाळमां प्रभु शासने, आप ज दीवादांडी हता,
छो आंधी के तोफान आवे, आप तो अणनम हता,
तिथिप्रश्न के संमेलने पण, आप जरीये ना डग्यां,
ग्रही सत्यपक्ष असत्य सामे, आप जीवनभर लड्यां ।।5।।
सूरिराम तारा नयनमां, वात्सल्यना झरणा वहे,
सूरिराम तारा वयणमां, जिनवचनना तथ्यो रहे,
सूरिराम तारा स्मरणामां, मन मारुं आनंदे रहे,
सूरिराम तारा चरणमां, मस्तक सदा मारुं रहे ।।6।।
अज्ञानमां अथडाउं त्यारे, सूर्य बनीने आवजो,
भवतापमां तपतो जुओ तो, चन्द्र बनीने ठारजो,
उन्मार्गमां क्यारे जुओ तो, राम बनीने उगारजो,
जे जे रुपे हुं करुं प्रतीक्षा, ते ते स्वरुपे आवजो ।।7।।
गुरुदेव मुज मन मंदिरे, पारस बनी बेसी गयां,
गुरुदेव मुज मन मंदिरे, आरस बनी छाइ गयां,
गुरुदेव तुज गुण राज्यनो, वारस मने य बनावजो,
तुज भक्तिथी मुक्ति मळे, आशिष एवा आपजो ।।8।।

आपे बताव्या मार्गथी, मन मारुं जरीये ना फरे,
भाग्ये मळ्या गुरु आप मुज, मन क्यांय बीजे ना ठरे,
करुं विनति भवोभव हवे, गुरु एक आप ज मुज थजो,
मुज हाथ झाली साथ तुम, मुक्तिपुरीए लइ जजो ।।9।।
भवसागरे भमतां गुरु, महाभाग्यथी अमने मळ्यां,
मानुं हवे भवोभव तणां, फेरा अमारा दूर टळ्यां,
दर्शन गुरुवर देजो जल्दी, ए ज एक ज प्रार्थना,
प्रगटावो मुज मन 'मुक्तिकिरण' एज एक अभ्यर्थना ।।10।।

## गुरु भक्ति गीत

ओ ! रामचंद्र सूरीश्वर ! शासननो तुं सेनानी !
सैनिक अमे सहु तारा, नमीये तने सेनानी,
शासननी सामे आव्या, विघ्नो तोफानो ज्यारे,
जेहाद जगवी ते तो, विघ्नो शमाव्या त्यारे,
तारीज हती ए हिंमत शासनमां जेनी किंमत...सैनिक०... ।।1।।
दीक्षा विरोधे ज्यारे, भीषण स्वरुप धर्युं तुं,
दीक्षाना पक्षे रही तें, जगने उभुं कर्युं तुं,
जोयो तुं सामे पूरे, चाल्यो जनार एक ज...सैनिक०... ।।2।।
पत्थर पण बनता पाणी, एवी हती तुज वाणी,
शासननी खातर तें तो, कीधी जीवन कुरबानी,
जेवों तुं तेवी तारा, भक्तोनी जयजवानी...सैनिक०... ।।3।।
जीवनमां एवा आव्यां, केई महातोफानो,
क्यांये पड्यो न पाछो, हो मान के अपमानो,
समभाव तारो न्यारो, केवो अजब गजबनो...सैनिक०... ।।4।।
अंतिम चोमासुं तें तो सारबमतीए कीधुं,
मृत्यु समाधि साधी, मंगल प्रयाण कीधुं,
छोडी गयो तुं अमने, सहेवो रह्यो विरहे...सैनिक०... ।।5।।

बे हजार सुडतालीसनी, चौदस अषाढ वदनी,
कोने खबर हती आ, घडीओ गुरु गमननी,
छोडी गयो भले तुं, अमे याद करीशुं तुजने...सैनिक०... ।।6।।
शासननां आ इतिहासे, तुज नाम अमर रही जाशे,
कीर्तिना कदी भूंसाशे, ज्यां त्यां बधे गवाशे,
पळ पळ समरु हुं तुजने, आशिष देजे मुजने...सैनिक०... ।।7।।
वेठुं विरह हुं आजे, तुं स्वर्गमां बिराजे,
स्वीकारजोने भावे, वंदन करुं छुं आजे,
मागुं छुं 'मुक्तिकिरण' भमवुं हवे ना भव वन...सैनिक०... ।।8।।

## पंन्यासजी श्री भद्रंकरविजयजी गुरु गुण स्तुति

पंचासरा प्रभु पार्श्व से, शोभित बना पाठण नगर,
जिन चैत्योपासक हाला, भाईके कुल में परम,
माँ चुनिबाई की कुक्षी से, लिया पुण्य पुरुष ने जनम,
*पंन्यासजी महाराज, भद्रंकर गुरु को वंदना...* ।।1।।
आजानुबाहु शरीर ऊंचा, कूर्म सम थे पदकमल,
वो चन्द्रसम तेजस वदन, करुणा भरे निर्मल नयन,
सुकुमाल पाणीपाद मीठी, वाणी व सात्विक जीवन.. *पंन्यासजी*.....।।2।।
करने प्रभु की सेवना, भगवान दास बने थे जो,
स्व-पर जीवन उद्धार करने, भद्रंकर बने थे जो,
महामंत्र की कर साधना, नवकारमय बने थे जो.. *पंन्यासजी*.....।।3।।
गुरु राम की वैराग्य वाणी, के अमी जल पान से,
उनको लिखे, किया प्रकाशन, जैन प्रवचन नाम से,
जीवन क्रिया अर्पण गुरु को, संग सब के त्याग से.. *पंन्यासजी*.....।।4।।
नवकार जिनके हृदय में, नवकार जिनके स्मरण में,
नवकार जिनके मनन में, नवकार जिनके जीवन में,
नवकार जिनके श्वास में, नवकार जिनके प्राण में.. *पंन्यासजी*.....।।5।।

वात्सल्य का सागर जिनके, नयनो में से छलकतां,
सभी जीव शासन रसी, करने की मन में भावना,
जिन भक्ति व जीव मैत्री से, मोक्ष साधना लक्ष्य था..*पंन्यासजी*.....।।6।।
जैन संघ को दी त्रिपदी, मोक्ष साधना मार्ग में,
नवकार जप, आयंबिल तप, हो ब्रह्मचर्य जीवन में,
पायी समाधि स्वस्थता, इस साधना से अंत में..*पंन्यासजी*..... ।।7।।
जैन जगत में नवकार मंत्र, कीर्ति को फैला गए,
वैमनस्य भरे हृदय में, जो मैत्री भाव जगा गए,
साधी समाधि अंत में, अध्यात्म दीप जला गए..*पंन्यासजी*..... ।।8।।
स्वर्गस्थ ओ गुरुदेव तुम, मुक्ति वधु जल्दी वरो,
हम वैर झेर की आग पर, मैत्री की वर्षा करो,
''श्री रत्नसेन शिशु' मांगता, सद्गुण का भंडार दो,
*पंन्यासजी महाराज, भद्रंकर गुरु को वंदना*..... ।।9।।

## गुरु गुण स्तुति

(राग : मंदिर छो मुक्ति तणा...)

गुर्जर भूमिनी धन्यधरा जिन, मंदिरोथी शोभती,
अणहिलपुर पाटणपुरी पण, भव्य चैत्योथी ओपती,
पंचासरा ने पार्श्वशामळिया प्रभु ज्यां बिराजता,
पट्टणपुरी शणगार भद्रंकर गुरुने वंदना ।।1।।
जिन चैत्योपासक श्रेष्ठि हालाभाई केरा कुलमां,
तस गृह लक्ष्मी चुनीबाई उदरे सुत अवतर्या,
ओगणीस ओगणसाठ मागशर सुद त्रीजे जनमिया,
पट्टणपुरी शणगार भद्रंकर गुरुने वंदना ।।2।।
भगवान नाम सार्थक करी यौवन वयने पामता,
गुरु प्रेम-राम वाणी सुणी वैरागे आतम रंगता,
सूरिदानना करकमलथी संयम मार्ग स्वीकारता,
पट्टणपुरी शणगार भद्रंकर गुरुने वंदना ।।3।।

भगवान नाम त्यजी हवे मुनि भद्रंकर थया,
संयम केरी साधनामां, जे सदा तत्पर बन्या,
नवकार मैत्री भावना जेओ पमर साधक बन्या,
पट्टणपुरी शणगार भद्रंकर गुरुने वंदना ।।4।।
जेनी रगे रगमां वहेतुं, गान मैत्री भावनुं,
जेनी रगे रगमां थतुं, गुंजन श्री नवकारनुं,
जे भावता सवि जीव करुं, शासन रसीनी भावना,
पट्टणपुरी शणगार भद्रंकर गुरुने वंदना ।।5।।
रममाण करता ज्ञान योगने ध्यान योगमां जे सदा,
जागृत हता समता-समाधि भावमां जेओ सदा,
संसारना सविभावथी जेओ अलिप्त मना सदा,
पट्टणपुरी शणगार भद्रंकर गुरुने वंदना ।।6।।
दूर दूरथी जेना दरिशन काजे भक्तो आवता,
पामी दरिशन नमन करी निज अंगे आनंद पामता,
अमृत समा वचनो सुणी, निज जीवन धन्य बनावता,
पट्टणपुरी शणगार भद्रंकर गुरुने वंदना ।।7।।
जैन धर्म केरी कीरतिने, दिगंत मां प्रसरावता,
पंन्यासजी महाराजना नामे सदा जे दीपता,
वंदन करुं चरणोमां गुरुवर पामवा शुभभावना,
पट्टणपुरी शणगार भद्रंकर गुरुने वंदना ।।8।।
संवत बे हजार छत्रीश, सुदी वैशाख चतुर्दशी,
निज वतन पट्टणपुरी मुकामे, छेल्ली आराधना करी,
रडतां मुकी सहुने गया, गुरु देवतानां लोकमां,
पट्टणपुरी शणगार भद्रंकर गुरुने वंदना ।।9।।

## गुरु भक्ति गीत

अमृत सी वाणी थी जिनकी, भद्रंकर था नाम,
ऐसे थे गुणवान गुरुवर, जिनशासन की शान । अंतरा
पाटण शहर में जन्म लिया था, हालाभाई के घर में,
माता-पिता और स्नेहीजनों के, खुशियाँ छाई थी मन में
बचपन से ही प्रभु की भक्ति, जागी उनके तन में,
मंदिर में जा प्रतिदिन करते, जिनवरजी का ध्यान ।
अट्ठाईस वर्ष की आयु में गुरुवर, संयमव्रत को पाले,
त्याग तपस्या संयम में, अपना जीवन रंग डाले ।
ऐसे गुरुवर के चरमों में, अपना शीष झुका ले,
रामचंद्रसूरि गुरुवर इनके, जिनका जग में नाम ।
पुस्तक-विमोचन समारोह पर नर-नारी हैं आए,
'रत्नसेन' गुरुवर के चरणां में ज्ञान के पुष्प चढाए ।
'गेमावत' श्री गुरुवरजी के, गुण की गाथा गाए,
सद्गुरु जिनको मिल जाए वो, हो जाए निहाल ।
ऐसे थे गुणवान गुरुवर जिनशासन की शान ।।

## गुरु भक्ति गीत

(राग : चांदी जैसा रंग है तेरा)

अमृत जैसी वाणी जिनकी, *रत्नसेन गुरु* नाम,
कितने है विद्वान् गुरुवर, जिनशासन की शान,
कितने है विद्वान् गुरुवर, जैन धर्म की शान... अमृत जैसी...

गांव गांव और नगर नगर में, धर्मध्वजा लहराए,
जिनवाणी का पानी पिलाकर, जीवन कुसुम खिलाए,
*रत्नसेन* गुरुवरजी हमारे, जिन पर हमें अभिमान..कितने है विद्वान्...

धन्य दिवस धन्य भाग्य हमारे, अर्जी सुनी हमारी,
चैन्नाइ नगर पधारे गुरुवर, धूम मची हैं भारी,
कितना हैं उपकार आपका, कैसे करे गुणगान... कितने है विद्वान्...
जिन शासन की अमर ज्योति, वो कभी न बुझने पाए,
जीओ हजारो साल गुरुवर, भक्त हृदय यह चाहे,
आप पधारे हम आंगण में, चिंतामणि सामन... कितने है विद्वान्...
बाली नगर गांव में जन्म हुआ था, राणकपूर के पास,
छगनलालजी पिता हैं जिनके, चंपाबाई मात,
चोपडा कुल के हो उजियारे, गुरुवर तुम महान्... कितने है विद्वान्...
यौवन वय में दीक्षा ली थी, बाली गांव मोझार,
*श्री भद्रंकरविजयजी गुरुवर* ने, नैया लगा दी पार,
हिन्दी के साहित्य निर्माता, कुशल प्रवचनकार... कितने है विद्वान्...

प्रवचन प्रभावक परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय **रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.**

द्वारा आलेखित 210 पुस्तकों में से प्राप्य हिन्दी भाषा में जैन धर्म का अमूल्य खजाना

| Sr. No. | पुस्तक का नाम | मूल्य |
|---|---|---|
| **अध्यात्मयोगी पूं.पं.श्री पंन्यासजी म. का साहित्य** | | |
| 1 | बीसवी सदी के महान योगी | 300/- |
| 2. | अजातशत्रु अणगार | 100/- |
| 3. | महान् योगी पुरुष | 85/- |
| 4. | आध्यात्मिक पत्र | 60/- |
| 5. | परम-तत्व की साधना भाग-2 | 150/- |
| 6. | परम-तत्व की साधना भाग-3 | 160/- |
| 7. | आत्म-उत्थान का मार्ग-भाग-1 | 125/- |
| 8. | आत्म-उत्थान का मार्ग-भाग-2 | 175/- |
| 9. | आत्म-उत्थान का मार्ग-भाग-3 | 150/- |
| 10. | मंत्राधिराज प्रवचन सार | 80/- |
| **जैन धर्म का पाठ्यक्रम** | | |
| 1. | पर्युषण अष्टाह्निका प्रवचन | 120/- |
| 2. | कल्पसूत्र के हिन्दी प्रवचन | 240/- |
| 3. | पंच-प्रतिक्रमण (भाग-1) | 100/- |
| 4. | पंच-प्रतिक्रमण (भाग-2) | 100/- |
| 5. | पंच-प्रतिक्रमण (भाग-3) | 125/- |
| 6. | पंच-प्रतिक्रमण (भाग-4) | 135/- |
| 7. | जीव विचार विवेचन | 60/- |
| 8. | नव तत्त्व-विवेचन | 60/- |
| 9. | दंडक सूत्र | 50/- |
| 10. | लघु संग्रहणी (जैन भूगोल) | 100/- |
| 11. | तीन भाष्य (चैत्यवंदन भाष्य, गुरुवंदन व पच्चक्खाण) | 150/- |
| 12. | कर्मग्रंथ-पहला (हिन्दी विवेचन) | 100/- |
| 13. | कर्मग्रंथ-दूसरा-तीसरा (हिन्दी विवेचन) | 70/- |
| 14. | चौथा-कर्मग्रंथ (हिन्दी विवेचन) | 55/- |
| 15. | पाँचवाँ-कर्मग्रंथ | 100/- |
| 16. | छठा-कर्मग्रन्थ | 160/- |
| 17. | आओ संस्कृत सीखें भाग-1 | 100/- |
| 18. | आओ ! प्राकृत सीखें भाग-1 | 125/- |
| 19. | आओ ! प्राकृत सीखें भाग-2 | 85/- |
| 20. | विवेकी बनो | 90/- |

| Sr. No. | पुस्तक का नाम | मूल्य |
|---|---|---|
| **वैराग्य पोषक ग्रंथ** | | |
| 21. | वैराग्य शतक | 80/- |
| 22. | इन्द्रिय पराजय शतक | 50/- |
| 23. | संबोह-सित्तरि | 70/- |
| **जीवन-उपयोगी साहित्य** | | |
| 24. | शांत सुधारस-हिन्दी विवेचना-भाग-1-2 | 140/- |
| 25. | जैन-महाभारत | 130/- |
| 26. | श्रावक जीवन दर्शन | 250/- |
| 27. | आग और पानी-भाग-1-2 | 115/- |
| 28. | शत्रुंजय यात्रा (तृतीय आवृत्ति) | 40/- |
| 29. | भक्ति से मुक्ति (पांचवी आवृत्ति) | 40/- |
| 30. | प्रतिक्रमण उपयोगी संग्रह | 80/- |
| 31. | प्रभु दर्शन सुख संपदा | 60/- |
| 32. | श्रावक का गुण सौंदर्य | 125/- |
| 33. | सज्झायों का स्वाध्याय | 35/- |
| 34. | प्रेरक-प्रवचन | 80/- |
| 35. | आओ ! उपधान पौषध करें ! | 55/- |
| 36. | विविध-तपमाला | 100/- |
| 37. | विविध-देववंदन | 60/- |
| 38. | Pearls of Preaching | 60/- |
| 39. | अमृत रस का प्याला | 300/- |
| 40. | बारह चक्रवर्ती | 64/- |
| 41. | आओ संस्कृत सीखें भाग-2 | 270/- |
| 42. | संस्मरण | 50/- |
| 43. | Celibacy | 70/- |
| 44. | Panch Pratikraman Sootra | 60/- |
| 45. | रत्न-संदेश-भाग-1 | 150/- |
| 46. | रत्न-संदेश-भाग-2 | 150/- |
| 47. | आओ ! दुर्ध्यान छोड़े !! भाग-2 | 70/- |
| 48. | श्रीपाल-रास और जीवन-चरित्र | 160/- |
| 49. | श्रमण-क्रिया के मुख्य सूत्र | 200/- |
| 50. | मोक्ष-मार्ग के कदम | 120/- |
| 51. | शंका-समाधान (भाग-4) | 60/- |

Shubhay 98338 35899